भा प्रथमा**पृ**चिनी २५०० वस भेट माप मधं क सवाकी के

वदा यत सामदीना र २-८ ०

बीजी सावृत्ति छपाय छे; तेमी किमत 🌣 सर्व रह प्रकाशकने स्वाधिन

> हे० 'जैनहिरेक्क् ऑफिस-ममदामाद AHMEDABAD Printed at the Jagdishwert a

सम्यक्द

^{अथवा} धर्मनो दरवाजोः

प्रकाशक,

. वाडींखाल मोतीलाल शाह

्जैनहितेच्टु' पत्रनो जॉइन्ट एडिटर तथा 'हितशिक्षा', 'मधुमिक्षका', 'सती दमयती अने तेनी वातमायी लेवानी शिखामणो' वि नी कत्ती.

अमदावाद.

श्री श्राचीर्य विनयजन्द्र ज्ञान मण्डार, ज्यपुर
hat right, what true, what fit we justly call,
this be all my care, for this is all—Pope
"जे खर छे, जे सत्य छे, ज्हेने आपणे व्याजवी
ति योग्य कहीए, रहेनी जमात्र हु तो दरकार गर्खाश,
ज्ञारण के रहारे मन रहेमा बधुए छे"—पोप

जीमान सरदारचंदजी संतीवचंदजी जागौर की भोरते सादर मेट,

पुरुषपाट श्री मणीकासंजी महाराज

महारी दक्षिणनी मुसाफरी व भाषश्रीनी दशन धर्ता आपे

स्यक्त विषयमां स्हारी केटलाक दांकाम समाभान करी म्हने ते विषय उपर स्व

केल क्षत्रज्ञा शक्तिमान कर्यों रहेना समरण बा न्हानकई पुस्तक भाषधीने ज सवि।

अर्थेय करवानी रका करे छे अने इच्छे क भापनी तथा भन्य विद्याविसासी म परोनी स्ट्राययी म्हन तेमक सन्य सेखन भाषीय उत्तम भनक पुस्तको प्रसिद्ध व पवित्र केन धर्मनी सवा चजाववामा श

मळो ! शस्तु !

अर्पण पत्रिका

भिद्रोह[.] सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा । अनुग्रहश्र दाने च सतां धर्म सनातन ॥ सर्व मन्य प्राणीयोना अहिक तेमज पारमाधिक हित सार छपायल था लघु पुस्तक थी (दक्षिण) अहमदनगर निवासी धर्मप्रिय, वारव्रतधारी, ज्ञानवैराग्यना शोखीन शेठ चांदमलजी लखमीचंदजी वोरा तरफथा सदुपयाग माटे " कियाधी, विचारथी के वाणीथी कोइ पण प्राणीनुं बुरु करबुनाहे, चिंतचबुनहि के बोलबुं नहि, उपकार करवो अने दान देवु ए ज सज्जनोनो सनातन धर्म छे."

अनुक्रमणिका.

मकरण उपोद्घात १ मवेशक বৃষ্ট

₹01

२१८

२२४-२३२

-		
₹	गुरू	25
8	सम्मक्तमः (समकितः) रहेनी	
	स्याच्या अने भेद	3.5
В	पश्चीस इप्ति' (पश्चीस बोस्त)	84
4	सञ्चलका ६७ कोछ	63
•	देव तथा धर्म	१३७

७ मिण्यारक शहेनी व्याच्या असे मेह १६२

द भोताना प्रकार

९ सम्यक्त्यको क्रियस्ता

काहेर खपरा



उपोद्घात.

826 👁 958

Knock, and it shall be opened ınto you" अर्थात् ' ठेलो एटले दरवाजो त-नारा माटे खुलशे ' ए बाइबलनु वाक्य साचु छे. बाईबल बनावनार मनुष्य बाईबल बन्यु ते जमा-नाना माणसे। करता 'ठेळवा' मा वधारे खतीले। होवा जोइए, परन्तु धर्मना द्वार पोतानी अपूर्ण शक्तिवंडे ठेलता व्हेंने वराबर आवडया नहि, तेमज द्वार तद्दन खुल्ला थाय त्या सूधी ठेल्या करवानी ते धारन राखी शक्यो नहिः नहि तो अमेरिका

उपोप्चात खड# वेता जबरा पुद्गळसमुद्दने ते 🖷 न गक्या एम बनन नहि पाच दस बन देखवाथी वे बारणां बच्चे करा बगा गई में

त्हेमाथी ने काई अपूर्ण श्रूप नायुं होने हैं। 'सलसर्व' मधवा 'धर्म' तरीक मानी स्त्रेत्रं करान मन प्राणना रचनारामी पण मस

<

बत एवी व रीते द्वार ठलवामा प्रक्निशीह यपेला + जीस्ती मान्यता देवी 🕽 के-प्रमुए वातानी उत्पन कोसी बुनियान वाताना हुकम विरुद्ध भूद बती बीई जबरी रेस (पूर) बेंड खेनी प्रस्त पार्ची

एमाओं नाभा अने खेना ३ पुत्रीन द्वम बंबाध्या स्ट्रेमाना श्रीम एके एक्षीआ लड वसायो। ह्रीम एने आफ्रिका अब अवेग्य एने यूगोप समान्यी

" पाइरीओं भौगीरकानी हवाती जानता व नहेला-तेची अमेरिका मार एक स्थापनार खेमण सरमो afe' - vetta gere M. D., L. L. D.

्राण त्हेमनी शक्ति अने खतना प्रमाणमा तेओ ्रारणा पाछळनुं सत्य अमुक अमुक अंगे ज ्रोवा पाम्या.

मनुष्यने कापी खानारा, ते स्थितिथी आगळ वालीए तो माटीथी शरीर शणगारनारा, तेथी आ-_{अह}ाळ चालीए तो परोणानी वरदास माटे पत्नीने हेनी शय्यामा मोकली खुश यनारा, वळी आगळ, डाखला अन डरामणी पोकोथी देवने प्रसन क-रनारा; वळी, दयामय देवने हिंसाथी पामवा मथ-नारा अने छेत्रटे खुशाकीना चिन्ह तरीके घेटु वधेरनारा एम सर्व जूदी जूदी मान्यताना लोकोए बारणा ठेलेला तो खरा, पण पोतपोतानी शक्ति अने खतना प्रमाणमा त्हेमने ए प्रमाणे जणायु-अने एने ज तेओ 'सत्यर्सर्व' अथवा 'धर्म' मानवा लाग्या.

ठेलवामा अपूर्ण फतेह पामेला असद्य प्राणीओ

न गरुवा एम सत्तन नोहे पाच दस बला ठेप्प्यापी वे बारणा बच्चे क्या जगा घर्ड अने रहेमापी न कार्ड अपूज खेले बाधु रहेन देणे 'शरप्पर्य' सपना 'धर्म' तरीक सामा कीर्य

खड# जेबा जबरा पुर्वाछममुहन शे जाई,

कुरान अन पुराणना रचनाराओ पण अल-बत पनी क रीते द्वार ठकवामी प्रयन्तरीक ययेका, क कीस्ती मान्यता ऐशे के के-प्रमुए पीतानी उत्तर कोसी युनियारे पेताला दुद्धम विस्तू चय

यती बीई जबनी कि (पूर) के सेवी प्रक्षम क्यों एमाकी भीना अने स्वेना १ पुत्राव स्वेम बचाव्या. देमाना अन एके एसीआ स्वर बसाव्यों हैंस एके आफिसा अन नेदन्त एक स्टोप बसावी

"परिकास अमेरिकानी इयानी जावता ज नहोता तेपी अमेरिका माटे एक स्वापनार श्रीमचे सक्सी निक्---ज्ञान हवर M. D., L. L. D. पण रहेमनी शक्ति अने खतना प्रमाणमा तेओं बारणा पाछळनुं सत्य अमुक्त अमुक्त अशे ज जीवा पाम्या.

मन्ष्यने कापी खानारा, ते स्थितिथी आगळ चालीए तो माटीयी शरीर शणगारनारा, तेयी आ-गळ चालीए तो परोणानी वरदास माटे पत्नीने हिनी शय्यामा मोकली खुश यनारा; वळी आगळ. डाखला अनं डरामणी पोकोथी देवने प्रसन्न क-रनारा: वळी, दयामय देवने हिंसायी पामवा मथ-नारा अने छेत्रटे खुशाकीना चिन्ह तरीके घेटु वधेरनारा एम सर्व जूदी जूदी मान्यताना लोकोए वारणा ठेलेला तो खरा; पण पोतपोतानी जिंक अने खतना प्रमाणमा रहेमने ए प्रमाणे नणाय-अने एने न तेओ 'सत्यर्सव' अथवा 'वर्म' मानवा लाग्या.

ठेलवामा अपूर्ण फतेह पामेला असस्य प्राणीओ

चपोव्चात ŧ٥ क्ष्मे एका पण प्राणीओ यह गया छे~याय छे अने परें, के बेबा ते 'सत्यसर्व' ना बागळन् द्वार है-क्यामा सत्तत प्रयासधी-सपूर्ण खतथी-राक्षसी बोरबी मच्या रहे छे बने बाखरे ए दरकाओं खेमना माटे खरको धई रहे छे एवा फतेहमद पाणी काई एक-वे नथी, हचार -काह मधी पण असस्य के इसा आधर्मनार्चा डे के. ते सकेंप्रश्कसरख़ान जोय छे व्यापणे हाल ने बीनो तुरमदर्शक्षमप्र, दुरमीम मादि उमना साहित्यबढे पण बोई सकता नयी ते

पीनो भापणा पहेंचा ह्यारी बरती टपर वर्ड गयेका ते 'क्रोहमद ठेण्नारामो'ए मोई हती पाणी, शीर्य, हवा लादिना बारिक्स बारिक एरमाणुमी कटळा भीव छे ते सहस्तर्याक्रयत्व बिना तेको मोई सम्या

इता होकापत्र, भागबोट भन नीमां हभारा साहित्य

छता अमेरिकाखड मात्र ४१२ वरस उपर न गी-धायो; परन्तु ते पहेला घणाए वरस अ**गाउ** ते खड अने एवी बीजी बारसो भूमिओ पेला 'फनेहमद ठे-लनाराओं ए जोई हती अने त्हेनी नोंघ करी हती तार अने वराळयत्रनी शोध ता हजी हमणा ज थई छे, परतु त्हेमनी झडपने शरमावी दे एवी झडपथी (आख मीचीने उघाडीए एथी पण योडा वखतमा) तेओ पोताना विचार हजारो गाउ उपर मोकली उत्तर मेळवी शकता *

ए 'फतेहमट ठेलनारा' नी फतेह कया का-रणने आभारी छे, ए एक न्यायप्रिय मगजने उद्-भववा योग्य प्रश्न छे शरीररुपी फानसमा जे आत्मा छे ते खरेखर दीपक ज छे ज्ञान रूप ज छे. परन्तु कर्मरुपी धुमाडीने× लीधे त्हेनु तेज ढकाइ 'आहारक लिख' बहे, × ज्ञानावरणीय कर्मी; १० वपोव्यात

वन्ये एवा पण प्राणीओ यह गया छे—याय छे मने
पत्रे, के बेका स 'सत्यसर्व' ना बागळनु हार ठे
छवामा सस्त् प्रपासर्थी—सपूर्ण खत्यभै—राक्षसी
कोरणी मच्या रहे छे बने बाखरे ए दरवाजा छेमना
माटे खुक्छो यह रहे छे
एवा फड़िस्तद प्राणी कोई एक-से मधी, हजार
—अस्त नथी पण असस्त्र के छता आसर्यनाची छे

के, ते सबेंप एक सरस्तु च कोनु छे ब्यापणे हाक के बीको सुक्सदर्शकपण, दूरबीम स्मादि समदा साहित्यकरे पण बोई शकता नयी ते बीको ब्यापणा पहेंका इकारो वरसी स्वप् यई गयेका ते 'क्तेहम्स्ट टेक्शाराको'ए कोई हती पाणी, नीर्स,

हना आदिया नारिकाम नारिक प्रसाणुमा कटका नान के ते सूक्तदर्शकयत्र बिना तेशा नाई शक्या इता होकापत्र, सामनेट नन नीनां हनारों साहित्य ्छता अमेरिकाखड मात्र ४१२ वरस उपर ज शो-धायो; परन्तु ते पहेला घणाए वरस अगाउ ते खड अने एवी वीजी बारसी भूमिओ पैला 'फतेहमद ठे-लनाराओं ए जोई हती अने त्हेनी नोंघ करी हती तार अने वराळयत्रनी शोध तेा हजी हमणा ज यई ्रेष्ट्रे, परतु त्हेमनी झडपने शरमावी दे एवी झडपथी (आख मीचीने उघाडीए पथी पण योडा वखतमा) तेओ पोताना विचार हजारो गाउ उपर मोकर्ला उत्तर मेळवी शकता*

ण 'फतेहमद ठेलनारा' नी फतेह कया का-रणने आमारी छे, ए एक न्यायप्रिय मगजने उद्-भवना योग्य प्रश्न छे शरीररूपी फानसमा जे आत्मा छे ते खरेखर दीपक ज छे. ज्ञान रूप ज छे. परन्तु कर्मरूपी धुमाडीने× लीधे त्हेनु तेज ढकाइ अ 'आहारक लिध' बढे, × ज्ञानावरणीय कर्मो. गपुँ छ। प्रथम शुमक अने पक्षी शुद्धक कार्योव है, धुमादी दूर करवाथा शीपक आपोआप प्रकारे छ। पद्धा सर्व पदार्थ अने सर्व आव ताद्ध्य देखाय ≡ आवा 'फतेद्दमद ठेलनारा'ओए दरवाबों उ

बहतां के के स्पष्ट कोयुं वहेंगी मींध सापणा द्वायमां काबे तो आपः) केवा माग्यशार्टा! अरे, खेमणे ते

सपाबु पात

ę۶

धनुमह की वो पण छ 'झाननो द्राजों' केम खोलनो वहने माटे तेलों कुचालों मूकता गया छे। एटलुक नहि पण दरवालों खुकतां सु सु नकरे पढ़तें ते वण तेलों नीधता गया छे, के लेकी योडु लो बादी तेले वपुण स्टीके खाएंगे गानी न बेसार

आपण माटे इवे एटलु न करनानु रहे छ के, ते इरनाने नह समनु मनं पक्ष सूचन्या प्रमाणे संतर्गा,

दरबाको ठेल्पा करवो * श्रुम कार्यो एटसे पुष्पना कार्यो अने सुत्र कार्यो एटडे अर्मना कार्यो श्रुपि ए श्रुवाद प्राचीद हे

वाचक स्वाभाविक रीते ए महाजनोना नाम पूछवा इन्छा करशे; परन्तु ज्या सर्व महाजनोनी नोंध एक सरखी छ त्या कीनु नाम देवु ? हा, ते सर्वनी नोंधने एक नामधा ओळखाय छे खरी अने जो वाचकने नामनो कहोवाट न होय तो ते नाम 'जैन' छ एने हु तो 'र्च' तरागनोंध' ए नामधी · ओळखावव वधारे पसद करु छु, कारण के ए नोंब राग अथवा पक्षपात वगरनी छे अथवा एवा महा-जनोनी करें छीछे. परन्तु जनसमाज रहेने 'जैनशास्त्र' नामधी ओळखे छे अने वाचनारने कोई अमुक नाम साथे नहि लडी पडता हेतुनी दरकार करवा स्चवी, हु पण आ पुस्तकमा ते वधारे जाणीत नाम वापरता छूट लड्श

ए 'जैनशास्त्र' एम मूचवे छे के, धर्म रुपी सदर महेलमा प्रवेश करवा माटे प्रथम सम्यक्तवनो वरदाना खाळना नोहुए ए द्रावाचेथा न महेरमी प्रदेश थाम छ का बात कोण बज्ज नही गाउँ समदाबादधी मुद्दी बहु होय दहने माउँ हमणा वे सामगादीनी समद वणी सारी छ, तो पण कर्य गामदानी स्त्रीय होशीट कार्णाम ब न बाणातो होंथ

उपोद्घात

88

'सम्प्रक्ष' स्वयक्ष 'ख्य कान'नी सहता वगर प्रमंत्राक्षनो सक्को उपयोग व यवानो 'सम्प्रक्ष' कु एक छे, तेथी उळदुं 'मि

'सम्मक्त' सु तत्व छ, तथा चळ्डु '। प्पाल' सु तत्व छे, दरेक बाबतपर विचार करवाने । भीम ब्रीम केटकी विशाळ छे ' बीतगानीन' केदी पद्मपात बगरनी छे-केबी ब्हेम बगरनी छे- आडवर वगरनी छे, अने जैन सिद्धातो स्त्राश्रय (Self-reliance) शीखवाडनारा केवा उमदा सत्यो छे: ए सर्वनु काइक ज्ञान आ पुस्तक अयइति वाचनारने थशे तो म्हारो प्रयत्न सफळ ययो मानीश.

सम्यक्त्वना सवयमा ने ने विविध विपयोनुं विवेचन आवश्यकीय छे ते ते सर्वनो सक्षेपमा स-मावेश आ पुस्तकमा करेलो नोवामा आवशे, धर्म-ज्ञान आपनारी शाळाओ वाचनमाळा तरीके आ पुस्तकनो उपयोग करशे तो तेथी महद् लाभ थवा साशा रखाय छे.

सनातन जैन मतावलवी मुनीश्री प्रणीलालजी महाराज (लिबडी समुदायना पूज्यश्री पोहनकालजी स्वामीना शिष्यवर्य) एमणे आ पुस्तकमा जे कीमती मदद करी छे ते माटे तेओश्रीनो अतः करणथी आभार मानु छु. तेमज अहमदनगरमा वसता श्रा-

दपाद घात त्युं के प्रथम शुभक्ष असे पृक्षी शुक्क कार्योगडे , धुमाडी दूर करणाया शीवक आयोगाव प्रकाशे छ (पश्ची सर्व पदार्थ अने सर्व माय ताद्रश्य देखाय 💵

ęş

कावा 'पनेहमद ठलनारा'ओए दरबानी उ घडता के जे स्पष्ट कोर्यु खेली मीच आपणा हाचमा आबे तो आएँ। केवा मान्यशास्त्र ! भरे. खेमणे ते

अनुप्रद की थे पण छे 'ज्ञानमी क्रवानी' केम खासवी रहेने माठे तेशी क्षांशी मुकता गया छ। एटसुन नहि पण दरमाना सुखता सु शु नमेरे पडसे ते वण तेमी भाषता गमा 🍪 के नेथी बोद जो :

धायी तेने सपूर्ण सरीके आएंगे मानी न बेसार. मापणे माटे हुने पटल न करवान रहे छ के. वे दरबाने नइ उमनु भन पृष्ठी सुचन्या प्रमाणे खत्या, दरवानो टेस्पॉ करवा

 शुम कार्या एटले पुरवमां कार्यों अने शक्ष कार्यों एरले बमना कार्यो शुँव ए शुक्रतं पन्त्रीय छ

वाचक स्वाभाविक रीते ए महाजनोना नाम पूछवा इच्छा करके; परन्तु ज्यां सर्व महाजनोनी नोंघ एक सरबी छ ला कोन नाम देवु ? हा, ते सर्वनी नोंधने एक नामया ओळखाय छे खरी अने जो वाचकने नामनो कहोवाट न होय तो ते नाम 'जैन' छ एने हुतो 'र्च'तरागनींध' ए नामथी -ओळखावव वधारे पसद करु हु, कारण के ए नोंब राग अथवा पक्षपात वगरनी छे अथवा एवा महा-जनोनी करेडी छे. परन्तु जनसमाज रहेने 'जैनशास्त्र' नामधी ओळखे छे अने वाचनारने कोई अमुक नाम साथे नहि लडी पडता हेतुनी दरकार करवा सूचवी, हु पण आ पुस्तकमा ते वधारे जाणीतु नाम वापरवा छूट लड्श

ए 'जैनशास्त्र' एम सूचवे छे के, धर्म रुपी सुदर महेलमा प्रवेश करवा माटे प्रथम सम्यक्तवनी दरवाणा खालका भोइए ए दरवानेथी न महेकमां प्रवश थाय छ अ वात कोण कबुक सिंह रास्त !, अमदानादथी सुबई कबु होय तहने साने हमणा तो

मागगादौनी सबक घणी सारी छ, तो पण काई

ŧ٧

गामकार्त, रहीस शिकीट आसीस व न बालतो होय तो । बागर १० टकार्म उपर आधीसे बढवाण बहाती गाडी जावतो हुए सहित—बहादी गुबई पहाँचवानी। बादारों—केमा बेटी बाय ते।

माटे घर्मशाक्ष क्यां रख्ने ट्रेस होता छटा 'सम्पन्त' अथवा 'क्या क्रान'नी माहती वगर धर्मशाक्षनी अवळी टपयोग व थवानो

'सम्प्रकार' शु तत्व छे, तेथी चळ्टुं 'मि ध्यात्व' शु तत्व छे, दशेक सावतपर विचार बरवाने

प्तीम प्रीप्र' केटकी विशाळ छ, 'बीतग्रानीय ' केबी पश्चपात बगरमी छे⊸केबी बहेम बगरमी छे⊸ भाडवर वगरनी छे, अने जैन सिद्धातो स्त्राश्रय (Self-reliance) शीखवाडनारा केवां उमदा सत्यो छे: ए सर्वनु काइक ज्ञान आ पुस्तक अवइति वाचनारने यशे तो म्हारो प्रयत्न सफळ यथो मानीश.

सम्यक्त्वना सबधमा जे जे विविध विपयोनुं विवेचन आवश्यकीय छे ते ते सर्वनो सक्षेपमा स-मावेश आ पुस्तकमा करेलो जोवामा आवशे, धर्म-ज्ञान आपनारी शाळाओ वाचनमाळा तरीके आ पुस्तकनो उपयोग करशे तो तेथी महद् लाभ थवा आशा रखाय छे.

सनातन जैन मतावलबी मुनीश्री मणीलालजी महाराज (लिवडी समुदायना पूज्य श्री मोहनळालजी स्वामीना शिष्यवर्य) एमणे आ पुस्तकमा जे कीमती मदद करी छे ते माटे तेओश्रीनो अतः करणथी आभार मानु छु. तेमज अहमदनगरमा वसता श्रा-

उपावृद्यात वक रायचहनीए मारी घणीएक शंकामीना भुर करी व उपकार कर्यों छ ते मूक्सय तेवो स

88

सम्पद्दव सर्वभी म्हारा महराबानने ते क्सेनी प्र ययी पुष्टी मळवाथी न मा पुस्तव नम्म पार्सु

माटे व्हेमने तथा में च पुरतकानी स्हाय केन नावा छे ते पुरुषकोने, वा केस्त्रनी सुवीमी सरो देमाना दानो माटे हु पोताने व बोसमदार शसु कने पुस्तकमा दापो छ ते हो है कागळथी व व

वुक करीश, कारण के रचती तेमच छपायती क्ल नमुक मुधीबतो अने बंधनोधी हैं बेरायका हते. नवीन आवृत्ति योडा व क्खतमां प्रगट करवा मार् प्त ने बसने श्वास वधास स्वतमार सजनानी। **अत करणपूर्वक आ**मार मानीश

जेनहितेच्यु " आफॉसी समस्तासाम् } या मो भार तिभवी नागीर का आरत सादर भट,

सम्यक्त्व.

प्रकरण १ छुं.

प्रवेशक.

(Introductory)

श्री 'भगवतीजी' सूत्र सत्य कहे छे के:—
नस्ता जाइ नस्ता जोणी। नत्तं ठाण नत्त कुछ।
न जायान मुक्वा जय। सक्वे जीव्वावीअणं तसो।।
अर्थः-''एवी कोइ पण जाति रही नथी,
एवी कोइ योनि रही नथी, एवं कोइ स्था-

श्री श्राचीर्यं विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार, जयपुर

(१८) प्रकरण १ छ-प्रवेशका ग न रहतू नथी, एषु कोइ कुळ रहतुं नयी, के च्यां था भीय मन्म्यो-मुबो न होय " भीव ते सब भगाए अनत अनत धार फर्ची से ए फरवामा भगर जन्म-मरणमां ने अ सद्ध बेदना समायकी छे ते, मनुष्य मायाना भावरणयी मूली ज जाय के औं उत्तराध्य यन'माद्वानी महात्मास्पष्ट वोकार करेकेके' जम्म बु'लै जरा बुरूमं । रोगाय मरणाणिय। अहे। दुखो हु संसारो । मध्य किस्सांत मैद्यणो॥ भर्यः-"जन्म द समय छे। मरा(हज्रामस्या) दुःसमय छ। रोग अने गरण पण दुःसमय छे मही! या ससार ज दुः व रूप छे, के जेने

विष जंतुमो रीवाय छे "

काम, क्रोध, मद, मोह, मत्सर, विषय, कषाय अने प्रदृत्तिनी सोवतथी जीव नर्क, निगोद, मनुष्य, तिर्यच, देव आदि स्थिति-ओमां उपर कहेलां जन्म-जरा-मरण अने आधि-व्याधि-उपाधिनां असहा दु स्रों परा-धिनपणे भोगवीने पण अद्यापि वृप्तथतो नथी विचारबुं जोइए के, आ मनुष्य भव ध-णो दुर्रुभ छे; अने मळेली सामग्रीओ फरी फरी हाथ आवती नथी, माटे श्रीवीर प्रभुए गौत्तम ऋषिने आपेलो नीचेनो गुरुमंत्र दरे-क मुमुक्षुजने सावधान पनथी जपवो जोइए:-दुलहेखलुमाणुस्सेभवे ।चिरकालेणव्विसव्वपाणीणं। गाह्वाय विव्वागकम्मुणा।समयगोयममाप्पमायए। अर्थः-"मनुष्य जन्म मळ्वो घणो दुर्रुभ छ; घणा काळे पण सब जीवने से जन्म इसम छे. (भारण के) गाडां (निकाचित्र) कर्मी आ-दां आवे छे माटे इ गीसम ! समय मामनी प्रमाद न करीश " मन्द्रप यह साथे बळी बीजी सामग्रीको मळी छे. तेनो साम अवश्य खेबी जोहए:-मनदर कडी 'मनु-भव " 'आर्थ-शेष" में 'उत्तम कुळ' ", 'करमी तणी स्हेर' 'स्टोबं आवर्त्' प्रमाणीए, 'पांचे इन्द्रि पुरी' मळी, 'दारीर निरोगी' बळी, 'समागम साधु तणो' नेषी शास्त्र सूणीए १ 'मतीति घरम केरी ", 'इच्छा तप-संयमनी' ', एवा ' दश जोगवाह' दुरस्त्रम नाणीप मळयों ने साहित्य सारों, करीए न ते अकारों,

रुदा उपयोग बढे, आतमने तारीण

(२०) मक्रण १ छ-मवेञकः

प्रकरण २ जुं.

गुरु.

किंदि हैं स अनुकुळ जोगवाइमांनी पहेली ७ भि भन किं प्रायः * जन्मधी जमळ छे एटलेएमां (आजन्म-मा तो) आपणो हाथ थोडो ज होय छे परन्तु आठमी जोगवाइ साधुसमागम ते केटलेक अंशे आपणा हाथमां छे; अने नवमी-दसमी

*प्रायः ए शब्दथी समजवुं के लक्ष्मी कोइने ज-नमधी ज मळे छे अने कोइने पाछळथी वेपारादि वहे मळे छे जन्मधी जे सात जोगवाइ मळे छे ते पण अळवत पूर्व जन्मोमा आपणा हाथे ज रळेली छे. (२२) मकरण २ शु-गुक-

नोगमाइ वो आडपीना पेटामां ज माची नापछे एक मसेने भी गौत्तम महावर श्री महा भीर प्रमुने पूछतुं के, "है भगवन्। साधनां स मागम करवाची शं कळ वाव ।" त्यारे ते

ज्ञानी महात्माप जवाब आप्यो ने ---सञ्बर्ण नाणे विनाणे । पश्चकाणेय संनम्भे । अएहनये तने **जेन**। वोदाणे अविश्विम सिद्धि !! अर्थ -"साधुममागमयी 'श्रवण'नो छाभ

मळे: ए थवणधी 'ज्ञान-विज्ञान' एळ याय, हान-विहानमी पापने त्यागबाहप 'परभक्ता-ण' (श्रवास्थान) फर्म थाया तेमांथी शेन्द्रओ

दशायका) रूप करू थाया तेमांबी 'तप' करू

उपर काब गामना रूप 'सयम' फळ थाया ते-मांधी 'अनाश्रव' (भवना नविन पापकर्प अ

थाय (कारण के अना अवी जीवो हळुकर्मी होवाथी तप करवा सहन इच्छे) अने तेथी जूनां कर्मने भस्मीभूत करनारं 'निर्जरा'रूप फळ थाय एम परिणामे 'मोक्षफळ' अथवा सिद्धि मळे"

 साध-समागमनं सार्थक त्यारे ज कहेवाय, के ज्यारे तेमनो उपदेश श्रवण थाय अने ते उपदेशने अमलमां मुकी मोक्षसाधना माटे यथाशक्ति प्रयत्न थाय अहो! आपणे केवा मंदमति छीए-केवा दुर्भागी छीए के, श्री वीतराग देवना अनुयायी मुनीराजो स्थळे स्थळे विहार करी सत्योपदेश करे छे तो पण प्रमाद, छोभ अथवा मोहने छीघे आपणे तेम-नां दर्शननो अने उपदेशश्रवणनो लाभ लइ

(२४) प्रकरण २ जु--गुरू-

शकता नथी । जे बोच क्रानावरणीय, उन्न-नात्ररणीय, मोइनीय अने अतराय ए चारे 'घातीकर्म' सथा चढना आयुष्य, नाम, अने गोत्र ए चारे ' अधातीकर्म ' नो नाम करी मसारसमुद्रश्रमणथी जगारवानी ध-

क्ति भरावेछे वे कोपनी गरज न राखीए वा-आपणे केवा आत्मधाती कडेबाइए ! बगर मार्ग्ये भावती अस्मीने चक्को मारनारा आ पणा जेवा कमअक्रमना कोण होय ?

परन्त दरेक माणसे साध अपना ग्रहने भे पद उपर आठको वनो मक्तियाव राख

पारस्तवामा बुद्धि शापरवी ओइए कारण के

था मोटा पुरुषो भक्षामण करे छे ते पदनी

सास्य सौने सामे अने तेथी, योग्यता न हो

ा छतां, घणाए पुरुषो मात्र द्रव्यना लोभ-शि अगर मानपाननी आशार्थी ए पद धा एण करेछे एवा गुरु पोते ज तरी शकता नथी शो बीजाने श्के तारवाना !

ा वाजान शु तारवाना । याळ भर्युं दुध थोरनु रे, उजळु अधिक प्रमाण, भेसना दुधयी लागे भछरे,पण पीनारना जाय प्राण.? माटे—

'रुपे निव राचिये-एना गुण तणो करीए तपास, 'सदा बुद्धि साचीए—'

हमेश विचार करवों के, गुरु कइ दृत्तिथी उपदेश करें छे-अने एनो उपदेश आपणी रिन्यायबुद्धि—सदसद्विवेकबुद्धि मानी शके तेवों छे के निह १ धर्म के जे मुख माटे कर तामां आवे छे ते कोइ दिवस कोइ पण (ना-

(२६) प्रकरण २ जुं-गुरू-

नामां नाना पण) प्राणीने दुःसी करनार्याः थवो नवी। अने कोइ पण माणीने द स प्राप

एई काम पर्यना नामे उपदेश तेने तमारे की-इ दिवस गुढ़ के साधु मानवी नहि

जेओ अग्रक माणसने हिंसागर्मित उप देश करनार वरीक जाणे छ छवां वेने पूर्ज

छे-माने छे,तेमो घणुल्लह लासचु होबायी म

प्म करे छ गुरु कांड्र मंत्रजंभयी मार्क दारि इ फेडे गारा बैरीने दृश्ती करे, मने छोकरां

आपे, इत्यादि सासच्यी न सोमी सोको हों-गीने बच्ना रहे छे एक अनुमधी कहेंग्रे के:

"गुरु सेमी शिष्य सास्त्र, वानु सेसे दाव "होतु द्रस्या भाषडा, नेठ पध्यस्की नाव 📱

पर्मने कर्मधी जहाे जाणवो बोहर संसा

¥व्यवहारमां नीतिनो उपदेश उत्तम छे, ण वर्मनो उपदेश नीतिथी पण एक डगछुं नागळ वधीने,पुराणां पापोने घोता अने न-ाां पापोने आवतां अटकावता शीखववानो हावो करे छे; तो पछी धर्मने नामे कोइ पण ्रावतुं एवं काम केम ज थइ शके, के जेथी कीइ प्राणीने पीडा थती होय? अने एवो उप-देश करनार माणस कदाच एम कहे के 'ए तो धर्मना माटे करवानुं छे, ' तो शुं धर्मना षिपी पाणीओए तेथी ठगाचुं जोडए ? शुं ते-अो तेने धर्मगुरु कहेशे के व्यवहारगुरु १ वि-द्धारें व्याजवी ज कहयुं छे के:-सत्य नास्ति तपो नास्ति । नास्ति चेन्द्रियनिग्रहः । सर्वभृते दया नास्ति । एते चाण्डाललक्षण ॥

(२८) मकरण २ जुँ-गुरू.
अर्थ -''भेनामां सत्य नथी,तप नथी,हिंदी निम्नह (जिनेन्द्रियपणुं) नथी, माणीमान मेटा ज नहि पण नानामाटा मन-तरफ र या नथी, तु,गुरुनां नहि पण चढाळनां सहस्मान

भी 'स्यगदाग' मुचनां उपदेशक (गुरु) योग्यवाना सर्वधमां कहनु छे के:-'छिम सुर्व अमासच्ये' अर्थात केमणे आश्ववहार (पापन गरनाजां) छेचां छे 'ते घन्मं सुद्धमारूलंति' तेओ म माम शुद्ध पर्मीपदेश करी छक्के छे येदपर्ममां 'अहिसा वरमो धर्मः' ए सुस्य मंत्र छतां ते धर्मना कोइ उपदेशक हिसामिक्स

काम करवा सस्त्रह आपे तो ते 'गुरु' नहिः जैन मर्मना कोइ साधु, 'दया' ने मर्म<u>न</u> मूरु भूनवा छतां दयानो भंग थाय एवो उपदेश करे तो ते पण 'ग्रह्' निंह

शास्त्रमां सद्गुरुना २७ गुण विस्तारथी कहेला छे अने ते सर्व आपणी विवेकबुद्धि कबुल राखे तेवा छे

कबुल राखे तेवा छे ्रस्कान, आंख, जीभ, नाक अने त्वचा ए ृपांच इन्द्रिओना निग्रह रुपी ५ गुण; हिसा-त्र्यट--चोरी--मैथुन अने परिग्रह (धन-मारु आदि) एपांचथी सर्वथा निवर्तवा रुपी 'पांच ्रमहात्रत'ना ५ गुण्; क्रोध-मान-माया**-**छोभ ए चार कषायना निग्रहरूप ४ गुण;मन-वचन अने कायाना योग शुद्ध प्रवर्ताववा रूप ३ गु-ण; भर्ममा दृढता; करणसस (पहिलेहणा);

रोग-परिसहनी साहिष्णुता (शांत मनथी खम-

(१०) मकरण २ श्रं-गुक्त पापणु), मरणबी निहरपणु; हामा; वैराह् चारित्र; दर्शन (समिष्ठा),हान; राशीमोवर्ग स्माग; ए २ ज्युणबाळाने 'सब्गुल' कहेबाप ह

गुद्दनी परीसामां घणी मेमाळ राजवा के बी आ जमानों छे; कारण के 'संसार असी छे ','काळ कोइने सुकनार नधी','पर्म औं हो ते धुसी यहां' पत्ती मास्ताविक कोच सं घम अने गुठकों करे छे अने ए मासावि

राबीने पछी तेने स्वार्धआजना फलाये छै 'तमे देवन रीझबबा यह करते, यूना करत, व रघोटा कहाडो' पयो चपदेश आपी ए रस्न पोतानुं कमीशन मेळबी छै छे परातु ह्या अनोए विधारबातु ए छे के, के देच सुद्धा

बोमधी पोतान् ग्रह्मण्य सामा पासे कन्नल 🦖

मृतथी रीझाय ते देव खुशामत वंघ थतां कोपवानो के वीज़ुं कांइ? अने देवने कांइ फळ आपवानी सत्ता नथी तेमज पापोनो करनार माणस देवनी खुशामतथी शिक्षामांथी छूटी जाय ए शुं वनवा योग्य छे? माटे जे कांइ उप-द्भेश ग्रुरु करे तेतरफपरीक्षकद्दष्टिथी,ग्रुरुना हे-तु अने स्वभावनुं मनन करी तेनी किमत करवी. सोनानी किमत आंकवा माटे कसोटीनो प-ध्थर एक उमदा साधन गणाय छे,तेमज 'नि-र्वेद्य उपदेश अने तदनुसार आचार' ए ज कसोटी वडे गुरुनी किमत थइशके छे *

^{*}राब्द--रुप-रस-गंघ अने फरसना विषयो-मा छुट्य थयेला, घर छोडीने नीकळवा छता अ-

प्रकरण ३ जु

सम्यक्त (समकित)

रा रेजनी पसंदगी पाछक बाटली पंची सं भाक भने सावचेती राखवान कांद्रक मयोज न होड़ जोइए, कारण के,कारण बगर कार्य पासरा-देरा-मठ-मंदीर-मसीद के चर्चना माठी क यह पदनारा स्त्री--पत्र--एनहीने छोडी नीकळ-ना स्तां शिष्य-शिष्यानी सटपरमां रच्यापच्या रहेका, बाहन त्यागवा धर्वा ब्रह्मेषरुपी भदोन्मच हायी उपर महोनिश आरुड यमेखा,एवाने 'गरु तरीके मानवा के नाह प आ उपरथी स्पप्त समनाश

्वनतुं नथी गुरु तरफथी आपणने वेवडो लाभ मळी शके छे. एक तो, तेमनो ८५देश श्रव-ण करवाथी उमटा तत्व समजी वाकीए; अ-ने वीजुं एके, गुरु ए सद्वर्त्तननो जीवतो दा-खलो होवाथी पुस्तको के व्याख्यान करतां ितेमनो चहेरो वधारे सारी असर करी शके तेमनी शांत मुखमुद्रानुं गांभीर्य अने ढळेळी आंखोनो मकाश आपणी आंखो द्वारा आ-पणामां प्रवेश करे छे अने मंधुर रवरव कर-ता रुपेरी झरा जेवो तेमनो वाग्प्रवाह आपणा कान वाटे प्रवेश करे छे तेमज तेमनो शुद्ध 'आचार आपणा मगज द्वारा प्रवेश करेछे खरेखरा-आत्मार्थी-निर्दंभी गुरुनो एवो अलौकिक प्रभाव छे. हवे एवा गुरु पासेथी

(३४) प्रकरण ३ जु-मन्यक्त्य

भाषणे शिलवानुं ग्रं ? श्रं मात्र में। जोहने अ बेसपाधी सार्धक थन्ने ? सारे गुरु पासेथी मेळववानुश्च होइ शक् 'समक्तित' अथवा सम्यकत्न ' सम्यक्

पटले इडा मकारे जाणवापणुं ते एनी सरळ अर्थ पटलो ज के माचाने साथा तरीके ओह ब्लाइं ते (अखबत, एवां सोटाने सोटा त-

रीके बोळलवानी समावेश आपोआप ज या य छ) साचा सोटानं भेने इहा मकारे मा णवापण याय ते तो पछी मनमांबी रागहे

पादिने दश्चनिकाल ज करे; वेची से सर्व प्रा पी रुपर अने सुलदृश्य छपर सममाय-समा

न दृष्टि राख्नेः प कारणधी वन्नी 'सम्पदस्व'

नी भ्यास्या 'समगाव' युण बाह खर्के

धर्मनो पायो ज सभिकत छ पहता भाणी-ने धरनार-झीलनार तेने 'धर्म' कहे छे पण झीलनारमां अमुक जोर (Force) जोइए. एक केरी ज्ञाड उपरथी पडे छे, तेने पाडनार पृथ्वीनुं 'गुद्धत्वाकर्षण ' (Giavitation) भामनुं तत्व छे इवे तमारे ते केरीने झीलवा विचार होय तो ए ' गुक्कत्वाकर्षण 'जेटला-ज जोरवाळो अगर तेथी वधारे जोरवाळो हाथ धरवो पडशे जे कुद्रतमां केरीन पा-डनार 'गुरूत्वाकपण' तत्व रहेलुं छे ते ज क्रदरतमां पाणीमात्रने पाडनार 'पाप' तत्व पण रहेळुं छे कोइ न जाणे तेम ते वन्ने त-त्वो चीजोने अन प्राणीओने नीचे खेंचे छे. . केरीने 'गुरूत्वाकर्षण'नी असरथी वचावना-

(३६) मकरण १ र्गु-सम्बक्त

गतमे छातेम पाणीने पाप 'नाआ क[ी] र्पणधी वधायवा पाटे ' घर्म गछः तमे जेम केरी पर ' गुरूत्वाकर्पण'नी असर न धना

देवा माटे एन्या अ अगर एथी बघारे ओरवा ळो हाय घरो छो: तेम 'घम' पण 'पाप'ना, भाक्पण जेन्छा ज अगर तेथी वधारे जीरने

बार्छ 'समकित' घरे छ आ मगाणे सम्यक्त ए पर्मनी हाथ भ यमा पर्मनो पायो छे श्री ' उचराच्ययन ' सूपमां कड्यं छे केः

मिय गरिश्व समस्तविष्टुणं । देसणे उपद्यव्यं ॥ समस चरिताइ | जुनवं पुथ्वं च सम्मतं ॥ १ ॥

नार्दमाणस्मनाणं नाजेण विका न होति बरणगूणा अगुणिस्म निध मेखो।नधि अमुखस्स निब्बाण॥२॥

अर्थः-'' 'समाकित विना 'चारित्न'(मुनीपणुं तेमज श्रावकपणुं) नथी, 'दर्शन' अथवा 'स-मिकत'ज्यां छे त्यां उभय ('समाकेत' अने 'चा-रित्र' वन्ने)छे 'समकित' अने 'चारित्र'ए वेना युगलमां प्रथम'समाकित'आवे छे 'समकित'वि 'ता'ज्ञान'नथी;'ज्ञान'विना'चारित्र'नथी. अने ए गुण विना 'कर्ममुक्तपणुं' नथी; तेमज कर्म-थी नहि मुकायलाने 'निर्वाण' नथी. '' माटे समकित प्रथम मेळवडुं जोइए सम-कितीनी सुंदरव्याख्या श्री 'उत्तराध्ययन'सू-त्रमां आ प्रमाणे आपी छे:--

तिह्याणंतु भावाणं सभावे उवएसणं। भावेण सदृहं तस्स समत्तं तं वियाहियं॥ अर्थः-'' 'जातिस्मरण' ज्ञाने करी अगर गु- (३८) प्रकरण ३ श्री-सम्पक्त्य

'नवतस्यो ने क जाणे ते समकिती जीय कहिए या च्याख्यामा जाणपूर्व वेयज अह क

वरत एक अधायतुं पुस्तक बहार पृष्ट्ये

भाश्रव (६) संवर (७)निर्चारा (८) बंध भने

(९) मोस आ विषय प्रणो मीड होवाची ए उ

पर श्री 'स्पा में हा म मंडळ' तरफची कोड

मीव (२) अजीव, (३) पुण्य (४) पाप, (५)

मर्व तत्वज्ञाननो संशुण समावेश थाय छ (१)

 नवतत्वमां सर्व जाणपणानो समावेश धाव छे देनां सम्बद्धां शास्त्रो, सर्व विद्या (Scornee),

समाकेतना ० मेद छ।--🤊 द्रष्य समक्रित,२ भाव समक्रित,३ नि 🕥

रणनो शुद्ध भाव बन्नेनो समावेश छ

इना उपवेशे करी अतःकरणना भूभ भानेथी ;

श्चय समिकतः ४.व्यवहार समिकतः ५ निःसर्ग समिकतः ६ उपदेश समिकतः ७ रोचक सम-कितः ८.कारक समिकतः ९ दीपक समिकत

(१) " द्रव्य समाकित ":-श्री वीतराग देव अगर तेमना आज्ञानुसारी मुनीराजनो नोध सांभळी कोइ माणस मात्र श्रध्धाथी— भरोसाथी तेने सत्य माने,परन्तु तेनो परमार्थ समजे निहः; एवा जीवनुं जे समिकत तेने 'द्र-व्य समिकत ' कहेवाय

(२) "भाव समिकत "- जीव-अजी-व' आदि 'नवतत्व', 'काइया' आदि ' पचीस किया' ए विगेरे अनेक भेद जाणी, शुद्ध अं-तःकरणथी सर्दहे ते माणसन्तं समिकत ते 'भाव समिकत' कहेवाय.

(४) मकरण ३ श्रु—सम्बद्धत (३) "निश्चय समक्ति" -ग्रान-दर्शन-षारिध-तपः ए बारने विषे निश्चय-रुपप्रा-

राद्वि २५ बोसन् स्वरूप जाणे तेवा माणस र्नु 'निश्वय समक्रित' समज्ञा आ अम कित आध्या पछी पाठ अर्ध नथी 'इस्य समकित'मां मात्र अवण अने अ:

द्वानी समावेश वाय छे,-वेशी आगम व **पीने 'माब समक्रित'मां तस्वीनं भागपण्ड** करवानो भगविश्व थाय छे: अने तेथी एण भागव बपीने ' निश्वय संवक्तियां जुदी जू

दी रिष्प (from different points of

viow) मत्यनु सिद्दापस्रोकन करवानी समा देश पास छे इरेक बाबत छपर सिंहानस्तो

क्षन करवाने माटे'९५ बोल'अथवा'२५व्हिट'

्छे.एक पडखुं सोनाथी अने बीजुं रूपाथी रसेछं एवी एक पुतळी माटे वे माणसने ययेलो वाद-विवाद जगजोहरछे एकनी दृष्टि सोने रसेला प-डखा तरफ होवाथी ते माणप्त ते पुतळाने सोना नुंज कहेवामां दृढ रह्यो अने वीजानी रूपेरी भाग ुतरफ दृष्टि होवाथी,ते पुतळुं रूपानुं ज छे ए-म नहि माननारने,तेगाळो देवा लाग्यो; पण वन्ने भाग तरफ दृष्टि फेरवनार त्राहित छो-कोने आ कजीओ करनारानी मुर्खता तरफ मात्र हास्य ज आवतुं दुनियामां आटला व-धा धर्मी उभा थया अने धर्मने नामे कजीआ थया ते आ ज कारणने लीधे अमुक धर्मने सर्वोत्तम तरीके मनाववा माटे आ कथन थ-युं छे एम न समजतां,वांचनारे एरछं ज वि-

(४२) मकरण १ मु-सम्बद्ध

चारशं के सांकडी दृष्टियी-अमुक्त एक म दिशा । मां गोंपी राससी राष्ट्रियी जोबायलं ते की संपूर्ण सत्य होइ छके नाह 'केन धर्म' ए नाय बापणे पढीमर बाजुए मुकीए अने व नाम थी ओळबाता पर्मन विश्वणण आएणे साम कीए, हो वण तनी विद्याल दृष्टि आपणने तेने

ना सत्य विषे सर्टिफीकेट रुप यह पढे छे.पू ध्वीनी संपाटीयी कापणे जेम उचा चढीए तेम जाएणे वपारे जोड शकीए छीए। तेमज बचारे विश्वास राष्ट्रियी (एक-ब नहि पण प श्रीस इष्टिमी) जोगायल-विचारायलं सस व

धारे माननीय होइ शके ए कबुल करबुं मु-इकेर नथी पि 'पषीस रहि दे विवेषन

नोया मकरणमां कर्षे छे)

(४) '' व्यवहार समिकत '':-'संवेग'* आदि पांच लक्षणथी प्रवर्तवुं ते 'व्यवहार समिकत 🛂 एक पुस्तकमां छख्युं छ केः— ६७ वोलमांना ६१ वोलना गुणे करी साह-त ' उपसम ' अने 'क्षयोपसम' × समकिती -क्रीवनुं जे समकित ते 'च्यवहार समकित.' (५) '' निःसर्ग समीकत "ः—मुनीमहा-राजना उपदेश विना'जातिस्मरण' शाने क-री नवतत्वादिनुं स्वरूप जाणवामा आवे, ते

'निःसर्ग समिकत '; अथवा, जैन मतने निह *'संवेग' आदि लक्षणो अने '६७ बोल'नो खुलासो ५ मा प्रकरणमा वाचो

× ' उपसम ' अने 'क्षयोपसम' समकितनो खुलासो प्रकरण ९ मामा वाचो. (४४) प्रकरण ३ ज्ञ-सम्यक्त

जाणनारो+ परन्त भद्रिनस्थमात्री मानस सूर्य सन्मुस आतापना छता, वेलेबेले तप क रतां, ज्ञानने आवरण रुप'ज्ञानावरणीय' कर्म-

नी सपीपसम करे त्यारे तेने 'विभग धान' बत्पस्र थाय अने तेथी जीव-अजीवनं स्बद्धप जाणे, तेथी के के भर्मी आरम परिश्

इबाळा छे ते सर्व तरफ बिराग चल्पक थार्य अने मात्र निरारंभी-अपरिवर्षा (केन)धर्मन ज साची माने अने ' विभंगकान'नी हानी

करी 'अवाध ज्ञान 'पामी, 'केव अज्ञान' उपानीत करी अंते मोस पामेः पवा माण मर्चे समकित पर्ण''नि सग समकिव"कोबाय-

* भाषी जैनमतनी उदारमुखि (Liberal

mindedness) सामीन याय छ

- (६) ' उपदेश समिकत '':-गुरु आदिना उपदेश करीने मळेळुं समाकित ते '' उपदेश समाकित'' कहेवाय
- (७) "रोचक समिकत":--श्री वीतराग-ना वचन उपर रुचि राखे, धर्म करवाना म-नोरथ करे पण अंतराय कर्मने लीधे ते मनो-रथ पुरा पाडी शके नहि; तो पण धर्मनी शुद्ध सर्देहणा-परुपणा करे अने लोकाविरुद्ध आचरण न करे, एवा पुरुषनुं समिकत ते "रोचक समिकत" कहेवाय (श्री कृष्ण अने श्रेणिक राजानुं समाकित आ पकारनुं इतुं)
 - " (८) " कारक समिकत ":—" रोचक समिकत "थी एक पगछुं आगळ वधेला जी-वने " कारक समिकत " होय; एटले के

(28) **प्रकरण ३ जु**—सम्ब**क्त** जाणनारो । परन्तु भद्रिकस्थभाषी माणस्

सुर्य सन्मुख आतापना छेतां, बेलेबेसे तप क रतां, ज्ञानन आवरण रुप'ज्ञानावरणीय' कर्म-नी सयोपसम करे त्यारे तेने 'विभंग मान'

स्बद्धप नाणे, तेथी जे ने पर्मी आर्भ परिप्र: इबाळा छे ते सर्व चरफ विराग चत्पन थार्य अने मात्र निरारंगी-अपरिव्रहा (केन)भर्मने ज साची माने अने ' विश्वग्रहान'नी हानी करी 'अवाभे क्वान 'पामी, 'केव∞क्वान'

चत्पम थाय अने तेथी भीव-अजीपर्न

उपानीत करी अंते मोक्ष पामे; एका माण सर्ने समाकित पण''नि सर्ग समाकित''कहेबाय, आधी नेनमतनी उदारगृश्चि (Laberal-

mindedness) सामीत याय छे

ण गुप्ति'* आदि शुद्ध क्रियाओं करे.

'रोचक' समिकती जीव चोथे 'गुणस्था-ने' होय अने 'कारक' समीकती जी^व छट्टे-. सातमे 'गुणस्थाने' होय

(९) ''दीपक समिकत''ः—दीवो वीजा 'र्डंपर मकाज्ञ नाखे पण पोतानी तळे तो अं-धारुंज रहे तेम,'दुर्भवी'+ अने'अभवी' जीवों

^{*} ३ गुप्ति:-मन-वचन-काया ए त्रणने पापथी गोपाववा अधीत् पाप क्रियामा न प्रवक्तीववा ते.

⁺ घणा भव भ्रमण करवा छता पण जेने मोक्ष नथी ते 'अभवी' अने आखरे मुशाबते पण मीक्ष पामे तो खरा एवा जीव ते 'दुर्भवी.' (हथेळी उपर गमे तेटली दवा लगावी तो पण वाल नहिज जगवाना.)

(४६) प्रकरण ६ जु-मम्यक्त्व

"कारक सर्वाकत" वाळो जीव धर्म च् पर रुचि पण राखे अने ते ममाणे धर्म ना परे पण खरो ते जीव पंचसमिति '. • 'भ' " पांच समिति" —(१)द्राप्टिए ब्रोड्ने पाः

खडु ते 'इयाँ सांभे ते (२) विचारी-विचारीने निः र्वय भाषा बोळवी ते ^१ भाषा समिति?, (१) वस्तर पात्रप्रदेक गरना साहित (with caution) देव!-मुक्तवां ते भागाण भे इमच निस्तेवणा सामिति :(४)९(

दोप टाळी निर्देश बाहारकेचे से 'एपणा समिति'

भने (५) वडीनाति—कपुनीति (धादो-पेशाव बादि बहार परठवानी (फ्रेंग्री देवानी) बीजो का इ भीवने को छामना (दुःख) न उपसे एवी रीपें परवन्त्री ते 'ऊषार पासन्त्रण खेळजश्च संघाण परिवा

निर्णया संसिति

ण गुप्ति '* आदि शुद्ध क्रियाओं करे.

'रोचक' समिकती जीव चोथे 'गुणस्था-ने' होय अने 'कारक' समिकती जीव छहे-. सातमे 'गुणस्थाने' होय

(९) ''दीपक समिकत'':—दीवो वीजा डिपर प्रकाश नाखे पण पोतानी तळे तो अं-धारुं ज रहे तेम,'दुर्भवी'+ अने 'अभवी' जीवों

* ३ गुति:-मन-वचन-काया ए त्रणने पापथी गोपाववा अधीत् पाप क्रियामा न प्रवर्त्तीववा तें.

पापया गापाववा अयात् पाप । त्रायामा न प्रवत्ताववा तः ने घणा भव भ्रमण करवा छता पण जेने मोक्ष नथी ते 'अभवी' अने आखरे मुर्शावते पण मीक्ष पामे तो खरा एवा जीव ते 'दुर्भवी.' (हथेळी उपर गमे तेटली दवा छगावों तो पण वाळ नहिन ऊगवाना.)

(४८) मकरण 🎙 _{जुं}-सस्यक्त

अन्यमनोने प्रविधोधी गोसनां साघनी बता

पण पोताने 'गृहीभद्' याम नहि, समम ह

ब्रष्यिक्या करे एण अतर कोठ न रहे; एव प्ररुपत समकित ते "दीपक समकित " ग णाय 🖢 " अमे सी परमेश्वरने स्रोळे बेटेस **छीए"एड्रं** समजनारा सुद जैन वर्गना न केटा छाक साधुका सफेद वसवाळा, पीजा पद्मवाळा तेमन दिखानसमाळा साधुओ-पण 'दीपक समकिती' होय छे

प्रकरण ४ थुं.

पचीस'दृष्टि' ('पचीस बोलं')

The Twenty Five Points Of View.

भी कि कि चीज उपर जेम वधारे दिशामांभी कि कि चीज उपर जेम वधारे दिशामांभी हि ए कि तेम ते चीज वधारे स्पष्ट देखाय;तेम ते चीजनुं वधारे ताहक्य ज्ञानथाय.जैन तत्त्वज्ञान दरेक वावत उपर २५ हछिथी-२५दिशाथी-२५ आंखोथी नजर फेंके छे अने जो दरेक देशना अने दरेक जमानाना महापंडीतोए पण जैन सिद्धांतोने उ-

(१०) मकरण ४ युं-पनीस हीय चम नरीके स्थिकायों तेर्नु कांद्र कारण होय हो ते तेनी पिशाळ हिंद ए छ छ ए 'पचीस हाँद्रे ने जेनो घणुंसरे 'पची स बोक्ष' ए नायथी ओळसे छे पण तेनो ससार्थ 'पचीस हिंदु' ए शब्दची सारो समझ य छे असे ए पचीस संबंधी संसिष्ठ विषेचन

करवामां आवशे, तो पण वारीक समञ्जती

द्धांतो खागु पाडीमे नवां सिद्धांतो(Dedu-

माटे वो कोड़ बिद्वान सायुकी वासेची सांध-क्या दरेक मध्य जीवने अकामण करवामां आवे के कारण के ए 'वर्षास बोके' वर्षे सबंधी तेमक व्यवहार संबधी दरेक बावत चपर कागु वाढी बकाय के अने ए बडे स्य बहारकुत्रक यवाय के स्थितिसाखनां सि ctions) इभा करवा जेवुं आ काम छे;तेथी बुद्धि खीले छे,परिपक्व विचारथी काम थ-वाथी पस्ताचुं पडतुं नथी अने धर्म उपर शुद्ध श्रद्धा आवती जाय छे.

ए 'पचीस दृष्टि' अथवा 'पन्नीस बोल' नीचे प्रमाणे छे:—

(१-२) 'निश्रय' अने 'व्यवहार'.

(३-४) 'द्रव्य' अने 'भाव'.

(५-६) 'विशेष' अने 'अविशेष'ः

(७-८-९-१०)'नाम निक्षेप','स्थाप-ना निक्षेप','द्रव्य निक्षेप'अने'भाव निक्षेप'.

(११-१२-१३-१४)- 'द्रव्य', 'क्षेत्र', 'काळ' अने 'भाव'.

(५२) मकरण ध्रं शुं-पणीस **द**ष्टि (१५-१६-१७-१८)'मसक्ष ममाण,

'अनुमान ममाण', ' सपमा ममाण ' अने 'आगम ममाण'

(१९-२०-२१-२२-२१-२४) 'नैगमनय','संग्रह नय','क्यबहार नय' 'ऋ कुसुम नय','ग्रब्द नय', 'समिश्रह नय' मने

' प्रांम्त नय' प्राचीत,हर्षात सहित, नीचे समजान्या छे (१-२) 'निश्चय' अने 'व्यवहार' निश्चपरी—पुस्तक छ्यावहारी ज्ञाननो

मसार याय अने ते कारणाने छड्ने काना बरणीय' कर्म शृटे. च्यवहारणी—पुस्तक छवायवायां मय स्या एरणे पुष्य-पाप बक्षेती किया छाग दरेक कार्यमां 'व्यवहार' ते यागनो व्यापार छे; माटे श्वभाश्वभ बन्ने क्रिया तो लागेज (श्री 'ठाणांग सूत्र 'मां कहेवा प-माणे). परन्तु केटलांक कार्यमां तो 'नि-श्रय 'थी ज नुकशान होय छे (जेमके चो-री करवामां).

(३-४) ' इच्य' अने ' भाव ' हष्टांतः—'इच्य' वीटी एटले वीटी-

नो आकार मात्र होय ते; 'याव' वीटी एटले आंगळीए पहेरवाना काममां आवे ते.

(५-६) 'विशेष' अने 'अविशेष'.

हर्ष्टांतः—'अविशेष' ज्ञान एटले ममुचय ज्ञान अथवा ज्ञानना कांद्र भेद व-

(५२) प्रकरण ४ शुं-पशीस द्रष्टि

षाच्या सिवाय वाषामारे 'क्रान' काइ ते 'विश्वेष' क्रान पटले क्राननो कोइ म युक्त मेद-पैरामाग कहेवो ते; जमके 'के वळ क्रान' अथवा 'वित्रक्षान' विगेटे.'

(७-८-९-१०) चार 'निसेप' क्षेत्र आ चार 'निसेप' जैन सक्षमं चप पोगी माग मनचे छे पनी नेरसननची निरांटमी जैनकांगों पक ग्राविंप्रमक्ष पेंच

* सिप्=फॅक्ट्रं नि-सिग्=भापदं, आरो पदुं निरोप=आरोपदुं के कथवा आरोहण Act of starbuting or escribing=star bution, फोह चीनमां भीती चीनमो गुण आ

रोपको ते

उभो थयो छे के जे, मुर्तिपुजा के जेमां ाई-सा मुख्यत्वे छे अने धर्म के जेमां जीवदया मुख्यत्वे छे ते वेनो परस्परिवरोध पण-जोवानी दरकार करतो नथी.

ं अत्रे आपणे * 'अरिहंत ' अने 'सूत्र' ए वे शब्द उपर आ चार ' निसेप ' उता ﴿ रीशुं अर्थाव लागु पाढीशुंः—

* दुनियामा नेटली चीज छे तेटली बधी कबुल करवा लता पूजवा योग्य होइ शके न-हि. तेमज 'निक्षेप' चार छे ते चारने पूजेतो ज 'निक्षेप' चार कबुल राख्या एम साबीत थतुं नथी. मूर्तिने माननारा तेमज नहि माननारा ए-'' कंदर जैनो कहे छे के, केटलीक चीजो 'झेय' एटले जाणवा योग्य छे, केटलीक 'द्रपादेय' ए- (५१) अकरण ४ ग्री-पश्रीम ब्राप्टि अरिहंत

१ "नामनिक्षेप":-कोर और

भगर भनीय बस्तुनं 'अरिइंत' एव ना

म आप्तुं होय त्यारे तं जीव अयवा बस्त

' नाम निक्षेप 'ना आघारे ' भरिष्ठत ' क

देशाय भरवाडना छोकरान् नाम 'इन्द्र'

पाढे वो ने छोकरी इन्द्र न होका छवां ना म निक्षेपे 'इड'कदेवाय

रके आदरया योग्य के अने केटबीक ' हेम '

पत्रके समया थीम्य के मारे 'निक्षेप' एक व

महि पण भार छे एम कबुछ राज्ञनार माणमे ⁴ स्पापमा निभेष ने 'उपादेय' तरीके न फबुस

रात्तवो मोइए एथुँ कहनारा माभ पोताने म ठगे है

- २. "स्थापना निक्षेप ":— तेना वे भेद छे: (१) 'सद्भावस्थापना' अने (२) 'असद्भाव स्थापना'
- (१) 'सद्भाव स्थापना' ते ता हिन्य रूप; जेमके फोटोग्राफ, वावहुं इत्या दि. 'अरिहंत 'नी 'सद्भाव स्थापना' सारे ज कहेवाय के जो भगवान देहधारी हता ते वखतनी तेमनी आवेहुय छवी अगर वावहुं बनावी राख्युं होय तो.
 - (२) 'असट्आव स्थापना 'ते १० प्रकारे कराय छे:-चोखा;कोडा-संख-छीप; गंडीने बनावे ते; परोवीने बनावे ते; जोडीने बनावे ते; धींटीने बनावे ते; छीपी-

(५८) मकरण ४ थुं-पर्शास द्वष्टि ने बनावे ते; चीवरीने बनावे ते; काड; कप्टूं; एस ४० मकारे कराय छे 'बारे हैत' मयुनो फोटोग्राफ (छवी) अगर बावर्ड न मळवायीक तेने बहुछे चोला-कोडा-क छोडो जयारे हरकोह युक्तियी गुर्तिने आ

गळ करवा मांगे छे तो पड़ी, जा एक आश्चर्य वाचा छे के, तेओं 'सदमाव स्वापना' छोडी

में के विषयी राजाओं तेने भेटका तस्पी रहा इता नो मृतिपृजा व रच्चे काम होत तो मछी

ने ' ससदमान स्थापना ' केम करे छे । मेर्नु नाम न 'असद्' एटछे 'लोई' तेने महण क रर्ष ए हां विकारकारिक प्रोतेस्य मन्त्रिक स्थापिक

रर्षु ए हो विकारशिक गोमेछा मनुष्य प्राणीते शोगती बात छे ैं भी महीनाधनीतुं शुक्णतुं वावर्षु एषुं तो आवेतुन बनायवामां आल्युं ह

काष्ट-पाषाण आदि वडे आकार मात्र मा-णसने मळतोवनावी तेमां महावीरपणुं आ-नाथ तीर्थंकरनी ए आवेहव मृति केम साचवी न राखवामा आवत ? वळी मात्र अंगुठो जोइने आखा शरीरनी आवेहुव छवी वनावनार कारी-गरो पण हयाती घराववा छता कोइपण तीर्थ-करनी छवी के बावछुं केम न बन्युं ए सम-जातं नथी मगवान तो जाणता हता ज के अ-मारा पाछळ वखत आवो आववानो छै: वळी ते भविष्य काळनुं वर्णन पण करी बतावताः तो द्यं कोंइ समिकती—भक्तिवंत श्रीमंतो ते वखतमा नहोता के जेओ मविप्यना करोड़ो "जीवोना हितार्थे हयात भगवाननी छवीं अने बावला बनावी राखे ? एम थय होत तो आने

(१) मकरण ४ ग्रं-भनीस द्रष्टि रोपे पटले के तेने 'महाबीर' तरीके माने-पूने प ' भारहत 'नो ' असत्भाव स्थाप

मा निसेष १ ⁴ असद्भाव स्वापना 'मां कोहने शुपाह रहाँ

पड़त नहि बळी आ पण विचारका जेवं छे के, 'सद्, मान ' अने ' असदमाव ' स्थापना हे, रूपवंत

बस्तती न होड शके पण कांड भार-ग्रम(ab-

etract)नी होड वारे नहि से भगरानने स्म रवान आवण कहील छील त मगरान कोई प्र क्वीनी कलानगी, वण आहरय आरमा-मानाना

उपरती मेल पुर करी 'निमरुप मी मार्थि ग

रेक्षे भारमान हे तेमा गुण ने भान-वशन

नारिय ते तो अहरय छ। तनी स्पापना सी रीने करी जाराय र----वकाशक

- ३. "द्रव्य निक्षेप".—तेना ५ भेद छे:—
 (१) ' जाणग शरीर द्रव्य '; (२) 'भवीय शरीर द्रव्य '; (३) ' लोकिक द्रव्य ';(४) ' कुमावचनीक द्रव्य ' अने (६) ' लोको-त्तर द्रव्य '
 - (१) 'अरिहंत ' मोक्ष सिधाच्या अने तेमनुं शरीर पहयुं होय ते शरीरने 'जानणग शरीर द्रव्य निक्षेप 'ना आधारे 'अ-रिहंत ' कहे
- (२) ' अरिहंत' प्रभुए दीक्षा लीधी न होय ते वलते एटले के घरवासमां होय सारे 'आ तो अरिहंत थवाना छे' एम वि-चारीने तेमने 'अरिहंत' कहे, ते 'भवीय शरीर द्रव्य निक्षेप' ना आधारे कहां

((६२) मकरण ४ श्र-पशीस इंडि (१) स्रोकने विषे, ग्रमने जीते तेओने पटले बकी-बासदेय-राजा विगेरने सी किक इच्य निशेष'नी श्रीष्ट्रण अर्शत' करें (४) अरिहेत ममुमा ने 'चोमीस न विशय' छे ते ने देवमा न होय एवा हरि इर,प्रका भादि वेवने 'कुपानचनिक हम्में निसेप 'नी दक्षिए ' अरिहत ' कहे (५) कोड मलप्य भीन धर्ममा होगः पण केवळ जान पाम्पो न होय: छवा

पोताने 'अरिकत' क्रोबकाचे ते 'को कोचर द्रव्य अरिक्त' ('गोसाव्य'ना द प्रति) 8 " भाग निक्षेप":-क्रेनव्या गादि सक्ति जे वर्ते के ते 'माव व्यक्तिंत'

सरेलरा अरिडत हो ते मा भने बंदनीक

पण ते ज. वाकी तो 'अरिहंत' नामनो माणस के पथ्यर कोइनुं कल्याण करी शके नहि.

सूत्र.

- १. नाम निक्षेपः—कोइ पण पाणी भवार्यनुं 'सूत्र' एवं नाम.
 - २. स्थापना निक्षेपः—सूत्र तरीके कागळ मुकी तेने सूत्र माने.
- ३. द्रव्य निक्षेपः—लखेलां पानां , Concrete thing)
- , ४.भाव निक्षेप:-सूत्रमांनां तत्वो (वां-चनार जे ग्रहण करे छे ते) (Abstract preachings of the Scriptures)

(१४) नकरण ४ थूं~पचीस द्राष्टि श्री 'अनुयोगद्वार' समर्या कार्य हे के, पहेंसा लण 'निहोप ' 'अवध्यु' (टसे चपयाम बिनाना छे।छेड्डो चोद्यो न मा छाकर्मा उपयोगी अने परमार्थमां साधन रुप छे जेमके 'गुमास्तो ' ए नाम पोका रवायी दुकानमु काम यशे नाई; तेमन ग्र-मास्तो पाते द्वाजर रहे पण काम न करे अगर दुकान घलाववानी शक्ति वेनामां न

भगर दुकान चलावनानी शक्ति वेनामी न होंग दो पर्ण दे नकामी छे गुमास्ता दरी-के करवाना काम जाजनारी अने जाजवा प्रमाणे करनारी गुमास्तो एज कामनी छे गुमास्तानो 'गुज' अथवा 'भाव' के हूं

नाननो ब्रहीबट, ते ज अपयोगी छे देवनी वापनवा पण नेवज समझक्ष सूचना १ ली:—' लोगस्स 'मां जे तीर्थंकरोनां नाम छे ते तीर्थंकरनो ' नाम निक्षेप' न कहेवाय पण ' नाम संज्ञा ' क- हेवाय तीर्थंकरनुं नाम अन्य कोइने आ-पीए सोरे ते ' नाम निक्षेप' कहेवाय.

सूचना २ जी:—खुद तीर्थंकर वी-राजता त्यारे नाम तो हाल छे तेज धरा-वता पण ते 'नाम निक्षेप कहेवाय निहः; 'भाव निक्षेप कहेवाय.

सूचना ३ जीः—' मोहन घर 'मां श्री मछीनाये पोतानुं आवेहुव सुवर्ण वा-वर्छ सुक्युं हतुं, के जेना कारणथी छ रा-जाने ' जाति स्मरण' ज्ञान उपन्युं हतुं;तो (६६) मकरण ४ युं-पणीस दृष्टि पण ए छ समकिती जीनोए वामसाने शं छुं नहि-जो क एक वो वे उपकारी पदा-र्य-कारणयूव पदार्य हतो अने बज्जी वी यकरनी 'छद्भाव स्थापना 'हवी ननी राज खुदीना कारणधी शृह्या इता पज

धा घोरने देखीने बृह्या ह्वा विक कांह्र घोरने तेण बांधो-पुरुषो नहोतो बाटे 'भ गवाननी भूषि देखवाथी भगवान याद आ थे छे, ते कारणबी धूर्ति पुनर्षा लोहरू ' ए दक्षीस तहन पाया बगरनी छे अने स्नाम भविमा माननारा ' धीन शविमा सीन सा

रिसी' कहे छे पण इट्य के मान एकपण रीते वे भीन सारिसी यह चकरी नयी, भ

चुडीने तेमणे पुजी नहाती समुद्रपाळ रा

गवान देहधारी हता ते वखतनी छवी के वावछं होत तो कदाच द्रव्ये 'सारिखी' कही शकात, वळी भगवाननो ज्ञान गुण अने दूर्तिनो जह गुण: ते पण एक 'सा-रिखी' कहेनारे विचारवा जेवुं छे

आ तो धर्ममां आगळ वयवानी तीत्र इं-च्छाने छीधे उन्मार्गे चडी जवा जेबुं धयुं विद्वान अंग्रेज एडिसन' एक सादुं सत्य कहे छे के, "Idolatry may be looked upon as another error arising from mistaken devotion" अर्थात "मूर्तिपूजा ए भक्तिनो अर्थ भूछवाथी यती एक वीजी भूछ गणवी जोडए"

वैराग्य उपजवानुं के ज्ञान थवानुं तो

(६८) मकरण ४ ग्रुं--पचीस द्रव्टिट सयोपसम एपर काचार राख्ने छे चुद महा-**गीर स्वामीना मुख्य शिष्य गौत्तम स्वा**भी जेषा तेमणे मावतीर्थकरनी मक्ति करी हो पण महाबीर स्वामीनी हवाति सुबी हो है-मने 'केवळकान 'न यसु अने देमनो वि योग ए ज गौचम स्वामीने एक हुंका बसव मां 'केवळ झान' अपावनारी यह पटयो सालात बीवराग देव बीराजवा स्यारे वे

तार्य याउ । ' पृत्रको तीव्र मक्तिमान छतां

तातात् वावरागं दव वारावता स्वारं ते मने वांदवा कोइए सप कहादया नहोता भी 'विपाक' सुत्र तथा भी 'यगवती' स समां कहतुं छे के, सुषाबुकुमारे तथा बदा इ रामाए एम भावना भावी के 'मगवं त भी अहीं प्रभारे तो तेमने बांदी हुं कु अने खुद भगवाननां दर्शन थवानां हतां छतां, तेमज पोते लक्ष्मीवान होवा छतां, संघ कींढीने वांदवा गया नहोता, तो पन छी पथ्थरने भगवान मानी लड तेने वांदवा माटे संघ काढीने जबुं एमां शुं भगवाननी आज्ञा होय ? अरेरे ! भष्मग्रहना भ्रमीत आचार्यीए मात्र पेटना कारणे, दुधमांधी पोरा वीणवा जेवुं काम करी, 'स्थापना निक्षेप ' नो अवळो अर्थ छेइ मूर्तिपूजाना अने ते अंगे थतां वीजां अगाणित पापो-मां भोळी दुनियाने केवी दूवावी दीधी छे! अमे दुवेला पाछा उठवा ज न पामे तेटला माटे तेमना उपर कपोळकारीपत ग्रंथोनी केवी त्रासदायक पछेडी ओदादी दीथी

(०) भकरण ४ युं-पनीस द्रप्टि छे! एक परपियन पडीत कहेता के, मारा प क्षमां मारा जेवा माध्र-४वीमा नर आपो वो 'मकाशनुकारण सूर्य नयी' एम दुनि पाने समजावी देवामां मने कांइ मुझ्केडी नयी ! सरे, " सालग विपरीता राहासा मबान्ति " # ब्यारे २-४ प्रहीतो आटसी भविषा फेलावी शके छे त्यारे मसमग्रहना त्तस्यावम भूसवी बाक्ट व्याकृळधयेला

माचार्यो सास्रत शत्त बनाबी दे बडे हु

नियानो शिकार करवामा फतेइ पामे ए *'साकरा' ए शब्दने उस्रटावी वांचीए तो 'राहासा' पाय छे. तेमन 'साहारा' एटळे पंडीत

ननो 'बिपरीता' एटछे आबा फाटेत्यारे 'राहास'

मां शुं आश्चर्य ! परन्तु जेओने अंतर्पक्षु छे तेमने विचार करवा दो अने पापलाइमां ध-केली देनार सामे मानासिक टक्कर लेवा दो.

(83-65-65-68)

'द्रव्य'-'क्षेत्र'-'काळ्' अने 'माव'

कइ रकमनो अमुक पदार्थ छे अथवा कइ जातनुं काम करवानुं छे
ते विचारनुं ते 'द्रव्य'थी विचार कर्यो कहेवायः क्या देशनो पदार्थ छे अगर कया
देशयां अमुक काम करवानुं छे ते विचारनं ते 'क्षेत्र 'थी विचार कर्यों कहेवायः केवा वखतमां बनेली वस्तु छ अगर केवा जमावामां—केवा असंग (оссая віоп) मां

(७२) शकरण १ श्रै-पचीस दृष्टि अमुक काम करवानुं के ते विचारतं ते ' काळ ' वी विचार कवीं कहेबाय; अने व्यमुक्त पस्त व्यवश कार्ययी श लामासाय-श्र परिणाम यहे। ए विचारखं ते 'भाव' नी विधार कर्यों कहेबाय स्पष्टीकरणः---एक गाणस जापानमां कापडनो बेपार करना जना तैयार बया वेणे (१) ब्रध्यथी विचार्च के. कापदमी वे पार केवी करेबाय ! (२) क्षेत्रची विचाय के आपान देशमां कायदना वेपार माटे की होता (field)छे-एपमी केशा छे-सपत केवा छ । (१) 'काळ'ची विचार क्यों के, इपणां बेपार करवायी कशिया

जापाननी संदादना कारणधी कोई सकट

तो नाहे पड ? (४) भावथी विचार कर्यों के आ वेपार एकंदरे छामकारक थाय तेम छे के केम ?

(१५-१६-१७-१८) 'प्रत्यक्ष,' 'अनुमा न,' 'उपमा'अने 'आगम' प्रमाण.

(१) आंखयी रूप जाणबुं,कानथी श-द्र जाणवो, नाकथी वास जाणवी, जी-भथी रस जाणवो. त्वचाथी फरस जाण-वो; ए " प्रत्यक्ष प्रमाण. "; जेमके सूर्यनुं किरण जोइने कहे के सूर्य उग्यो.

(२) अनुमान अथवा कल्पनाथी घा-रवुं ते "अनुमान प्रमाण''. जेमके कोइ पु-रुपने भीतना अंतरे 'चौद पुर्व ' नो अभ्यास करतां सांभळीए ते उपरथे

(७४) प्रकरण ४ यूं-पंपीस द्रष्टि अनुमान करीए के ते अनीराज होगा

जोइए; बरसादनी टंढी हवा अने खास गं

म आवराधी अनुगन करीए के ३६ कांप नी अदरमां क्यांइक बरसाय परे छै। प सर्व "अनुमान प्रमाण"

(१) 'तव्यव समुद्र जेषु छे','पाणी अ युत जेशुं छे', छास तुपं जेवी छे; ए "च पमा भ्रमाण ''

(४) धान्यनां नमाण (शासी) रे 'आ

गम ममाण''; जेमके सुर्य जमीनयी ८०० योजन एचो छे, यरवहाज ५२ 👈 योजन

नो से, जंबुद्वीप काल योगननो छ अहा

द्वीप ४५ साख योजननो छे, सेमा ११२

भद्र अने १३२ सर्थ छे: ए.सर्व ''आगर्म

मयाण. " तेयां पण २ भेद छे:—

' लौकिक आगम प्रमाण ' अने ' लो-कोत्तर आगम प्रमाण ' ' त्रिकोणना त्रण खुणा यळीने वे काटखुणानी वरावर छे " एबुं कहेबुं ते सूमिति शास्त्र के जे छै।किक शा-न्त्र छे तेनुं प्रमाण कहेवाय. "समकित वि-ना मोक्ष नथी "एम कहें हुं ते जैनसूत्रनुं वान्य छे अने जैन स्नुत्रने 'लोकोत्तर शास्त्र कहेवाय छे माटे ए वाक्य " लोकोत्तर आगम प्रमाण '' कहेवाय

(१९-२०-२१-२२-२३-२४-२५₎) सात नय.

१, " नैगम नय ", -- अंशग्राहीपणुं;

'(७६) मकरण ४ थूं-पणीस दृष्टि जेमके -- समद्राष्ट्र शीवने सिद्ध मानवी, अथवा चीदमा गुणस्याने वर्तता सापुर संसारी कदेवों से 'नेगम नव ? नी मान्य-ता बाषानुं काम छे आवक दयाख शेव प सिद्धांत उपरथी, कोइ स्त्रीस्तीमां नरा दया भोइने वेने 'नैगमनप'बाळो माणस आवक करे खगह बणना माहपू, इसी पक ज दार नारुपो देने 'नेगमनय' ना

आपारे कहे के ' छगड़ बच्यु ' ध्वीम री-वे छगड़ बचा हा होना आब्युं होय मार्च पक्त तार कोछा होग तेने ' नैगम नय'

बोसई ते; नेमके --- दश नण सामायिक

बाब्वे कहे के छुनई वर्ष्युं नथी ' २ ''संब्रहनय":- संब्रह—सञ्च्यपरी करता होय तेने 'संग्रहनय' वाळो एक ज सामायिक कहे तेमज, घणा जणाना क् पिया एकटा करी दानशाळा मांडी होय पण 'संग्रहनय' दृष्टिवाळो कहे के एक ज दातार छे.

३ "व्यवहार नय " -- 'नैगम 'अने 'व्यवहार' नयमां भिन्नता एटली ज छे के. कोइ माणस सामायिक करवा घेरथी नी-कळे तेनी पास पथरणुं जोइने 'नैगमनय'नी दृष्टिवाळो कहे के आ सामायिकवाळो पु-रुप छे; अने 'व्यवहारनय नी द्याष्ट्रवा-ळा तो ते माणसने सामायिकना पाठनो उ-च्चार करतां सांभळे त्यारे ज एम कहे वन्ने पाह्य चेष्टा उपरथी ज विचार वांधे छे.

'(७९) मकरण ४ पूं-पपीस द्रष्टि जेमके --- समदाष्ट जीवने सिद्ध मानवी, अथवा श्रीदमा ग्रुणस्थाने पर्वता मापुन संसारी कहेवों ते "नैगम नव ? नी मान्य ता बाम्मलुं काम के आवक दयालु होय प सिद्धांत पुपरवी, कोइ स्वीस्तीमां जरा खया बोहने तेने 'नैगमनय'वाकी माणस आवक करे लुगई मणवा गांडपुं, हमी

आभारे कहे के ' छग**हं ब**ल्यु' एमीम री ते लगहं पणाइ शोबा माध्य होय माप पुक्रज तार ओका होय तेने 'नैगम नम '

एक क वार भारूपो वेने ' नैगमनय' मा

याको कहे के छन्छ। बण्युनगी '

२. "संप्रद्रनय":- सग्रह---समुख्ययधी बोसप्रं तेः जेमको---दश जण शामापिक

(१) इन्द्र ज्यारे सभामां वेठा होच त्यारे, ए गुणने लड़ने, तेने शब्दनयनी दिष्टिवा-को माणस 'इन्द्र' शब्दथी बोलावे; पण ज्यारे इन्द्र शत्रुने जीतवामां होय खारे, ए गुणने लड़ने, 'पुरंदर' शब्दथी बोलावे;तेम-ज बळी इन्द्राणीनी साथे विलासमां होय सारे, ते गुणने लड़ने, 'श्रूचीपति ' शब्द-थी बोलावे शब्दनयवाळानी हाष्टि शब्दार्थ तरफ वधारे होय.

(२) 'समाभेरुह्र'नयनी दिष्टिवाळो याण-स गुण अने लिंग जोइने वात करे. जेमके सादी, अंगवस्त, कपडुं, सादछो ए विगेरे नामएक ज चीजनां छे.पण ते चीजस्तीना काममां आवे छे अने स्त्री नारीजाति अथ-

(७८) मकरण ४ श्र-पणीस अप्टि पण बाह्र चेप्टामां पण ' नेगमनय' राष्टि षाच्य करतां 'क्यवहारनय ' हप्टियामे माणस वषारे खानी करे छे ४ " ऋजुसूत्रनय": —आ शस्टिबाडो

माणस पर्वमान काब्जी ज वात माने

ह्यात -कोइ माणस समायिकमा हीय प ण वेलु मन बेपारमां दोहतु होय वी कर्या भ'नयवाळी एज बलत वात करतां कहेके "अमुक माणम वेपारमा के---वेपारी के"

५ ६ ७" शब्दनय ", "समभिस्

नय"अने"एवसून नय "

ए अण नयशाचा माणस नाम,द्रष्य अने

स्यापना निह्नेपने अवध्यु (अवस्तु) मानछ

(१) इन्द्र ज्यारे सभामां वेठा होय त्यारे, ए गुणने छड़ने, तेने शब्दनयनी दृष्टिवा-को माणस 'इन्द्र' शब्दथी बोलावे; पण ज्यारे इन्द्र शत्रने जीतवामां होय खारे, ए गुणने लइने,'पुरंदर' शब्दथी बोलावे;तेम-ज बळी इन्द्राणीनी साथे विलासमां होय सारे, ते गुणने लइने, 'शुचीपति ' शब्द-थी दोलावे शब्दनयवाळानी दृष्टि शब्दार्थ तरफ वधारे होय.

(२) 'समिस्ह 'नयनी दिष्टवाको याण-स गुण अने िंठग जोइने वात करे. जेमके सादी, अंगवस्त, कपडुं, सादले ए विगेरे नामएक ज चीजनां छे.पण ते चीजस्तीना काममां आवे छे अने स्त्री नारीजाति अथ-

(<) मकरण ४ धुँ--पचीम द्रवि वा स्रीसिंग छे ए कारणधी तेना कपडा ने 'सम्मिरुष्ट्र' नयबाओ ग्राणस 'साही'क है [कारणके साढी पण श्लीकिंग छे] परन मझ के सादछों न कहे (१)'प्रम्वनय'बाळी 'कार्यना उपयोग' वरफ ज इप्टि राखे छे खेमके,दाणा नो सनारो माणस ' छायोशी' ' वेयोसी' 'मणोमी' ए शन्दोने पकडी राखे छे, पन दाया के भानवाने पकडी शसदी नगी; एने तो केटमी पारण यह तेनुंज काम छे **इ**ए ममाणे पचीस बोर्ड' अधवा'हर्द्ट' मा गंभार तत्वतानमां मारामी मृक्ष व इ जना संघन छे। मोटे विद्यासनी मृत्य सूचनती तो ननी आवृत्तिमां सुपारीश

हे. हवे आपणे ए 'पचीस दृष्टि' ' इत्न ' उपर लगाडीशुं.

ज्ञान.

- (१) निश्चय ज्ञान-सम्यक्त्व सहित अंतरंग (अभ्यंतर) भावे यथातथ्य जीवा-द्विकनु'जाणपणुं' ते 'निश्चयज्ञान'.
- (२) व्यवहार ज्ञान-गुण सहित प-डार्थनुं यथातथ्य 'मकाशवुं' ते ' शुद्धभाव व्यवहार ज्ञान'.
- (३)द्रव्य ज्ञान-विना समिकत, शुद्ध सर्देहणा रहित, मिथ्यात्वीनु जे ज्ञान ते 'द्रव्यज्ञान'; तेमज, आ लोकमां कीचिं म-,ळता अर्थे ज्ञान भणवुं ते पण 'द्रव्यज्ञान'.
 - (४)भावज्ञान-जीन आज्ञा अने शुद्ध सदहणा सहित एकांत निर्जराने अर्थे ज्ञान

(८२) प्रकरण ४ श्रुपचीस एडि मण्डु ते 'मान्जान' (५) भविषेष शान-समुख्ये (पास विभाग बनाच्या क्रिमाय) (६) विशेष ज्ञान--ज्ञानना भाग-विमागादिने साम जाणपूर्ण (७) नामनिसेप ज्ञान-सीइ मा^ब सगर पदार्थन 'क्वान पर्ख नाम आपदं है (८) स्थापना निहापे क्रान-क्रीनर्द स्यापना धरवी वे

(९) द्रष्य निर्शेषे श्वान-सर्वे**सां पुर्ता** पानां (९०) मान निर्शय शान-सत्रनुं तत्व है (१०) द्रस्यशान-पड्रस्यक्स्ने प्रधारा

(११) द्रव्यज्ञान-पहद्रध्यश्चे पद्यातः १ चर्मास्त्रदाय २ धपमास्त्रवर्गः ३ आराज्यिकाम् ४ पृष्टगलास्त्रिकाम् ५

बरुप जाणवु तथा परुपशुं ते

(१२) क्षेत्र ज्ञान-सर्व क्षेत्रनुं (अर्थात् चौदराजलोक ''नुं) यथातथ्य स्वरूप ॥णवु ते क्षेत्रज्ञान (एमां भूगोळ-सगोळा-देनो समावेश थाय छे)

(१३) काल ज्ञान—वर्तमान, भृत,भवि
प ए त्रण काल संवंधी ज्ञान [अमुक ऋतुमां अमुक बनाव बने, लडाइना कालमां
अने दुष्कालमां अमुक बनाव बने, भूतकालमां आम बन्युं हतुं माटे भविष्यमा आम
बनने, विगेरे पकारनु ज्ञान]

जीवास्तिकाय, ६ काळद्रव्यः ए 'पवद्रव्य ' Natter, Motion, Attraction थिगेरे स-वैनी समञ्जनी आ पट्टव्यना विस्तारमां आवे।

(८४) मकरण ४ थ्र-पथीस होहे (१४) भाषक्षान-स्तव भाषन् #क्री (१५-१६-१७-१८)मस्यस-अनुमार चपमा अने भागम ममाण ज्ञानना रही पाछळ ससाइ गर्या छ (१९) नैगमनय भगाणे झान-भंशमात्र द्वानने पण द्वान कहे अने पूर्ी साथे यात्र 'नैगमनय' इप्रिकाळा विचार् गानदीआओ. नवनस्य-छकायना देख

एकाद थोकडो पांडे करनार सायुने के दैं। काद अंत्रेमी थोगडी मणनार संसारी^{ते} 'क्षानी कहें थे; कारण के तेजी अल्प. द्विना होदाथी अल्पडानने द्वान माने थें-सजीवना आह - बर्ज, गांड रस फरंट

जीवनो साद 'ठएयोग' यहछे के झान दर्र म चारित्र तथ, यीथ, सुका-वृत्त (२०) संग्रहनय प्रमाणे ज्ञानः— चि प्रकारनुं ज्ञान छ तोपण समुचये एक ज्ञान कहे ते

(२१) व्यवहारनय प्रमाणे ज्ञानः— । ह्या ज्ञान जोइने ज्ञानी कहे ते कोइ डोळ-। ह्या साधु व्याख्यान वांचे तेमां पुराण— हरानना अगुद्ध अने असंबद्ध फकरा तथा ।। टकना रागोटा संभळावे त्यारे 'व्यवहार'-शी दृष्टिवाळी प्रषदा तेने ज्ञानी माने

(२२) ऋजुसूत्रनय प्रमाणे ज्ञान— हान पांच प्रकारनु छे; जे पैकी, छद्गस्थने चार ग्रान हाय परन्तु 'ऋजुसूत्र'नय वाळो माणस, बात करती वखते जे ज्ञान तेनी पासेथी (सांभळे ते एक ज ज्ञान तेनामां छे एम कहे.

(८४) मकरण ४ ध्री-पशीस शीर (१४) मामज्ञान-सर्व मावनुं । अन (१५--१६-१७-१८)भरपस-अनुमार चपमा अने सागम समाण ज्ञाननां हर्ष पाछळ ससाह गर्या छे (१९) नैगमनय मग्राणे हान~ र्वेशमात्र झानने पण झान कहे अने ए ही नावे मात्र 'नैगयनयः हरियाका विचा गानदीयाओ, नवनत्व-छकायना देल है

पकाद बोकको पाठे करनार सामुने के र काद अंग्रेमी घोषडी अपानार संसारिट ज्ञानी कहे छे; कारण के तेजी अराई दिना होषायी अरुपद्वानने बान माने छे अजीवना साव -वर्ण, गय रस फर्स्स

जैविनो भाव 'उपयाग' परक्ष के बान वर्षे न सारित्र तप, धीर्य, मुक्त-बुन्न (२०) संग्रहनय प्रमाणे ज्ञानः— शांच प्रकारनुं ज्ञान छे तोषण समुचये एक त ज्ञान कहे ते

(२१) व्यवहारनय प्रमाणे ज्ञानः—

शाह्य ज्ञान जोइने ज्ञानी कहे ते कोइ डोळशाह्य साधु व्याख्यान वांचे तेमां पुराण—

हिरानना अग्रुद्ध अने असंबद्ध फकरा तथा
शाटकना रागोटा संभळावे त्यारे 'व्यवहार'हेनी दृष्टिवाळी प्रषदा तेने ज्ञानी माने.

्रि (२२) ऋजुसुत्रनय प्रमाणे ज्ञान— त्रज्ञान पांच प्रकारनुं छे; जे पैकी, छद्मस्थने चार हेवान होय परन्तु 'ऋजुसूत्र'नय वाळो माणस, अवात करती वस्तते जे ज्ञान तेनी पासेथी सांभळे ते एक ज ज्ञान तेनामां छे एम कहे.

(८६) प्रकरण ४-थु-पन्धीरा द्राप्टि (२३) अच्छन्नग मनःण द्वान'-सम्बद्धस्य सहित ९ तत्त्व द्वान वे ("४) समीभरक्षनय प्रमाणे द्वान

सम्यक्त्व सहित ज्ञान है य अने परगुण्य

विरक्तपणु इोय तेना अ झानन भा नयनार्व झान माने (- ५) एरन्नुननय मझाणे झान-

केवळ ज्ञानने म जान कहेशय

प्रकरण ५ मुं

सम्यक्तना ६७ बोल.

र्भ हैं रयक्तव मुंचीज छे अने तेना िं ऋऋर्रें भेद केटला छे त विरोधे आपणे जा-र गया हवे आपणे समक्तिती जीवना लक्षण यु, ते ब्रु शु करे छे अने शुं शु नथी करतो, कड कड जातना अस्प दोषो तेने मध्ये झ-र्भुमी रह्या छे, इत्यादि विचार दारीशु चार सदहणा.

Ó

[१] " परमार्थ संस्तव -प्तमिक-

(८८) महरण ५ मु--६७ वीस वी नीव होय ते नवतस्वादिनी परमा (यथावध्य द्वान) जाणवानी अद्यम करे [२] "परमार्थ ब्लातसेवन ":-समिकिवी जीव होय वे परमार्थ जालना प्रस्पनी मेबामकि करे [३] "व्यापमदर्शनवजर्न "े

समिकिनी जीव होय ते समिकित पास्या प जी पहेला अर्थात बमेला (पहवाह) में सोवतची दूर रहे (४) "क्टतरीन वर्जन —सम् किती बीव होय ते बीतराम मार्ग मिवामना

नीमा पार्गोनो (निकट) सहवास घर्मे। अ यात् अन्यपर्भनां भिज्ञांनी-स्यानको भिगेरे

नो विशेष सहवास न राखे *

* दरेक धर्मना लोकोमा आबी एक सा-ची-स्यायवंत सलाहने ताणीखेची, मारीमच-रडी उभ्रो अर्थ लेवानो रीवाज छे। ब्राह्मणी कहे छे के, " एक तरफ भयकर आग्ने होय, योजी तरफ उची दीवाल होया त्रीजी तरफ अदमस्त हाथी आवतो होय अने चोथी तरफ श्रावकनो अपासरो होय तो हाथी के आक्ने-नी दीसा तरफ जबु बहेत्र छे, पण अपास राना पगथीआना स्पर्शथी पगने अपवित्र न करवा. " वीजा धर्मीवाळा कहे छे के, 'असुक धर्मनो उपदेश थतो होय त्या थइने जबुं पहे तो कानमां आंगळी नाखवी ! अने जैनो पण अन्य धर्मों माटे एम ज बोले छे, एटलं ज ं निह एण आवां शास्त्रवचनोने मारी मचर-डी उंघो अर्थ करी तेने पुरावा तरीके रज करे छे। पण मारा समजवा प्रमाणे प पक्षा- (९०) मकरण-८ मु--६७ वास

अण जिंगा

(१) "सुभूषा '--सत दिवसना
पत्ती अक्षरणा जिल्ला स्टेनने ना
एम जलाव छ क, स्वयमना मिन्द्रांती शा
त्वा परो हरको ध्यम निकांत बांब्या
थी उसटो धानान उत्तम धम नगरमो मन्ना

थीं उसरों पाना जलस पम नरदमी मर्गास पक्का पता जाय छे.महान्या साततीगायाय की ' प्य 'मकाम स्तोन' मां कहे छे क'-मन्ये को हारिशास्य प्य ह्या "क्छेत्र पेतु नर्य तापि तोपमी " स्रों है समा में शरिदर शादि देशों आया ने लाई थ्यु पस है सातु ग्रीजारण क

त्रहार ज्ञानाचा आहु पत्र चु सानु शुक्ताराव्य स्त्रहार वा सामाचा आहु प्रकार वाराजा स्त्रीय या स से स्वार खु आ शारायरात साहु सम ज्ञाद हो हो हो है से स्वार खु आ शारायरात साहु सम ज्ञाद की सार स्वार अपे पत्रित करी करी सात सहस्य पर सम्बद्धकार सहस्य साहस्य है सार

. भगव्याने जिम ब.जनर्ना एकि होए, तम सन्,

पटी जाय छ। एटमा गाउँ स्वयर्मना बनुभव वनरना माणपं अत्य वर्षनी सादन न करवी जाण, धने रामानती जीनना पण श्रेणा मेह होबाधी फंटणक लनकिनी चेत्र आके रब-वर्मने जाले छ तोजल तेना पदमार्थ वरावर जानमा न में नेथी अन्य वर्णी गाड महवास न ज करे, फारण के गादा अने लीगा बखतना लागनधी कदाच समीकतनं धको लागे. ण समारने लद्दन सहीसलामत बाजुए रहेवा मृजना राज आ आदेश हो मास तो आधित मत था छै; एछी नो केबळी गम्य आ मुचनामां ण्यलं गर्भन रहे छे के, धर्महान बाळपण-'थी ज अवश्य आपद्य, के जेथी आगळ जता कोइनो सहवास तेना मन उपर खोटी असर करी शके नहि,--प्रकाशक.

(• २) मकरण ५ मूँ -- ६७ बीस मिकती जीवने धर्मीपदेश-शास्त्रवानी सा मजवानी कवि होय

(२) "धर्मसग " -- जुबान-सुदर बद्धर भने सुन्नी पुरुषने एवी म क्रुमारिका तरफ नेको राग होय घटको राग समकिती

शीवने वर्ष विषे(यम आवरवाने विष) होय (३) "वेयावन्य :—समाध्रेती

भीव देव-गुरुनी सेवामकिया वसाद न कर दश विनय समकिती जीव वारिवत, सिद्ध, आचा

र्थ, जपाष्पाय स्वित्र, क कुछ अधना एक

 स्थिवर १ प्रकारता छे~(१) ६ व रवती उपरता साधु ते 'बवास्ववर' (२) , गुरुना शिष्यो, गण अथषा घणा आचार्योना शिष्यो, संघ, साधर्मी∗तथा क्रियावंत ः ए १० नो विनय करे.

विनय चार रीते थायः - वहु भक्ति-भाव वताववाथी,कीर्ति करवाथी,मान देवा-ूथी अने त्रीस प्रकारनी आसातना टाळ्वाथी.

त्रण शुद्धि 👯

समिकती जीव होय ते मन-वचन-काया, ए त्रण योगने शुद्ध प्रवर्तावे.

२० वरसनीदीक्षावाळा साधुते 'प्रव्रज्यास्थिवर'
(३) ठाणागजी समवायांगजी जाणनारा
ते 'सूत्रस्थिवर'

*साधर्मीनो विनय एटले श्रावक,श्रावकनो विनय करे; साधु, साधुनो विनय करे. जरथोस्थी अने सीस्ती धर्ममां पण ए ३ (९२) प्रकरण ५'ग्रुं—६७ योम

' पाच दुपण रहितपणु -(१) "शका":—समन्तित बी

पोतामां ज्ञाननी न्यूनतान सीवे बीवरा बाक्यनो परमार्थे न ममझी खक्के तेथी कां सिद्धांतमां खका साबे निह्ने पण बुद्धि होरोरे अगर समय पुरपोने पूकी धखपरहित बाग

(२) "कृष्ति।" (कृष्ति).—सप् इति सनस्मी' (11 ught) ' गहस्मी' (11 i1) सने कुनस्नी (Deed) द वर्ष इतिसी समजानी छ-सा गास दुगण मतिचार छ मतिचार

मा पांच द्वयम महामनभंग केरलो शार्य य भराषाय छ। यमा महामनभंग केरलो शार्य नधा

किती जीव एम कदी न समजे के अमुक धर्ममा पण देवलोकनी वातो छे अगर च-मत्कार छे माटे ते धर्म पण साचो छे; अगर 'सर्व अर्भ सरखा ' छे एम गोळ-खोळ एक समान गणवानुं काम समिकती जीव न करे. (३) "विचिकित्सा" (विति— गिच्छा):-समकिती जीव धर्मना फलनो संदेह न राखे; जेम के, हुं धर्म तो करुं छुं पण तेनुं फळ मने मळशे के ते उद्यम मात्र निष्फळ ज निवडशे? अगर, अमुक्रुमाणस वणो धर्मी छे छतां महादुः खी छे तो 'ध-र्भेथी सुख मळे छे 'ए वात केम मनाय? एवी रिते समिकती जीव कडी वोले नहि. कारण के आ जीवने एर्वना भवोमां करेलां कमीनां

(९६) प्रकरण ६ मु — ६७ बोत पण सारां-नरसां फळ मोगमवां पट है तो जा भवनां भोगमतां दुःस ते की आ भवनां पर्म इत्यनुं फळ नयी (४) "अन्य नीर्थिक प्रशसां"। (परपायदी प्रशंसा) तमकिशी कीव होय है

(५) अन्य तीर्थिक परिचय " (परपापंडीमयमो) समिति वी तीब होप व कारपन छ के जया तथ तेब पुजार्य मार गुणांण पुरचनी महोसा करकारा पर गुणांण ज हाथ अगर वन अग्यवीर्धिकर्म

अन्यतीथींनां वर्षकार्योमी वर्शता करे निर्ने

यकाड सारा गुज हाय पण द्यानी उत्तर्म गुज क्षेत्र शास्त्रसम् ज वस्तात्रसा उपदृश्याणे न रामा गक्षः स्वतंत्रसम् न हाराधा मण्

अन्यतीर्थिक जनोथी झाझो सहवास

तीर्थिक माणस अलवन प्रशंसा करवा योग्य तो निह ज. 'होरेस' साचुं कहे छे के -"Commend not till a man is thoroughly known A inscil praised you make his faults your own." HORACE.

पाछळ 'कुदर्शनवर्जन' ए वोल आवी गयो तेमां अन्यधर्मना सिद्धांतो-स्थानको वि-गरेना सहवास संबंधी कह्यु अने आ बेलिमां ए सिद्धातोने माननारा अन्यतीर्थिक प्राणी-थीना सहवास संबंधमां कहे छे. एमा अन्यधर्मी सिथे कन्याव्यवहार आदि गाढा सबधमां न जो-डाया मलामण छे.कदाग्रह छोडी विचार कर-नारने आ सलाहनु सत्य आपोधापज समजाहो.

'सापत तेवी असर' ए जगजाहरे कहेवत

(° ८) प्रकरण ५ मु — ६७ बोन करे नीई, अर्थात् लग्नात्त्रे सं पास्त्र भूषण

(१) जैन मार्ग अन पमनी मिक्क का जानार्रिनी मार्च फरे छ माराज्युमना राजा 'श्रोयोनिमीमस' प्र ज्यार फरा' नामना फिलगुक वर न नहवा मार्चम मार्कस्य त्यार व

बहार्या आवन्युं क — Ic i not g t the Dionyan ar i the Dionyan ar प्रश्न सर्वाणन बगुण साथे क्यामी उर्दे पाया छ नश्यो प्रेडीके द्वावानिर्याण सारा स्थापन प्रावही छेण सीजीनों वर्द

सार राज्यामां कायको छे " भीतभी ना पर राजा का अमुक्त माणसमा सोपती का उन का परस हुं कहीश के ते अमुण माणस क्या छः" दिशा आगळ बाउ छ महाविदेह क्षेत्रे) विचरे छे तेमनी भक्ति करें अथात मन-वचनथी तेमना गुणग्राम करें अने कायाथी नमस्कार करें (३) साधु-साध्वी तथा साधमीनी चोग्य अभक्ति करें

अत्रे सहवास ए जाधुनी के लांवा वाल-तनी सोवतना अर्थमां समजवों भ्रभारोजनार अर्थे, सामाने उपदेश करवा अर्थे आदि हेतुने लड़ने अन्यनीर्थिकनो परिचय छेक त्याच्य नथीं, हमेश हेतु तरफ द्राष्ट्र रास्त्रभी, साधु साध्वीने थाहासादि आपे, विरोगे अने

हमेश हेतु तरफ द्राष्ट्र राम्त्रथी.

साधु साध्योने थाहारादि आपे, विगेरे अने वाध्यमी थादका जोडन हपीत थह मानपान, आदरस्तरार आपे भोजनादिथी प्रसन्न करे जाड कामकाज होय तो पूछे अने पोताथी यन तम होय तो ने करी आपे, विगेरे.

(४) घर्मथी अजाण माणीने अने दवर्घनना अनुवायीओने पर्म सममाने प रजज बेटा होय स्वां युक्तियी भर्म सर् बात छेडे अने सीने वर्धरागी पनावे (७)धर्म पायेस्रो माणस धर्मधी इगढ ४१९५६ मा बुध्हाळमां घजाए मुल रता छाकाने सुक्तिपोज नामधी मोझपा कीस्ती छोकोए मबब बापीने पाताना पंश की घातला तथे जो के धर्मना को को⊄ वीवारा कावारीची धर्म छोडमारन वर्व े सरमी स्टायवा करी होत तो तेमनी बगइत नहि अन निराधीत फड़ दे विभवासम जैस सनाधासम र विगर 🗗 सूची नहि स्थपाय स्थां सूची हालना 💐

(समुख्यये) आ पांचमा भूगण ग्रेयरमा । प्रवेग भाराए तम्मा माथेपी उत्तरशे महि भ कसामा क जोमने घर अन्तना मंहार मर्द्

(१००) प्रकरण ५ मुं -- ६७ बोम

प तेने ज्ञान वहे अने जरुर पहे तो द्रव्या-कनी स्हाय दइने धर्ममां स्थिर करे.

तेमने शीरापुरी लवराववा माटे नोकारसी, च्छ, ज्ञाति भोजन आहि करनार जैनो अने यां जरुर न होय त्यां एक उपर चार बीजां हां-अपासरा कराववामां या वरघोडा अने िक्षा प्रसंगमां हजारो रुपीया खर्ववानां मोटाइ पाननारा जैनो, जैन शाशनने कया भूषण'-थी शोभावाय ते जाणता ज नधी, अगर जीव-र्यातु खरं चप ज समजता नधी। उपर कहे बेहा जूटा जूदा रक्ते जे द्रव्य खरचाय छे तेमांथी ५० टका बचावी जटा मूकीए तो पूर्वच वरसमां एवी सारी रकम उभी थाय र्क तेमांची उपर कहेला आश्रमो स्यापी शका-ति य अने 'जैन पुस्तकालयों' विनेरे पण स्थापी (१००) प्रकरण ५ धुँ — ६७ बेस (४) वर्षयी अजाण माणीने अने प इत्सीनना अनुयायीओने धर्म समजावे चां-

रजण बेडा होय त्यां शुक्तिया वर्म सर्वया वात छंडे जन सीने वर्धरागी बनावे (७)पर्म पामेको माणस धर्मयी स्गती। •१९५६ का बच्चाळमा घणाय मुख स

रता क्षेत्रभि मुस्तिफोज नामधी मोळबाठ कास्ती होकाय मन्द मार्थने पाताना पंचर्य कीया इता इक् जो ने धर्मना क्षेत्रकार सीवारा कावाधियां धर्म छोडमारने बच्च सर्वी हास क्षेत्र की होत हो नेमनो मर्व

सरनी रहायदा करी होत हो तेमने सक् बगड़त नहि क्षेत्र तिराधीत फड़, कर्ने विभवासम क्षेत्र कार्याक्षम विशेष क्षा सूची नहिं क्षणाय त्यां सूची हाल्ता क्ले (समुच्छय) का पांचमा भूषय प्राप्ता प्र

त्या नात स्थाप त्या सुधा तारता थैं (समुख्यय) भा पांचमा भूषप श्यारता थैं यवो माराप त-ना माधेची उतरण महि स स जमने घर मन्त्रमा मंहार मरपुर होत्य तेने ज्ञान वढे अने जरुर पहे तो द्रव्या-दिकनी स्हाय दइने धर्ममां स्थिर करे.

छे तेमने शीरापुरी खबराबवा माटे नोकारसी, गच्छ, ज्ञाति भोजन आदि करनार जैनो अने ज्यां जरुरन होय त्यां एक उपर चार बीजां देहां-अपासरा कराववामां या वरघोडा अने दीक्षा प्रसंगमां हजारी रुपीआ खर्चवानां मीटार माननारा जैनो, जैन शाशनने कया भृषण -थी शोभावाय ते जागता ज नधी, अगर जीव-दयानु खरुं रुप ज समजना नथी। उपर कहें ला जुड़ा जुदा रस्ते जे द्रव्य खरचाप छे तेमांथी ५० टका बचाची जुदा मुकीए तो पांच वरसमां एवी सारी रकम उभी थाय के तेमांथी उपर कहेला आश्रमो स्थापी शका-य अने 'जैन पुस्तकालयों' विनेरे पण स्थापी शकाय.—प्रकाशक.

(१०२) प्रकर्ग ६ मु— ६७ मोल

पाच लक्षण दर्भणमां नेम मास्यष्ट जोह सकाम छे, देन समकिती जीवयां 'पांच कशण' स्पष्ट देल य छे (१) शुम (२) सबेग; (३)

निर्मेग; (४) अनुकेषा अने (५) आस्पा (१)"शम" अथवा "उपशम" समकिरी जीव बांत शक ते राखे (काघो

जीते), कोइनुं दुर्क जिनके निह अने आर्द रीद्र ज्यान व्याचे निह (२) "स्विग" —युक्ससनो स्वाच

(५) सिपंध — पुरुषका स्वयाध पुराखुं अने गळबु एवी छे एम समगी पुद् गसीक वस्तुओ उपरची मुख्योभाव (सोह भाव) उतारी, पंक एटले कादवर्गा जन्मेर्सु 'पंकन' ५टले कमळ जेवी रीते क दवधी अने आसपासना जळधी अद्धर रहे छे तेवी रीते दुनियामां हे त्रा छतां अंतरात्मान दुनियाधी दृर राखे कमळ जेम सूर्य तरफ अद्धि राखे तेम ते समिकती जीव मात्र मोक्ष तरफ ज दृष्टि राखे राखे

(३) " निर्वेग ":--पूर्व सुकृत्यथी स-घळी इन्द्रिओं परिपूर्ण पामवा छतां ते इन्द्रिओंने तेमना जुदा जुदा विषयोमां छुट्य न थवा देतां तेमनो निग्रह करी तेमने धर्म-मांगे पवक्तीवे

. (४) "अनुकंपा":-- 'आत्मवत् सर्व भूतानि' एव जाणीने छकायना* जीवो

[#]छकाय -(१) पृथ्वीकाय (माटी−पथ्थर-रत्न∙

(१०४) मकरण ५ में --- ६७ बोस **उपर द्यामाम राखे** (५) "आस्था ":-सपिकती मीप

होय ते राग देवादि र इत देव-गुरु-धर्म ए त्रण तत्व उपर ग्रुव भारमभाषयी श्रद्धा राखे सार थिगेर) (१) अपकाब मध्या पाणा करा परफर्माना पोरा पिगरे जान (३) वे उकाय संघता भनिनमा जात (भनिनमा प्रा

तजपामा बसंस्थाना जीव छे तेनाँ शे पफ एक बाय शीरकोने राजरास जेवडा काया करेता यक काल बाजनना जेन्न दियमी पण समाय नहि। (४) वाउदाव बच्चा मापराना जाय ।) धनश्चानिकाय (फळ-पन्य पंत्रमळ

विगर १ श्रमकायारिका प्रशास करने क्षया जोष परल क जीम धन कायावाळा - पेहाल्य काय ज्ञ-मांकड जबा जाय घटल क लाग-

जाम मने कापायाका 'ते हरित्रय' आवा भगरा तोड बीखी जवा जाय बरमे ह

आउ प्रकारे प्रभावक.

समिकती जीव पोते जे मार्ग सुखी थयो ते मार्ग अन्यजनोने बताववानी पोतानी फरज सबजे ए मार्ग पहेली द्रष्टिए लो-कोन अकारो (अप्रिय) जणाय तो अमुक अमुक युक्तिथी नेमने ते गार्मनो शोख छ-गाडे एवा समिकती जीव जैन वर्षना 'म-आंख-नाक-जीव अने कायाबाळा 'चार-निद्यं जोब, अने मतुष्य-देवता-तिर्यच तथा नारकी प चार प्रकारना 'पचोन्डिय' जीव. ए चारेमां बळी घणा भेद छे. निर्यचमांना केटलाक जळमा चालनारा, केटलाक जमीन पर चालनारा, केटलाक पेटे चालनारा, अने केटलाक भुजथी चालनारा तथा केटलाक पां सयो उद्दनारा होय छे.

(१०६) मकरण ५ मं — ६७ बोल मावक' कहेवाय छे ममाबक ८ मकारना होय छे, जेनाथी के रीवे प्रभाषना धर जन ते रीते करे (१) "प्रवचनी" प्रभावक होव ते पणां सुत्रमिकातनु जाणपणुं करीने जैनमाग श्रीपाचे (२) "धर्मकथी" प्रभावक होव ते उत्तम क्षेत्रियी-मिय स्वर्थी-भथवी म रपुर भर्मकया वहीने लोकोने भर्म पमाहे भन ए रीत जनगारी दीवाबे (3) "वादी ' प्रभावक होय त न्यायपुर शान्त थिते बाट-चषा करीने

जन प्रमनी उत्तमना सर्वमान्य करावे अन

ए ममाण जनमार्ग दीपाय

(४) "ने मितिक" प्रभावक हो-य ते नि मत ज्ञास्त्र जाणे, लिब्ब गेळकी तेनो उपयोग, ज्यारे धर्म उपर धाड पडती होय त्यारे अगर एवा कोइ खास कारणे (अपनाद तरीके) वै नी इच्छा वगर, मानकी तिंनी इ-इच्छा पगर, भद्रवाह स्वामी अने कार्तिक शेठनी माफक, करे अने ए रीते जीन मार्ग दीपावे.

(५) "तपस्त्री" प्रभावक होय ते द्रव्य अगर मान आदिनी इच्छा रहित तप करीने धर्म दीपावे

(६) "विद्यावान" प्रभावक

⁴ होय ते अनेक प्रकारनी विद्याओं∗ भणीने

कोइ कई छेके, विद्या एटले चमत्कारी
 विद्या, देव-देवीने साधवानी विद्या, पूण में

(१०८) प्रकरच ५ धुं — ६७ कोत. नैनवर्स दीवावे (रसायण-यन-स्वाोड -मृतळ-पुस्तर-इतिहास-स्याय-सर्व-का

यदा बिगेरे घीसीने वे कान मैन विद्धां वीनी पुर्दामां सागु पांचे (७) " मासिस्ट जित छड्डेन और मार्गन घोमापे

तेनो समावेश कोचा प्रकास्त करी द्विधेकों हावापी विद्या परके विविध साम व अंध ज मने बचारे परान् के विद्या परले Science पूर्ध कामकारी विद्या नथीं वार्धी तनावने जो जैन निकातीनों देखों मठी प्रकृतों होय तो, ते शुं बचली खमकारी नथीं मा अमानामी विद्या (S. ience) ना अस्थामकी समझ कता ज्यों सुधी जैनो सुवानेन धसहान साध्या (८), "काव्य शक्ति वडे धमेबोधने विविध खुर्वाओवाळी स्वाभाविक रसथी भरपुर कवितामां ग्रंथी धर्म सर्वने प्रियकर वनावे

षड् 'भावना'.

(?) "इदंसम्यक्रवंधमस्यमूलम्" समिकती जीव एम 'भावना' भावे के, "आ सम्यक्तव छे ते धर्मरुषी दृक्षनुं मूळ

पछी विद्यासपन्न (Seientists) नहि बनावे त्यां सुघी जीनवाक्त्योनी सुवीको वराबर समजवामा नहि ज आवे विद्या (Science) ना शत्रु अने मात्र शास्त्रोमा कहेळां गणित गोखवामां ज सर्व विद्यानो समावेश करी मि ध्याभिमानमां तुटी पहता लोको उपर ज्यां

(११०) मर्करण ६ मु -- ६७ बोस छेत" मुळबगर मांड एंगे न नपांधी है तम ज सेंपिक्टिव विना धर्म ए नामनी ज संभव नथी " चेतन ते मीच्छयो नहि भुं थवी वतघार" " सास बिहुणा सेवर्गा, हया पनाशी बादर्ि" (3)"इद सम्यक्तवधर्मस्यदारम् कः समिकिती भीव द्वीय ते एव 'भाषना' माने के, "जा सम्यक्ता छे से भगरूपी

तार ना, ना सन्त्यरत छ य वनवंश द्विय नगरमां पसवानो दरशाओ छे " सुधी मर्च माधार रागी बता दिवामा मा यो गर्यो सुधी धम नधा देना बदमा स्थि ति स्वयादान वन्न्य वेग्रहरी स जायानी

≛र्तागढ

पाटास्तर—घमकर्पा गगरन समाद्वित

(३) "इदं सम्यक्तवं धर्मप्रतिष्ठान्य ":--समिकती जीव एम 'मावना' भावे के, "धर्मरूपी भव्य महेलनो पायो समिकति छे " (मकाननो पायो जैम वधार उंडो अने मजबुत तेम मकान वधारे यजबुत अने निर्भय वने छे)

- (४) "इदं सम्यक्तं धर्मा-धारम्,":-समिकती जीव एम 'भावना' भाव के,"छापहं जेम थाभछाना आधारे रह्य छे तेम धम समिकतना आधारे रह्योछे"
 - (५) "इदं सम्यक्तं घर्मस्य भाजनृष्":- समिकती जीव एम'भावना' भावे के, ''जेम घीनुं भाजन तपेलु तेम

(१९२) मकरण ५ में ---६७ बोस पर्मनुं माजन समक्ति छे ' तपेछा नगर

यी अने समक्रित बगर वर्ग रही न धके

(६) "इद सम्यक्त धर्मस्य नी

भिः"ः—समकिती जीव एम 'भावना मा वे के "भगव्यी रत्नने जाळववाने समकित

रपी भडार सथवा विज्ञोरी (म्कांव) छ "

(१) "आलाप ' -- सम्रक्ति जी-य, बीमा समीकवी जीवने बोसायवानी

भिनय करं; जेमके 'आबो प्रधारी! '

पछे, इत्या दे

(२) "सलाप' —समिकती जी

छ यत्ना (जयणा)

बने विकेषे आदर सहित बोलाये, कुमळक्षेम

- (३) "दान ":—संगेकिती जीवने अल्ल-जळ मुखवास-धन आदिनुं डान आपे. [आ श्रावक श्रावकनी वात छे साधु-साधुने असर साधु-श्रावकने असर श्रावक साधुने जुड़ा प्रकारनुं टान आपे. ज्ञानदान पण दान ज छे]
 - (४) "प्रदान ":-विशेषे यान आपे.
- (५) "वंदन ":—समकिती जीवने चंदन-नमस्कार करे.
- (६) "गुणग्राम":—समाकेती जी-वनी पूठ पाछळ तेनां वखाण करे **

^{*} केटलाक या छ यत्नानी तहनाँ जूदोज अर्थ करे छे. समकिती जीवना सवंधमां ते बोल ने उतारनां मिथ्यात्वीना सवंधमां उन

(११४) मकरण ५ ग्रु—६७ वेस

छ 'आगार' (छ 'र्जीही') समक्रिती जीवे हमेब सङ्घायोनी स

स्ताइ मुन्तव वर्तवाना स्वपी पर्यु जीइए परन्तु कोइ मोइ मसगे तेने पोवानी ज परनी विरुद्ध कोइ काम करवानी जबर पडे छे वे मसेगा

कार कोम करवाना जियर पट छ व मत्या जन तेथे बम्बते केम विचारत व नीचे जनाट्यु छे:— तारे छे; पटले के मिच्यात्वील साचकार, वि दापे सावकार, वाल, सवाल बदल सने गुज प्राप्त म करवां सारा खनका प्रमाणे, धर्म

तार खं, पटळ का जिम्मात्वील आपकार, तुष् हाये आवकार, वाल, प्रवाल क्षत्र कते हुष् प्राप्त न करवाँ प्राप्त समज्ज्ञ्या प्रमाणे, धर्म बुद्धियी निष्पालांके 'आयो, पपारो' प्रम न कर्तर्यु सगर वाल न वेतुं ते धरावर छे पण धर आयेळा हरकोइ सालसन वाळावयो ज नहि सगर हरकोइ सालसन वाळावयो ज नहि सगर हरकोइ स्मेंगा सु विने वाल क रच्चै नहि, प्यां कोइ विकास जैन शास्त्रोतो छ पदी होय क नि

(१) " रायाभियोग ":-राजाना कारणे काइ वखत धर्मावेरुद्ध कार्य करवानी जरुर पडे; एटले के राजाना वळात्कारथी के कायदाथी कांइ करवु पडे अगर राजा संवंधी हरकोइ कारणथी पोतानी मरजी 'विरुद्ध पण अयोग्य कर्त्युं पडे ते करती वख-ते समिकती जीव एम विचारे के, "द्वं जो साधु होत तो मारे आ नापसंद काम करवानी फरज पडत नहिं " आम अयोग्य काम क-रवाथों जो के दोपीत तो थवाय छे पण समिकतनो नाज थतो नथी।

(२) "गणाभियोग":-नात-जात-कु-टुंव आदिना आग्रहथी अगर तेमना कारणे शास्त्र विरुद्ध कार्य करनु पढे तो पण उपर मुजव

् १९६) प्रकरण ५ मुं—६७ बोल च । इस करे का, "जो हु स कार्य नहि कर अ सोको मने पीवाना नेळामांथी व

र १ ५ रुपे तथा मार्च निरंपराधी कटंब र कारे थरीर बळी मारी रागदपनी परि

मा आगत्रे एम विचारी,न छुटक करती , नेम उपर उपरनी चेष्ठा मान करीने

40 9

१ ४) प्रलाभियोग'' अने "देवा

,ग - प्रतेषे बळरान पुरुपना के

(५) " गुरू निग्रह " :—वडील-जन अशीत् माता-पिता-शिक्षक-धर्मीपदे-शक विगरेना कारणथी कांइ अयोग्य क-रतुं पडे तो ते वखते पण उपर मुजव चि-तवे -(हष्टांतः-गोशाली होंगी साधु छे, एम स्पष्ट जाणवा छतां तेने पाटपाटला विगेरे संकडाळ पुत्रे आप्युं ते यात्र पोताना गुरुना तेण गुणग्राम कर्या ते कारणथीज आप्युं हतुं) 🖙 आ छ 'छींही' अथवा 'आगार' छे ते कांइ सर्व समिकती जीव माटे नथी जेओ इडता न राखी शके तेवाने माटे छे धर्म हानी जवा करतां आगार राखीने ते आगा-इनो लाभ लीवा पछी घटीत भाषश्रीत ले ते वधारे सार्ह तेम छतां जे खरा धार्मेष्ठ जीवो छे-शुद्ध सम्यक्तव जेने रगे रगे व्या-

(११८) मकरण ५ में ---६७ बोल पी रहां छे एवा इदरागी जीयो तो गमे

सेवा आपश्चि समये-कसोटी बस्वते पण-षठाभ्या पळता नथी अने कायर मा सम्यक्त्वने तीलगात्र पण खढित करता नथी

जेनाची पनी रहता न रही छके तेमणे आ

मार राखवा छवां-तेनी छाम छेवा छतां हमेलां होंग ता भा रहता तरफ भ राम्बरी

से कमां में पह दर्शन मचतें छे तेमणे

आरद्भान्य विचायुन्धी सन्य अथवा धर्म ज गहसमां छ से महस्तनी दरपासी तेओ

पह स्थानक

पण देक खंडीत करता नथी !

मने बाबना हो एशी भावती के 'घाप छ ते रहपमीभीने, के लेशा आया मसगै

संपूर्ण खाळी शक्या नथी अने जे काइ वे दरवाजा वचेनी थोडी सरखी जगामांथी जोइ शक्या तेने 'सत्यसर्व ' मानी वेठा छे अने तेयी तेमांना कोइ तो मुदल जीवने ज मानता नथी; तेथी वधारे जोवा पामेलाओ जीवने माने छे पण तेने 'निख' मानता नथी, तेथी वधारे जोवा पामेलाओं तेने नित्य मानवा छतां 'कर्पना कर्चा' तरीके स्विकारता नथी;वळी वीजाओ तेने 'कर्मनो भोक्ता' मानता नयी दरवाजा डेलवामां आ चार वर्गे जेटली फतेह मेळवी तेथी वधारे हतेह मेळवनारो पाचमो वर्ग ए चार सत्य जीइ शक्यो पण 'मोक्ष छे' ए वात तेना जोवामां-जाणवामां न आवी अने छटा वर्गे मोक्षने कबुल राखवा छतां सेना

(१२०) प्रकरण ५ मु —६७ पोस 'रस्वा'म सं वर्ग ओइ न शक्यो परन्तु सम्यक्

विचार करनारो समिकती जैन ए छए वावत खुए छे-आणे छे अने समिकतीनी ए छ मान्यवा कारणो आणीने साबीव करीई -(१) आत्मा 'छे '

कोइ प्रा करे के, 'आत्मा छे न नया ! श्ररीर प न आत्मा छे घर-वस-अससा

विगेरे पीजा है तो ते देखाय के पण सरी। तेमम भारमा होय तो देखाय केम नहि ?'' "आत्मा छ न क्यां १ ए मभ पूछ-

नारे विचार है जीए के, जो बात्या नपी ज हो प मझ पूछ्यों म काणे? पर-बल-अ-सकार अ दि चीजोने जाणनार जने उपको मझ पुजनार ए पान ज सात्मा हो सरीर अने आत्मा ए बन्नेनो स्वभाव ज जूदो छे तो ते वे एक पदार्थ केम होइ शके ? शरीर-नो स्वभाव जड छे अने आत्मा चेतन छे-जाणवानो स्वभाव छे शरीर ए ज आ-त्मा होय तो जाडा शरीरमां थोडी बुद्धि अने पातळामां वधारे बुद्धि कदापि केम होइ शके ?

जात्मा अने देह एक लागतानुं कारण मात्र घणा काळनो खोटो महावरो-देहाध्यास छे हमेश दंहना ज विचार थता होवाथी आत्मा अने ते एक मनाइ रह्या छे देहनो अकेक अवयव वीजा अवयवनां काम जाणी श्वकतो नथी आंख वोली शकती नथी अने जीभ देखी शकती नथी एण आंख, जीभ अने सर्व इन्द्रियोनां काम आत्मा जाणे छे. (१२२) प्रकरम ५ मुं —३७ बोल सरीर आत्मान जाणतुं नथी नारण क है,

श्रद छे आत्मानं भाणवाषाळो पण आत्मा श्र छे भाष्ट्रन, स्यग्न अत्र निद्रा वर्णे अवस्या भौ नवा छना आत्मा ते वर्णे अवस्यायी सूदो छे; पट्छुं स नहि पण वर्णे अवस्या

बीत्या बाद पण आत्या तो हपाव छे भने ए सर्व जाले छे (२) आत्या 'निरय' छे

(न) आत्मा "नित्य" छ भारमा भने देह ए वे सूना ज पदार्थ जाणनामां खाळ्या अने खात्मानी स्त्रभाव भटवप-भरुषी समा देहनी स्त्रमाव इटब

भरदय-भरुपी तथा देहनी स्त्रभाव द्रदय अने रुपी जाणगामा आब्दो तो पछी, सार पा तदमीपी उत्पत्ति पामतो नधी अन देह साथे नाज पण पामना नथी दम सिद्ध थाय छे; कारण के, जडथी चेतन के चेत-नथी जड उत्पन्न थइ ज शके नीह, तेमज ते वन्नेनी साथे नाश पण न संभने

वळी, सापमां जे अत्यंत क्रोध अने उंदर-वीलाही वच्चे जे वैर जीवामां आवे छे तेनुं कारण वर्तमान देहे तो कुर्युं नथी कोइ पाछलुं कारण जोइए अने पाछल कारण विचारतां कबुल करवं पडशे के,साप-उंदर अगर वीलाडीना देहमां रही जे आ-त्मा क्रीध के वैर मगट वतावे छे ते आत्मा ते देहना पहेलां वीजी कोइ देहमां हतो. एम आत्मा आदि के अत वगरनो अर्थाव नित्य छे एम कवुल कर्वुं पडशे

(३) आत्मा 'कर्ची' छे.

''कर्मोनो कर्चा आत्मा निह पण कर्म

(१२४) मकरण ५ मुं — ६७ मोत छे, अगर अनापास कर्म धनी आने छे अ गर भो नमेंनो कत्ता आस्मा क होय तो कर्म करवा ए आत्मानो स्वमात वर्षो; तो पछा वेनो भोक्ष न समन्ने / एवो छश्चम व वा योग्य छे परन्द्र, चतन अधना आत्मानी नेरमा नम्म महर्षिन कोच सो कर्म के जह छे तें

आत्माज कमनो कर्चा छे बसी भारमा ज्यारे कम कन्नां छाडी दे छे त्यारे कर्म पंघरदे छे तेथी भारमाने कर्म करवानी स्वभावज अगर वर्ष ज छे एस पण कही

जो कर्षनो कत्ती (अरोन मानीए तो इया को शुद्ध-आस्म स्वभावे छे ते,कर्ष

कांड न किया केही रीते करी शके हैं मोंदे

लो प्रेरक एटले दोपित थयो; माटे ए कल्य-ना पण खोटी छे माटे कर्मनी कर्त्ता ईश्वर नथी, तेमज ते अनायासे पण आवतां नथी, तेमज कर्म ते जीवनी स्वभाव नथी; पण आत्मा पाते ज कर्मनो कर्चा छे आत्मा जो शुद्ध चैतन्यादि स्वभावमा वर्ते तो ते आत्म-स्वभावनो कत्ती छे अर्थात् निजस्वरूपमां परिणामित छे; अने जो ते शुद्ध चैतन्यादि स्वभावमां वर्ततो न होय तो कर्मभावनो कर्ता छे.

(४) आत्मा 'भोक्ता' छे.

े केटलाक कहे छे के, "आत्मा छे, ते किय पण छे, अने कची पण छे परन्तु कर्म जड होवाथी ते कर्म फलपरिणामी थाय

(१२६) प्रकरण ५ गु— ६७ बोम अने भारमा ते फळ मागव ए बनवा मो

ग्य नमी ' परन्तु, कम कांड फल देतां नयी : स्व भारे ज फळदाता नीयड छे मीठानी इरा

दा पनो नयी के स्वानारने मीं खाई कई, अने विपनी इरादी पनी नथी के कोइना भाग सर्व परन्तु वे बसेनो स्बभाव न ए छे

जेम मीठ अने विप स्तानार पोते न देई

फब्ट भोगवे छे तेम कर्म करनारो पण पोदे ज तेनाफबनो भोक्ता छे को एम न होत तो, एक माणस अन्ययी व रामा अने एक

(५) मोक्ष 'छे'

जन्मधी ज भिसक केम हैं इ. शके 🖰

केंग्लाक छोको मोक्षनी इयादी मानवा

नुथी: मोक्षने एक करूपना मात्र माने छे. तेओ कहे छे के -'' अनंता काळ वीती ज-वा छता कमें हजी हयात छे—संसार चाल्यां ज करे छे, तो पछी कमेनो नाश अथवा कर्ममुक्तपणु-मोक्ष होइ ज केम शके ? दळी शुभ कर्मथी देवपणुं अने अशुभ कर्मथी नर-कांदि भोगच्या ज करवानुं; पण जीवने क-मरहितपणुं थवानुं ज नथी."

आ करणना देखीती ज भूछ भरेछी छे, कारण के आ तो मत्यक्ष वात छे के, 'दिवस'थी प्रतिपक्षी कांड चीज होवी ज जो-इए; अने ते चीज'रात्री'छे 'ना' थी विरुद्ध फाडक होत्रुं ज जोइए, ज 'हा' छे तेपन 'वंध'थी प्रतिपक्षी कांइक होत्रु ज जोइए, के ज 'मोक्ष' छे.

(१२८) मकरण ५ मु --- ६७ घोस ग्रम अने अधुम कर्पना करवायी ग्रम अने अग्रम फळनु मोगवनापणुं मान्य राग्स्युं,

तो पछी एम पण मान्य कर्ब ज पदशे के,

शुम-अशुम कर्मना न करवाथी (एट के के₎ हेवी निष्टल यरायी) सम-अशुम फड़र्ड पण भोगलबापणुनधी तेल मोझ प्रविच मगर कर्म करवापणुं जेम अफळ नधी हैम कर्मची निष्ठचि पण अफल नदी-अने तेन फर मोश छे, क जेर्नु बीज़ नाम कर्मरहित

पणुं छे जनत काळ मित्यो से कर्म मस्ये जी-मनी आसक्तिनाज प्रमावे ; पण वेना च पर चदामीन मान यनाथी कर्मफळ छेदाय अने तेथी मासस्वभाग मगट याप

(३) माथनो 'उपाय' छे

मीयगना विश्वाळ अधकारने टाम्प्या

माटे एक दीवो शक्तिमान छे. तेमां पण एरंडीआना दीवा करतां केरोसीननो दीवो वधारे अने तेथी ग्यासनो अने तेथी पण वीजळीक दीवो वधारे प्रकाश करी शके छे. तेमन 'कर्मभाव' एवु जे जीवनुं अज्ञान, ते-नो नाश करवा माटे 'ज्ञान' रुपी दीवो छे अने ए ज्ञानमां पण 'आत्मज्ञान' ए विजळीक दीवो छे.

अजवाळा माटे अंधकारनो नाश कर-वा जोइए तम मोक्ष माटे कर्मवंथननो नाश करवो जोइए.

राग-द्वेष अने अज्ञानः एनं एकपणुं हा ज कर्मनी मुख्य गांठ छे ए विना कर्मनो वंध थतो नथी. तेनी निष्ठात्ते जेथी थाय तेज मोक्षमार्ग समजवो. जे मार्ग बड़े

(१३०) प्रकर्ण ५ मु –६७ वेस

मस् (अविनासी), चैतन्यमय (सर्पमा वने प्रकासवा रूप स्वभावमय) अने के वळ (शुद्ध) एवी आत्मा-शुद्धारमा पामीए एवं प्रवर्तन याय, ते जूमाराने मोसमार्ग

मानबो कर्म गुरूपत्ते ८ मकारनां छे वेगां पण मुरूप 'मोइनीय कर्म' छे मोइनीय क र्मना पण व भेद छे ---

(१) त्र्यन मोडनीय कम —परमार्थने विषे अपरमार्थ पुद्धि अने अपरमार्थने विषे

परमाथ पृद्धि रूप (२) पारित्र मोहनीय ब्हमं —परमाद

रिम ते पारित्रने रोपक एवा पूर्वसस्कार

अनुसार, आत्यस्थमाममां स्थिरता ते चा

भ्रुप कपाय अने नोकपाय: ते 'चारित्र मोह-नीय' कर्म.

ए वन्ने कर्मने फेडनार तेना प्रतिपक्षी 'आत्मवीघ' अने 'वीतरागपणुं' छे:—

- (१) 'दर्शन मोहनीय' कर्मनुं कारण 'मिथ्याबोध' : तो तेनो उपाय 'आत्मवोध' ज होइ शके
 - (२) 'चारित्र मोहनीय' कर्मनु कारण रागादि; तो तेनो उपाय पण 'वीतरागपणुं' ज होइ अके

कोध विगेरेथी 'कर्मवंध' छे; अने प्र-तिपक्षी क्षमाथी 'कर्मक्षय' छे, तेबी ज रीते उपलो भेद पण समजवानो छे (१३२) प्रकरण ५ ग्रु --- ६७ मोल सर्वन सत्त्व-अक ए नीवळ छे में,

आस्मयोभ अने रामक्षेपना त्यामना स्त्रपी यपुं-एयी ज परिणामे मोक्ष छ अने ए खपी पणुं भेनावां द्वाय से मन्त्रे गमे ते वेप पहेरती हाय-गम ते हाय परत ते सीचे रस्ते छे सीघो रस्तो अयवा समक्रित पामेलो माणस

मोलनो पहोसी बने छे भारमाधी जीने भारपाना मुक्तपणा (कमेम्बन्दपर्णु अगर गोल्ल) माटे इरइमेध

चितवन क्याँ करम मोहए बररामानी जैम सकळ इत्यो एकाग्र यह कल्याना मेळाप वरफ क कागी रही होयछे।सहया नीकबेला रानानुं एकदर छक्ष जेम श्रमुन पोदाना पर्म

वर्क पहेंची जीना संचार रही होय छै। सी ।

न्ढाना तार उपर नाचनारा नटनुं सर्व चित्त जेम सुक्ष्म तारना मध्यविंदुमां होय छे; तेम अने वरावर तेमज, आत्मार्थी जीवे मोक्ष अथवा मोक्षना साधन साथे हुटे नाहि एवी लगनी लगाडवी जोइए

एवा आत्मार्थी जीवो अथवा जिजा-सुओनी मेाटी आशा मेाश्वनी ज होवाथी, तेमनो मोटो आनंद पण ते संबंधनो ज होड र्शके चोरीमां वेठेला वरने जेम व्यापारमां लाभना समाचार आनंद आपता नथीं पण 'कन्यानी पधरामणी करो 'ए शब्द आ-नंद आपे छे; पछी कन्यानुं वस्नदूरथी नजरे पहतां वधारे आनंद थाय छे; तेने पासे वेसाहवामां आवतां एथी वधारे आनंद

(१३४) धकरण ५ मुं —६७ बोल याय छे अने इस्तमेळापथी बळी एथी पण. चपारे बानंद बाय छ, तेमम मुमुझ जीवाने सांसारीक लामगी, मोगियलसयी के की चिंची कांत्र आनद बतो नगीः ए तो न्य बहार सालीमूत यह चलान छ परंतु हेनी आनंद तो मात्मिक कामपां ज रहमो होय छे कोर पश्चिमात्मानां वर्शन, रागद्वेप पर जीत मेजबबार्ज पोतायी मरायर्ज कोर पगलु, हान संबंधी थयें छा कोश विचार एज वेने आनट आपी इस्ते छे. ए दशा परिपक्त क्यार याय ए बाधा बळी तेने ओर भानद

आपे छे आर्थी एक मुंदर मुकावली स्रक्षमी, लेका याग्य छे सांसारिक आज्ञा माणसने इमदा चिंताग्रस्त राखे छे, ज्यारे भा आज्ञा

,होने आनंडमय राखे छे

ए स्थितिनी परीपक्य दशा अर्थात् स-र्व आभारारहित आत्मस्वभावनुं जैमा अखंह ज्ञान वर्त्ते छे ते ज 'केवळज्ञान ' एवा केवळी, देह छतां उत्कृष्ट जीवन्मुक्त दशामा समजवा. े देहाध्यास अथवा देह साथे एकता

दहाध्यास अथवा दह साथ एकता अने देहना धर्ममां अनुरिक्त मटे तो पछी जीव कर्मनां कर्ता नथी तेमज भोक्ता पण नथी ते मोझ स्वरूप ज छे: अनंत दर्शन—अनंत ज्ञान-अनंत सुख स्वरूप छे.

" हुं देहादिक सर्व पदार्थथी भिन्न छुं. महारुं आत्मद्रव्य कोइमां भळतुं नथी— कारण के आत्मा सिवायना पटार्थी जड छे तेमज कोड म्हारामां भळतुं नथी स-

(१३६) मकरण ५ मु---६७ वोस र्मियी हुँ भिक्त छुँ माटे— " हुं गुद्ध छूं, बोधस्वरुप छुं, चेतन्य मदेशात्मक छ, हुं अन्यानाथ शुलगप छ

अने हु स्वयंख्योति स

" है स्वयंज्योति होबाधा मने मकाश्व नार हुं पोते ज खुं-चीमुं कोर नथी स्व

मकाञ्च माटे नो हुं स्वपी बार्ट हो रांक बीचा

रां मर्पनी श्रीसचा छे के मार्चनाम दर

घके! प्यी मावना इमेश मने होती!

प्रकरण ६ हुं.

'धर्म तथा देव.

अक्ट्रिअट्ट कियानी समस्त प्रजाओ धर्मनी इ-क्ट्रिअट च्छा करे छे अने वीजी सर्व वावतो करतां धर्म तरफ वधारे माननी लागणीथी जुए छे केटलाक तो मात्र अमुक शब्दो अथवा अमुक क्रियाओने ज धर्म मानी लद्द ते पाछल पोतानी जीदगी अपंग करे छे.

मात्र अभण अथवा ओछा केळवायला

(१३८) प्रकरण ६ – पर्शतयादन स्रोको ज पग तरक थान्त्री बची आस्या भरावे छे, एयनयी एवी जलई महाविद्वानी धर्म सरफ मामान्य प्रभा करवां वधारे आ स्या परापता जोपायां आख्या 🕹 रालहनो माप्ती प्रचान ग्लेडस्टन साहेश के से सभय-क्रमारनी नमणी हाव गणाही वे ज्यारे ज्यारे दनियाना कामकामधी कटाव्यती अ गर ज्यारे ज्यारे तेनं मार्थ दःखनं स्थारे ते 'बादवल' लग्ने बेसवी व कहेगी के संकडी

बार 'बादबल' वांबबा छवां इरवस्वत वेर्माणी मने दवी एरी खुबीओ नहीं आवे छे के चिताओ अने बुक्सो ते खुबीओनी मझा आ

भे भर्ने युरोपनी प्रजान १००० थी

गळ भद्रक्य याय छे

,वधारे वरस सुधी अज्ञानमय−दुःखमय−जु-ल्मी स्थितिमां राख्युं ते धर्मना पुस्तकमांथी आवा महाविद्वानने आटलुं वधुं सुख मळतुं त्यारे जे धर्भ मनुष्याने हजारी वरस सुधी मुख आप्युं छे-जे धर्म आपणने सर्व विद्या-,नुं ज्ञान आपे छे-जे धर्ममां वीजा धर्में।नी माफक परस्परीवरोध छे ज नहिः एवो धर्म आ जन्ममां दीलासो अने आवता जन्मोमां म्रुख केम न आपी शके ?

जेटला जेटला लोको धर्मने माने छे तेओ पायः दुःख जोइने ज मानवा लाग्या छे. पोताना दुःखो दूर थाय अने कायमनुं सुख मळे एवी योजना : ए ज धर्म

आ प्रमाणे वर्मनुं मूळ हिनुकारतां अने

(१३८) प्रकरण ६ - धर्म तथा दव

स्रोको ज पम तरफ आटडी वर्षा आस्थाः भगवे छे, एमनयी एवी उलद्र महाविद्रानी

धर्म तरफ मामान्य मना करवां बधारे आ स्या परानता जीनायां माच्या छै ध्रस्तहनी माजी प्रधान ग्लेडस्टन साहेद करने समय क्रमारनी अगमी दाय गणाती ते ज्यारे,

ते 'बाइमस' सबने बेसती ते कहेनी के सेंबडी चिताओं यने दु खो ते ज़बीयानी पशा आ गळ सद्रश्य याय छे

ष पर्ने युरोपनी मनान १००० थी

क्यारे दुनियाना कामकामधी कडाळवे स गर ज्यारे ज्यारे तेर्नु माथुं दुःखनु त्यारे

मने एवी एकी ख़ुषीओं अडी आ वे छे के

बार 'बारवम' बांचना छतां हरबखत तेवांची

र्वधारे वरस सुधी अज्ञानमय−दुःखमय–जु-रुमी स्थितिमां राख्युं ते धर्मना पुस्तकमांथी आवा महाविद्वानने आटलुं वधुं सुख मळतुं त्यारे जे धर्भ मनुष्योंने हजारी वरस सुधी मुख आप्युं छे-जे धर्म आपणने सर्व विद्या-्तुं ज्ञान आपे छे-जे धर्ममां वीजा धर्मीनी माफक परस्परविरोध छे ज नहिः एवी धर्म आ जन्ममां दीलासी अने आवता जन्मोमां मुख केम न आपी शके ?

जेटला जेटला लोको धर्मने माने छे तेओ पायः दुःख जोदने ज मानवा लाग्या हुछे. पोताना दुःखो दूर थाय अने कायमनुं सुख मळे एटी योजना : ए ज धर्म

आ प्रमाणे धर्मनुं मूळ स्विकारतां अने

(१४०) प्रकरण ६—धर्म तथा देव सर्व मीषोने सुख दुःख्यी मारी नरमी ला गणी थाय छे वे विचारतो, आपोआप ज

समजाय छ के, वर्ष कोड दिवस कोड एप भीवना बुज्यमां समायको नयी बीजा छ ब्दोनां कड़ीए वी, '' अन्य जीवोन सुख भापीने ते रस्ते पोता माटे सुख मेळवबानी ने कळा तेतुं नाम भाषते ?' आ एक पर्वनी सामान्य व्यास्था पर

दुनियानो कोई माणस-पळी वे चाई ते प यनो मक हाय पण आ सादी ज्यास्या ना स्तुक करी शक्को नहि अने मो ते नाक्तुस

कतुक करी शक्त नोई अने माँ व नाकतुरु करवानी हिमत घरावती इसे वो ते माण-साम्यीपण वृद्द हेबानी हिमत घरावती

रोगी नेग्रप

जरथोास्थ, जैन, वेद, इस्लाम विगेरे सर्व कहे छे के:-'मनसा', 'वाचा' अने 'क-मणा' (मनथी-वचनथी अने कृत्योथी) गुद्ध वर्त्तणुक ए ज धर्म; परोपकार ए ज पुण्य अने परपीडन ए ज पाप.

ज्यारे द्वीनयाना सर्व धर्मी एज पाया उपर चणाया छे त्यारे ए पायो शुं ओछो महत्वनो होवो जोइए १ परन्तु पायो एक छतां इमारत बांधवामां जूदा जुदा हाथोनी कारी गिरीमां फेर पडी गया जणाय छे. को-इए भीलनां ञुंपहा वांव्या, कोइए खेदुतनां ्नाटीनां घर वाध्यां; कोइए एक माळनां इटोना घर वांध्यां; कोइए बगला वांध्या अने को इए मजबुत दीवालवाळा सुशोभित (१४२) प्रकरण ६ — भर्मे तथा दव

सात माळना दीव्य महेल बांध्या मन, मधन अने शरीरनी ग्रन्ट बर्तणक

तथा परापेकारनी उपवेश करना छता. ए ब उपदेशक को धर्मनी खातर होम, यह पूजा, निषेदनी उपदेश करे तो श्रुप उप देशमां परस्परविरोध स्पष्ट जणातो नयी। अने भ्रं प परस्पर निरोध ते उपदेशकनी

स्यार्थवृद्धि अथवा जीवाजीवना ज्ञाननी ग रहानरी सावीत करवा वस नवी रै

षेदनो स्पष्ट पोकार छ के " अधिमा परमी पम '. अने तेम छता बेद ज हिंसक क्रियाना जनदेश करे स कम संसन रैमन इय स एको उपदेश कर तालेका सम्प्रमां एनं ज्राप्त के, तेणे धंदर पाया न्उपर सहजमां उडी जाय एवी झुंपडी ज वांधी!एवी रीतं दरेक धर्म माटे कही शकाय.

वीतराग एटले राग अथवा पक्षपात विनाना पुरुषोए जे पद्धतिथी मोक्ष अथवा नीजरुषपणुं अथवा सास्वतुं सुख संपादन ऋर्युं छे ते पद्धतिने 'जैन वर्ष 'ए नामथी लोको ओळखे छे, कारण के तेमां स्वार्थ अने हिंसा उपर जय मेळववानो ज उपदेश छे; एटलुं ज नहि पण एम करवानां हथी-आर पण पुरां पाहयां छे.

एना उपदेशमां हिमा अने स्वार्थीपणा-नो अश मात्र नथी अने जो कटाच कोइ माणस कोइ सूत्र, कोइ पुस्तक के कोइ ग्रंथ एवो बतावी शके के जेना उपर जैन नाम

समजाय के के, वर्ष कोड दिवस कोड पण भीषना दुःखयों नवायका नवी बीजा के क्दोंनी कहींय तो, "बन्य भीषोने हुल आपीने त रस्ते पोता माटे हुल मेजवरानी में कडा तेतुं नाम भ वर्ष ?" आ एक वर्षनी सामान्य क्यास्या यह दुनियानो कोई साणस-पढ़ी ते वाहे ते प

यनो मनः हार नार नार कि व राहे व नार मा कबूच करी अक्षेत्र नार को नार नुष्क सरमानी हिस्स परावता हथे तो ते माण सरमानी एण पूर रहेवानी हिस्स परावती हावी लेगाण जरथोास्थ, जैन, वेद, इस्लाम विगेरे सर्व कहे छे के:-'मनसा', 'वाचा' अने 'क-मणा' (मनथी-वचनथी अने कृत्योथी) शुद्ध वर्त्तणुक ए ज धर्म; परोपकार ए ज पुण्य अने परपीडन ए ज पाप.

ज्यारे दुनियाना सर्व धर्मी एज पाया उपर चणाया छे त्यारे ए पायो शुं ओछो महत्वनो होवो जोइए १ परन्तु पायो एक छतां इमारत वांधवामां जूदा जूदा हाथोनी कारी गिरीमां फेर पडी गया जणाय छे. की-इए भीलनां चुंपहा वांच्यां, कोइए खेडुतनां भाटीनां घर वाव्या; कोइए एक माळनां **स्टोना घर वांघ्यां; कोइए वग**रुा वांघ्या अने कोश्ए मजबुत दीवालवाळा सुशोभित (१८२) प्रकरण ६--- भर्म तथा दम

सात मालना दोष्य महेल बोध्या मन, बचन अने वारीरनी शुद्ध वर्तणुरू वया परोपकारनी उपदेश करना छता, ए स

ष्ठपदेशक की धर्मनी खावर होम, यह पूजा, निवेदनी चपदेश करे वा भ्रुप् उप देशमां परस्पगंवराच म्यप्ट जणावी नयीक्ष अने भं ए परस्पर विरोध ते वर्षेत्र कती स्वार्यवृद्धि अयवा श्रीवासीवना श्राननी ग-

रधानरी सामीय करवा वस नथी ! किपाना उपहेश कर त केप संसवे । भने

मेदनो स्पष्ट पोकार छ के " अहिंसा परमी भग '. अने तम छवा बंद ज दिसक

माते एवी उपवेश करे तां तेना समप्रमां पटलं भ कही शकाय के, तले संदर पाया उपर सहजमां उडी जाय एवी झुंपडी ज वांधी!एवी रीते दरेक धर्म माटे कही शकाय.

वीतराग एटले राग अथवा पक्षपात विनाना पुरुषोए जे पद्धतिथी मोल अथवा नीजरुषपणुं अथवा सास्वतुं सुख संपादन 'कर्युं छे ते पद्धतिने 'जैन वर्म 'ए नामधी लोको ओलखे छे, कारण के तेमां स्वार्थ अने हिंसा उपर जय मेळववानो ज उपदेश छे; एटलुं ज नहि पण एम करवानां हथी-आर पण पुरां पाहयां छे.

एना उपदेशमां हिसा अने स्वार्थीपणा-नो अश मात्र नथी अने जो कदाच कोइ माणस कोइ सूत्र, कोइ पुस्तक के कोइ ग्रंथ एवो वतावी शके के जेना उपर जैन नाम

शाय अने जेनी अदर दिसक फुल्पनी, धपदेश होय, सो सं पुस्तक किनसेख' नहि एण बनावटी च समजब् उचम चीमी नी मोटी नकरो एमेश थर्पाज करे छे नैन सिद्धांतीए अहिंसानी उचमता स्विकारवा छता ते पाळरामा रहेली मुझ्के-रीओ पण सक्षमां राषी छे. अने वयी 'सा गारी' अने 'अनागारी': पनी वे शाखाओ धमनी बनावी छ ने छोकरी सम्पास छोडी आला दिवस रम्यां करतो होय तेने सुधा रना अर्थे नथम तेनो पिता कह के तारे समार-ना ७ यी १० सनी तो नाई जरपष्ट आ वा

क्यमां '१० बाग्या पछी रम्, म' एवा हुस्म समाना नथी पण ७ षी १० सुषीना निषम

(१४४) मकरण ६-मर्भ तथा देव

मां लाववानों ज समावेश थाय छे. धीमे धीमे ए नियमने वधारवामां आवे छे अने छेवटे छोकरो पोताना काममां मदागुरु चने छे. ए प्रमाणे आ जैन सिद्धांती पण रात्रिदिवस हिंसकवृत्ति अने स्वार्थमां रहेला मनुष्योने माटे पथम ' सागारी ' धर्मनो रस्तो वतावे छे अने ए धर्ममां स्थिर थये-लाओ माटे 'अनागारी ' रस्तो बताबेछे.

' सागारी 'धर्म पाळनारा 'श्रावक ' नामधी भोळखाय छे अने 'अनागारी ' (अणगार) धर्म पाळनारा 'साधु ' ना-मधी ओळखाय छे सागारी धर्म पाळनारे पोतानी दृष्टि हमेश अनागारी धर्म उपर टेकववी जोइए, निह के चालु स्थितिथी

मंत्रोप पानी अन्त्री रहेर्च जीइए पी-च हमारनी अहींबाळा गहस्यो एटलेयी सतीय वामी बेसी नीह रहेता सास मेळ-बवा तरफ ज दक्षि राखे छे— जी के लाख मेजनबात श्रीहानाज नशीवमां होय छे देमज अनागारी पर्म पण थाडानाज नसीवमां होच छे.तो पण हमेश'आशय बच्चतर ज करपबी' (Ann High) ए सुइतुं सञ्जूष छे उत्तम पदार्यने। स्रोभ दिवकर ज क्रे अनागार धर्म (साघ्र धर्म) मापुनी सचातीश प्रकारनी योग्यवा अय-

मा गुण निषे पांच्छ पीजा बकरणयां कहे-माइ घरषं छ नेमनी राष्ट्रितमेश आत्मसु।घर

(१४१) प्रकरण ६--देव तथा धर्म

तरफ ज होय छे ए आत्मसाधनना धर्ममां जे नवां नवां तत्त्वो अंतर्दाप्टिथी जोवामां आ-वे छे अने तेथी जे अंतरानंद थाय छे ते अ॰ कथनीय छे. युरिषयन कावे 'काजपर'नी नीचली लीटीओ आ संवंधमां तदन साची ज छे:—

"Religion! what treasures untold

"Reside in that heavenly word!

" More precious than silver or gold

"Or all this earth can afford."

ए आस्मिक धर्मना खनाना खरेखर सो-ना-इत्या करतां अगर दुनियानी हरकोइ वस्तु करतां घणाज कीमती छे एवा अनु-पमेय, अकथनीय अने स्वतंत्र आनंद जे(मा-धु)ने मळ्तो होय ते पछी दुनियाना च्यव- (१४८) प्रकल्ण ६—वेव तथा धर्म इारन भने तेनी वृ सपरिणामी सहेमतोने

कटी पण केम स्विकारे ! ससार अनेससा रना पुरुका रूप पुरुगकीक शरीरनी सटपटो सेने केम पसंद पडे !

साध-धर्ममां नीचेनां 'पण महाजव' # नो समाबेख बाय के!---(१)भाणाविपात विरमण ब्रवः-एकेन्द्रि-

पवी पंचेन्त्रिय सुपीना स्पावर समज बस **जीवोने पोवाना सरमा गजीने, पोवाना** नेवी ज रोमनामा आत्मसचा छे एम मा-नीने, वे सबनी बया पाछे अर्थात पोठे

स्त्रीस्ती घममा पण एवीम पांच मनाओं

(Commandments) &-Thou shalt not kill Thou shalt not stool &c.

हिंसा करे नहि, क्ष्वीजा पासे करावे न-हि अने कोइ करे तेथी मनमां राजी था-य नहि.

(२) मृपावाद विरमण त्रतः—मृपा अथवा खोढुं वोले नाहे. अही खोढुं वोलवामा मात जृढुं वोलवानो ज समावेश थाय
छे एम नाहः; परंतु जे जे वचनो अभिय,
अपथ्य अने अतथ्य होय ते सर्वनो समावेश थाय छे. अर्थात् साधुए दरेक वचन
भिय, + पथ्य अने तथ्य वोल्डुं. भिय

* हिंसा ८ कारणोथी थाय छै:-अज्ञान, संशय, विपर्यास, राग, द्वेप, स्मृतिभ्रंश,योग-इ:प्रणिधान अने धर्मनो अनादर.

+ वेदमां पण कह्य छे के, "सत्यम् ब्रूहि, प्रियम् बृहि."

(१५) प्रकरण ६-देव तथा भन पटले के सांमकनाथी कोइना जीवने केस

न बाय. प्रथ्य प्रदेशे के बचन छेरले सर-बाबे हितकारी नीवडे अने तथ्य पटले य-या तथ्य अथवा साञ्च जे वचनमां ए प्रणे

नियम सचवाता न होच तेवे बचनकोलना करवां साम गौन रहेच्चे बमारे पसंद करे (१) अवचादान विरमण अतः-कोर

(४) मैधन विरमण ब्रहः—सर्व मका

पण बस्त कोइना आप्या सिबाय से नहि

रे इसीसमागम तजनो आ वतना रक्षणा के समर्थ पुरुपोध 'नव बार' अथवा नव

किरमा योज्या छे, के शेवी विषयमुर्दिना

गम्मालीभानो संयय ७ रहे नहि

(५) पा ग्रह बिरमण वता-धन-धर-

ती आदि हरेक मकारना परिग्रह के जे आत्माने ममत्वभावथी 'वंधीवान' बनावे छे तेनो सर्वथा साग साधुए करवो पढे छे.

सागारी धर्म (श्रावकनो धर्म).

सास्वता सुख अथवा मोक्षना पगथी-आ रूप सागारी धर्म वार मकारे कह्योछे. परन्तु ते वारेनो समावेश '' स्थूल माणा-तिपात विरमण त्रत''मां थइ शके पृथ्वी-मां केटलाक जीवो स्थूल एटले मोटा छे. अने केटलाक सूक्ष्म छे वे इन्द्रिय आदि त्रस जीव ते स्थूल समजवा अने एकेन्द्रि-य स्थावर जीव ते सुक्ष्म समजवा. आ वे मकारना जीवो पैकी, श्रादक अगर सागा-

(१५२) मकरण ६-यण तक्षा धम री धर्म पाळनारो यात्र स्यूख जीवनी म हिसाबी दूर रही शके छे, सुक्ष्म जीवी वी संसार व्यवहारना वरेक कार्यमां इणामा करे छे, देनो नियम दे छह शकतो नथी सोपण बनवा छपी वेनी 'यत्ना' अयगा समाळ राख्याने तो वे सतमा गाले छे स्पूल जीवनी रसामा पण अमुक स-रना (Conditions) झामक रासे छे पहे-

छी मरत ए के,स्पूछ जीवने संकरण करीने (Intentionally) भारवा नहिः वीकी मरत ए के,निरपराणी स्थून जीवने मार-

या निहाधीओं सरत ए के,निरपेत हिंसा करवी निहें का क आवके पण सवसा दिसा त्या गवानी स्थितिए पहोचवानी उमेद राख-वी जोइए तोपण ते स्थितिए आवतां प-**देलां** आटली छूटवाळुं फरमान तेने वता-व्युं अणसमजु लोको श्रावकोने माथे खो-टुं आळ चडावे छे के, तेमना धर्म ता तेमने न्हावानी मना करे छे; अने तेओ नाना जीवने वचावनारा अने मोटाने मारनारा छे अत्रे आपेला खुलासा उपरथी सम-जाशे के,ए तहोमत केवळ वीनपायादार* अने द्वेषमय छे

^{* &#}x27;वनराज चावडो ' ए नामना पुस्तकमा तेना सुप्रासिद्ध कर्त्ताए जैन धर्म माथे गुजरात नी परतंत्रतानो आरोप मुकयो छे अने देशर-क्षणार्थे पण श्रावकोने छडता तेमनो धर्म नाम

(१९४) प्रकरण ६-चेन तथा भर्म

अहिसा नामनं भा पहेलं व्रव पाळवा चपरांत.जव-शोरी-व्याधवार भने हप्ला करे छे पनी सिब्दांत हाश्यास्पद मसंग आपी **शीवरी मताब्यो छ; ते माम नेन सिदांतीना** रहस्यपी अज्ञानतार्त्र न परिणाम हे आश्चर्यनी वात छे के, ए जैन बम नेवा स्वामाविक अने न्यायम्फ (rational) धर्मनी सोग्रही निवा

करनार विद्वाने नेन राजाओ युद्धीमां केवा प-राक्रम करता ते माणवा दरकार भरी नधी है (के ने एक सागारी धम पाळनारी छं)एम कहीं शकीश के संमारी वाणी न जमीनमांची साम में छे ते नमीन (मानुमूमी)ना रसपार्थे सरपा तैयार पाय तो त अपराधी साथे छहे छै, ग रमाथ मंद्रे छे हिंसा करबाना हेतथी म नहि पण हिमाने हर परवाना हेत्यी खडे है अने

🤟 ए चारथी निवर्तवा रूप ४ वीजां व्रत पण तेणे पाळवानां छे.आ ' पांच अणुव्रत '+ तेथी पोताना सागारी धर्मने उल्लबवानी अर्था-त् लीधेला नियमने तोडवानो दोष वहोरतो न-थी, जो के हिंसानो दोष तो लागे ज परन्तु ए ांक संसारी तरीके उपला संजोगोमा पण जो तें लड्युं पसंद न करे तो वेहेतर छे के तेणे साधुपणुं अथवा आगार वगरनो धर्म स्विकार-वो -प्रकाशक

+ साधु ए पाच त्रतो सर्वथा—काइ पण आगार सिवाय पाळे छे माटे साधुना ' पच म-हात्रत ' कहेवाय छे अने श्रावक ते सर्वाशे पा-वी शकतो नथी पण अमुक छूट राखवी पडे छे माटे तेना ' पच अणुत्रत ' कहेवाय छे. (१५१) प्रकरण ६-देव तथा धर्म करेपाय छे

ए पांच उपरांत बीआं ७ व्रत श्रावके पाळ्यानां के ते उक्तमां नीचे ममक के -दीशानी मर्यादा, परिश्रहनी मपादा, अ

नर्धद्र अथवा निष्ययोजन धता दोपोधी पिरक्ति, सामायिक नामनुं ध्याननुं झढ, दीशायगासीक वत, पोपपवत अने अ-

विधि संविभाग वत (ए सातना विस्तार

अम्य कोइ प्रस्तकर्मा कोइ छेवी)

वा मिरिनो केरको माग आजना मोप-

भ'मो'सोद राजकोक'नु बणन भाष्यु छे हे

इमी वैमनाथी अमाज्यों छे 'बीदराम नों-

को बोइ शक्या छ तेथी घरो मोटो माग

जेमां सकळ विश्वनी भूगोंळ-खगोळ आ-वी जाय छे ए सर्व जमीन अने तेमां र-हेलां प्राणी-पदार्थीमां जुदा जूदा खास गुणो रहा छे ए गुणो ए तेमनी कुदरत छे कुदरतने आदि नथी, अंत नथी. व्यान सजीए पहेरेली पाघडींना जो अंत के आ दि जोबामां आवे तो कुद्रतना आदि-अंत हाथ लागे. तेनो कर्ता कोइ नथी. ते नाश पामती नथी पण समय समयमां ते-नां रुपांतर थयां करे छे तेथी सामान्य मनुष्यो तेने नाश पामती माने छे. पृथ्वी-नो कर्त्ता कोइ होइ शके ज नहि एवी मा-न्यताने आधुनिक जमानाना युरोपियन विद्वानी पण टेकी आपे छे.

(१५८) मकरण ६-देव तथा पर्म

नी प्रमा-भर्जा करवान तो पर्या ज रहा अने कुदरत तो जह के तेनी पूजा स ?

'देव'ना संबंधनां घणा कोको मुसा मम छे देव सक्द 'दिव' पटले मकाशस् ए बपरकी नीकळ्यों छे 'देव' एटसे मान

'मकाश'।अयवा ज्ञानादि आरिमक वेमधी' मकाशीत बात्या, नेमणे स्वमानयी मका ईश्वरने कर्चापणं नधी पवा मिळातनी मान्

बीनी माढे बाचो श्रीमती पार्वतीनी कुन 'सन्य ॥ 'मेन क्षितेच्छ' ऑफिसमा मळहा 🕽 ।

क्त स्योदय' हिंदी भाषामां मोटी ग्रंथ-मृष्य

वेननम्बनी पीजान माटे ए पुस्तक साम भांच

बा---विवास्त्रा माम्य स

क्यारे क्षिर कर्चाक नथी सारे पछी प

शमय आत्मा उपरनो मेल दूर करी निज रूप'
माप्त कर्यु छे.एवा एक वे नाहे पण असंएव आत्माओ देव छे तेमने एक पणे मानो अगर अनेक पणे मानों ते सरखं ज छे;
सर्वने देवपणुं एक (सामान्य) कारणथी
ज आरोपीए छीए

'वीतरागनोंव' बोधे छे कें, '' तमारा पग उपर उमा रहो. करको तेवुं पामशो अने वावको तेवुं लगको. अने केवी रीते वाव्युं के जेथी उत्तमोत्तम फल लग्युं, ए जाणवा कोशीश करो अमने याद करको तो अमारां ते कामो पण याद आवशे अ-ने तेथी कोइ बलत अनुकरण पण करी भक्तो. वाकी तो तमारं कल्याण तमारा

(१६) प्रकरण ६-देव तथा भर्म

हायमां न छे समारी सचा नवी के कोहने कांड्र आपी शाकीए "

केषु निष्पस्तवात कवनी केषी शीसरागी शात ! केषो सरस आत्यसभय (Solf-rolianco)नो पाउ! मा आत्यसंश्रयनो पाउ ज्यारे छोको बराबर समझते स्पारे जसामा जिक अने आत्यिक जन्नति वधी पारका पगे दोहबानी आशा रासनारा गाम, प

पने दोहबानी आधा राखनारा माम, प णु मोड्ड थाय छे स्थारे, पस्ताबाना मर्सगो म पामे छे ईश्वर आपणा माटे अबतार रूदने आपणी बांग झामी विधानमां मेसा-दी नह जाय, पृषी मान्यतायां केटछा पथा नोको योचारा आ अमुस्य मतुष्य देह-राण मुसाय छ।

अज्ञान, क्रोध, मद, मान, माया, छो-भ, रति, अरति, निद्रा, शोक, असत्य, चोरी, मत्सर, भय, हिंसा, प्रेम, क्रिडाप-संग अने हास्य : ए अढार दोष वगरना देवनुं स्वरुप जाणनाराओं कदी कोइ जा-तना व्हेममां फसासे नहि कारण के देव-ने जन्म-मरण छे नहि, करवापणुं छे न-हि, रागद्वेषादि छे नहि, रुपरंग छे नहिः मात्र ज्ञानानंद रूप तत्व ए ज देव छे. के ते तत्वने हुं अने तमे (प्रयास करीए तो) पामवाना छीए.

प्रकरण ७ सु

भिष्यात्व#

सो हैं जुनने पीटळ प बनेना स्वमा अ≪% देवना जाणपणायगर सो<u>त्</u>य ओ-ळलाइ शकतुं नधी तेमज, सम्पन्त्व अने

मिध्यास्य बन्नना स्वभावना जापपणा व गर सम्यक्त्वनी कद्दर यह शके नहि

मिच्यात्वमो अथं 'ब्हेम यह शके ब्हेम बे

मकारनी (१) Superstation सीटा पदार्थने-

अमपाने सामा तरीक मानीए ते तथा (२) Suspicion साथा पदार्थमां शंका राहीऐ के मा सार्च हुरो के केम ते मैन मार्ग निःशंक

घणीए भोळी श्राविकाओं के जेओ छ-पाश्रये * हमेश जाय छे, सामायिक 🗴 नित्य करे छे अने धारेला + गुरुनां द-(Unsuspecting) होवाथी उमदा खवासनी छे अने व्हेमो (Superstitions) वगरनो हो-वाथी सुधरेलों (Refined) छे, ए वे गुणो ते-ने आ न्यायप्रिय जमानानो सर्वमान्य धर्म बना-ववा समर्थ छे.-मात्र समर्थ लेखको अने उपदे-शकोनी न्यूनता छे

* उपाश्रय, an asylum

× सम भाव (रागद्वेपरहितपणुं-आत्म-गुण)मा स्थिर रहेवानुं ४८ मीनीटनुं च्चत(ध्या-न जेवुं ज)

+ केटलाक वेश लजवनारा साधु स्त्री--पु-

(१६४) मुकरण ७--मिथ्याख

र्शन मादे पेछी बह जाय छे तेजो मुसस मना ताबुतनी मान्यता पण पटलाजभ बयी राख़ें छे तेने किचारीने शी सदर

प्रपण्ड सोनारा पोवाना ग्रहनी पासेथी। वेओं 'समाकेतना बोरू' गोलती **पर** सम्बन्ध्य अने मिच्यात्वना भेद श्री होत वो वाद्य होळी, मावा-मेसदी, र

भा कागळनी साबुत तेने छोकरी भाप समर्थ नथी ! गुरु तरीकेना मान साटे स

बाजी मवानी अने ईंगराने कदी मार नाहि मोक्षना देवने करवापणुं छे अ न रपीन कहे छे के " तमें मने पुरु पारी, भिं

विगेरे ' एक साधु उपर मेम अने बीमा तर नेदरपारी यशनु आ एक मधळ कारण है

अने स्वर्गना देवना हाथमां, मनुष्यना पूर्व भवनी करणी सिवाय, कांड देवानी शक्ति नथी. तो पछी नाहक वखत, पैसो अने शरीरवळना भोगे तथा शुद्ध सम्यक्त्व-रत्नना खर्चे शा माटे मिथ्या भ्रमण करखें? माटे सम्यक्त्वना शोखीन माणीए मि-थ्यात्वना, नीचे समजावेळा २५ भेद वरा-बर समजीन पोताना आत्माने तेनो 'संघ-

* "Man is the architect of his own fate" and "Nothing can work me damage but myself, the harm that I sustain I carry about with me, and I am never a real sufferer but by my own fault"—St Bernard

हो' # न थवादेवा सावचेती राखवी जोडण.

[#] संघटो-स्पर्श-आभडछेट.

(१६६) प्रकरण ७-निध्यात्व

(१) 'अभिप्रहीक मिथ्यात्व'-मे मनुष्यो इतमाद करी, कदाग्रह छोडे नोह अने सामो गाणस खरी दलील स्पष्ट सममावे तोपण ' गवेदानु र्युष्टह प-भड्युते छोडे नहिं तेने "अमिप्रहीक मिष्यात्वी "को छे इप्रांत वरीके 'सोर

माणिया 'नी बात सुपसिद्ध छे; वेणे ज-देल सोर्ड माथे मुकीने भागळ चासवां रू पु-सोन-सनेराव विगेरेना समुद्र जीवा 😎 तां सोदं छोटपुंण नीह अने नाहक नि र्मास्य चीन उपादीने दुः स्त्री घया देपन

केटलाक माणसने ज्ञाननी बाद समगापी-प त्यारे कहे के, शुं आटला दिवस हा-न पगर पदमु रख्डा के अभे दो भ

मारे 'करता होइए ते करीए अने छासनी दोणी भरीए ' एवा विचारा 'अभिग्रहीक मिथ्यात्वी जीवो 'ना नसीवमा दहीं-मास-ण-मलाइ-धी क्यांथी होय !

(२) अनाभित्रहीक गिथ्यात्व.

केटलाक मोळा जीवो एवा होय छे के जेओ वितराग देव,तेमणे भाषेलो धर्म अ-ने तदनुसार वर्तनार साधुओने मानवा छ-तां कहे छे के, 'आपणे तो सर्व देवने न-मवाना अने सर्व धर्मने मानवाना ' एम-नामां 'अनाभिग्रहीक मिथ्यात्व' समजवुं. जे देवोमां 'सुदेव'नां लक्षणो न होय, जेमनो मार्ग दयानो न होय, जेमना आ-

(१६८) प्रकरण ७—मिच्यास्य

चार विचारमां परस्परविरोध आवतो होय सेमने देव वरीके मानवा-पूजनाची दं बुद्धिने आवरण न सागे ? श्री बीतराग देवने स्मरवानुं कांद्र कारण होय तो ते ए ज छ के, ए वहे देवना ज्ञान-गुणनी अग्र आपणामां आवे। बाकी वो मृष्टिस्य पदारमां कोड रीते तेथो आहा मावे अल-ने भापणने मदद करे वर्ध मानश्रं ए वा

तरागनी बीतरागता जपर कलंक घडावया अर्थु अने मृष्टिनियम बिरुद्ध छ पमन, क ' नेबरासिस्ट' छोक्रो जैन धर्मना आ मिस्रातामा पीताना विवारानी मतिकाया नीर एक गुनी पुराया मळवा गाँठ बेहर आर्नद असतदेव-असत्गुरुने मानवा-पूजवाथी पण तेमना ए असत् गुणो भक्तमां प्रवेश करे एमां शी नवाइ ?

आ अज्ञानना वन्ने छेडे भूल करनारा सेंकडो जनो छे. केटलाक ज्यारे सर्व देव उपर पूज्य दृष्टि राखवा तैयार थाय छे त्यारे वीजा केटलाक वळी असत्देव-अ-सत्धर्म अने असत्गुरुने गाळो भांडवामां, निद्वामां, अपमान पहींचाडवामां ज ध-र्म माने छे-समिकतनुं लक्षण माने छे. आ-थी वधारे भयंकर मिध्यात्व वीजुं कयुं ? सम्यकत्वनां पांच लक्षणमां पहेलुं ज लक्षण 'चपशय कह्यं छे; एमां अपराधी उपर पण क्षमादृष्टि कही छे; तो पृछी अङ्गान-

(१७) प्रकरण ७--मिध्यास्व मां भूछा महकता माणीको छपर कीप करवानी सो बाद ज कयां रही ? 'पटेसा

पपर पाद '(स्रात) मारवानी पॉसीसी जैन सूत्र तो कदी स्विकारत नपी एक सौकिक दर्शत आतो अच्छो ख छासो करी शक्ते एक गाणस वजारमां

अवा माटे घेरपी जीकच्यो रस्तामां वने ५०० माणसी मध्या अने पोताना पिता पण मळ्या पिताने 'विशाकी' कडी नम

स्कार कर्या पण पेसा पांचसोने बीलकुस भोक्षाच्या महिश्र पोताने 'पितानो' नहि कड़ेवा माटे ने ५०० माणसो तेने मीना

भी-पदांच के अविवेकी कही शकशी अ

गर ध वेणे वे पांचसोने पण 'पिवासी '

कहा होत तो ते दहापण कर्युं कहेवात ?

पिता तरीकेनुं अभिधान अने सन्मान मा
त्र तेना ज माटे छे के जेणे जन्म आप्यो

होय तेमज जेओ एवा उपकारी नथी ते
ओ पण थुंकवा लायक अने 'नीच-दुष्ट'

, आदि गाळो वहे अपमान पहोंचाडवा ला
यक तो नथी ज

(३) अभिनिवेषिक मिथ्यात्व.

कोइ मनुष्य वीतराग देवनो धर्म पा-मी, सूत्र मणी अंहकारे चही जाय अने द्रव्य खातर अगर एक वखत पोतानी थ-येली मृल उघाडी न पडवा देवा खातर अगर एवा कोइ आशयथी श्री वीतराग

(३७२) मकरण ७-निध्यास्य

देवनां पचनो जस्यापे-जस्मुभ परुपणा #(१) 'तिस्तुसो' ना पाठमां अने **पीजी प्रणी** जगाए 'चेंद्र्य' खब्द खुस्छा 'झान' ना अधीमां नपरायको छता तेन'मूर्ति'मा अथमा छडने तथा 'निक्षेप'नो तक्षत्र अवक्की अर्थ छहने केटकाक मापूर पथरानी पूना पठपी अने प्रधीनों मंबी रच्या (२) युरोपियन पडीत हमन नेकोबीए

भागारांग स्वानी अंग्रजी तरज्ञमी कर्यी तेमां 'जैन साचने मांस लावं करूपे ' एवी अर्थ कर्मी आ बन्ने इष्टांतमां फरक एटसो न के,पहेसा क्षष्टांतमां नाणीवृत्ता अपराध (mientional grme) थया है अने शैना दर्शतमां गुरुग

मना अमाने अज्ञान के अंधकारमां कोइक

दिवस दिएक आवदी, यथ घोळा कहा अनवा

व्यमा बेठेसा कीकी वंगरनी आंसवास्थाने प्रचड

सर्भ्य पण श्राकरी शक्ते ?

करे ते मनुष्य 'अभिनिविषक मिध्यात्वी' समजवा. 'गोसाळो' अने 'जमाली ' आ वर्गनां सुप्रसिद्ध दृष्टांत छे.

वखतना वहेवा साथे, लगभग सर्व ध-मेनिं श्रास्तोमां घालमेल थइ छे. अने जै-न सूत्र पण कुदरतना कानुन व्हार नधी तेमां पण एमज वन्युं छे अने तेथी शुद्ध (Unmixed)सत्योजाणवा-मेळववानुं काम, जेवखतमां सूत्रो अक्षर रूपमां नहोतां मुकायां ते वखत करतां पण वधारे मुक्केल थइ पड्युं छे.

अभिनिवेषिक िष्ण्यात्वी जीवो वनी श-के त्यां सुधी तो अमुक शब्द केवाक्यनो अवलो अर्थ ज करीने पोतानो मत चलावे

(१७४) मकरण ७—मिध्यात्व

छे: पण उपां एवा वे अर्थ थवा अशक्य आय छे सां शब्द के वाक्य वभारता के पटादवानो थय छेता बरा पण अचकाता

नवी केटमाक तो कपोळकरियत शास रची तेमा में कही बरस अपरनी वारीख सली रचनार वरीके प्रराणा मन्यात पंडीत के महात्माल नाम रूसी तेने मगी नमां दाटे छे अने शिष्योंने कहे छे के

सो के पांचसो वरस सूची आ प्रय बहार

कार शो नहि पाछमधी ए पुस्तक महात्मा नी मसादी सरीके माथ आस्थायी न प

भाग है था बहुनसमारी जनो खरेखर ममावे

नी जीवनी द्रथाने पात्र छे तेमणे तेमन

नम्र भावे छ्वोध करवी अने जो शिखा-मण आपनारी छुगरीनो माळो वांदराए तोडी नारूयो एमकरवातेओ तत्पर थाय तो बहेतर छे के चुप रहेंचुं अने दुनिया तेम-नाथी फसाय नहि एटला माटे मात्र-साचा मार्गना उपदेशने प्रसराववो.

(४) संशायिक मिथ्यात्व.

"वीतरागनी परुषेछी धर्म, परुपनारने पक्षपातनु कांइ कारण न होवाथी, ठीक तो जणाय छे; पण सोळ आनी साची हशे के केम ?" एम मनपां शशय राखे अने निश्रयपर न आवे,निश्रय करवा माटे उद्यम-शील ज नथायः एवाने 'शंशियक मि-ध्यात्वी' कहेवाय छे

(१५६) प्रकरण ७-मिध्यात्व

सम्बी घणीएक बाबतो उपर विचार करीने सत्यवानी साभी करी होय एवा

जनोप कोड कोड बात समजवामां न आबे तो सञ्चमां पढी सम्मक्त्वने मधीन न करतु, पण विचारश्राक्त फोरवधी वि चारशक्तिमा असीकिक-अनुपम सचा र

हेस्री छ दुनियानी मोटी मोटी घोषो वि चारशक्ति कीरबबाना महापेत्र यह छ माटे रदतापूर्वक विचार कर्यो करवी तेमा

बंदा उतरंत्र कोपण को पूर्वकमना योगे पोतानी शक्ति लगमग नकामी म यह पढे

नो नाइ पंडीवजन पासेबी संख्यानी सु

लामा मेळपया तेम छत्रां जुलासी न थाप

तो पछी " तुमन मच अ ओणह पनेरूप"

अर्थात 'तमे जं साचा छो-तमे कहां ते सत्य छे', ए श्री ' आचारांगजी 'नुं वाक्य वोली ते नीह समजायली वावतने एम ने एम अभराइ (छाजछी) उपर मुकी देवी. ''ते समजवा जेटला क्षयोपसम नथीः ते ज्ञान मने मळवानो हजी वखत पाक्यो नधी" एम विचारबुं अने ज्यारे एकाएक तरंगथी या मुनीना वोषथी या कोइ वीजी रीते ते बातनो खुलासो मळवानो जोग होय त्यारे अभराइ उपस्था तेने नीचे उतारवी.

अरुणास्त्र अने एवां बीजां चमत्कारी वाणों के जे एक, फेंकवाथी सेंकडो यइ जतां, वगुर डळदे चालतां विमान, अभि-

(१७८) यकरण ७-निध्यात्व

मन्युनु कोठायुद्ध ध्विगेरेने आपणे आज-सुची इची कहारता इता पण जनरी दोपो, रेल्वे गाडी स्रोत बल्लन, सहस्रहरनी स्पृत्त

रचना आदि भाषणे मत्यक्ष जोइपे छीपे सारे आपणी मयमनी मूर्जामी उपर इसम् आच्या वगर रहेतुं नधी नगरनी साम अने बीजी गसीचीनां शंक्षणो (Germa) दरदो

चत्पम करे छे, ए सिद्धांत मैन सूपमां छे, पण भामना बाकटरोप साबीत कर्यो ते पहें हो तेने कोइ मार्ग्य व मानतु पृथ्वी द-हा नेती नथी अने सर्यनी बासपास फ

रती पण नहीं, ए सिद्धांत बरापयन घो पकोना मत्तवी विरुद्ध अने फैन मतने य

नुसार छवा खुद जैनोनो ज मोटो माग

शंकाशील इतो अने छे. पण छेक आधु-निक शोधकोए अवलोकन अने प्रयोगोथी ए वातने सिद्ध करी छे अने ए सिद्धांतनी तरफेणमां अंग्रेजी पुस्तको पण छपायां छे. 'पृथ्वीनो-पाणीनो ने वनावोनो कत्ती इश्वर होेबो जोइऐं प्वी मान्यता घणाखरा धर्मोनी होवायी अने ते धर्माव छंवीओनो सहवास जैनीओंने घणो होवायी खुद जैनो पण 'इश्वर करे ते खरुं,' 'राम राखे तेम रहेवुं ' विगेरे उद्गारो हालतां चाल-तां काढे छे; पण 'वाइवल' पक्कुं शीरूया पर्छी विद्या (Science) ना अभ्यासमां जोडायला यरियम विद्वानीए जक्ष 'वा-

* प्रोफेसर उहाँन वुइल्यम् ड्रेपर M D.,

(१८) मकरण ७-विध्यात इवस'ने जुडु पाडी दाससा दसीसो सहित सावीत कर्ष्य के के, पृथ्वीनी गादि होड्

शके जनकि अने सेनो कचासभवेजनहि क्षेम नेम विद्या (Science) नी अस्पास स्रीलवो जशे वेय वेय जैन सिद्धांवी वधा-रे मकाश्रमां भाषता जक्षे आयी एम सि-द बाय छे के, केन पर्यते सैनी अने द निया समभी शके एटला माटे भयम भैन सुत्रोनो अभ्यास करीने पृष्ठी विद्या (Sæmæ)नी पूरी भूरी शासाओना अभ्या स पा**ण्**ळ केटहाक जुवानी**भागोए गर्द ए** पर्णु म भावदयकीय छे श्रीवंत भागेवा-नोप आदी गोठवण करवा बखत सोपो

जोडतो नबी

(५) अनाभोग मिध्यात्व.

जेने धर्म-अधर्मनुं के जीव-अजीवनु कांइ ज भान नथी, एवा वालवत जीवो 'अ-नाभोगी मिथ्यात्वी ' छे ए वर्गमां ऐकें-द्रिय, वे इंद्रिय, ते इंद्रिय, चौरेंद्रिय, असं-क्षी पचेन्द्रिय * अने ते उपरांत अज्ञान मनुष्यो : एटलानो समावेश थाय छे (६)लोकिक देव-धर्म-गुरू गत मिथ्यात्व.

(अ) लोकमां जेने देव मनाय छे पण जेनामां 'देव'ना गुण नथी एवाने मानवा पूजवा ए 'लोकिक देवगत मिथ्यात्व' क-

^{*} जेवा के पांपट, काकाकीआ विगेरे.

(२८२) मकरण ७-मिध्यात

हेवाय पोताने समिनती जीव कहेबहाई अने कान मसगे गणपाठिनु पूनन ती पुके नहि, खानेवारे हनुमानने तेल घडावे, अं बा-भदानी-पीर-पेगवरनी मानता राखे, पूर्व 'कीकिक मिन्याख' सरेकर जैनोने नीचु जीवरावनाह के जुदा जुदा देशीयाँ गणपादे, हनुसान, महुवा, मेरुकों, गुरुष

त्रियात, बहुजान, नसुवा, नदाना, सुरा देव गोगो, आसपास, रायदेव(सातुवा), बहुचर, भवानी, हस्ता, संपार्ह्मगडान, पीर-पर्गवरनी कवरो, सेपमार्क्ष आदि कु-कदेव श्विगेरेने पर्मद्व तरीके प्रताय छै; परन्तु,भी पीतरागनो 'आसर्ज्ञध्य'नो सि-द्वित क भा सर्व देव-देवीओपी द्र रहेवा परमाने छै

(व) एवीज रीत होकिक पर्वने लाभ थवानी **लालचथी मानवा**–पाळवा ए'लौ∙ किक धर्म गत मिध्यात्व' छे. लाखा पड-वो, भाइ वीज,अक्षय तृतीया,गणेशचोथ, नागपंचमी, उभछठ, शीळीसातम, ज़-न्याप्रमी (गोकळ आठम), अक्षयनवमी (रामनवर्मा), दशेरा, भीम एकादशी, व-त्स वारस, धनतेरस, रूप चतुर्दशी (का-ळी चौदश),दीवाळी, होळी, नोरतां : वि-गेरे तिथिओमां पूजा-निवेद- ब्रह्मभोजन आदि कार्यो करवां ते ' छौकिक धर्मगत मिध्यात्वी' नां कार्यो छे. दशेरा मात्र आनंदनो मेळावडो छे-

अश्वोनी परीक्षानो अने तेमने हरीफाइमां

(१८४) प्रकरण ७--।मध्यात्व चवारी हेम राखवा माटे निर्मेकी दिय

स छे: घनवेरस घरेणांगांवां साफस्रफ करवानो अने घन संभाष्टवानो दिवस छै, होळीनो भएको माघ इनापांना तुक्छान कारक सद्वशाना उपहुत अटकावया माटे

छे. दीवाळी ए बार्पिक दिसाव करवानी **बस्तत छे**ः आम भणास्तरा तेडेवारी सूळ क्षो संसारक्यवद्वार अर्थे निर्मायकाः पण तेमां पंचा पगरना युक्तिवाज उपदेशकोए

पर्मनुनाम प्रभारी दीधु अने पर भवनां जैना घेर घोडाओ हाय तेओ दखेरा

वेषी पनपुषादि मध्ये एवं होकोने उसान्य ना दिवसे घोडदोड कर एथी काई 'छी-किक्समगत मिध्यात्वी' कहेवाय नहि. प-

ण वीजाओ ते दिवस जे 'समीपूजन' करे छे ते विगेरे कामी करे तो अलवत मि-ध्यात्व खरंज. आ न्याय घणी वावतो छ-पर लगाडी शकाय मतलव के, संसार व्य-वहारना खपयोग अर्थे जे करवं (पण तेमां धर्मबुद्धि के परभवमां तेथी लाभनी आज्ञा े बीलकुल न मानवी) तेमां मिथ्यात्व नयी परन्तु जोशीना कहेवाथी वांका ग्रहने सीधा करवा माटे जाप जपाववा, ' गोर-णीओ' जमादवी, मरनारना नामथी 'ब-समोजन' आपवं : ए सर्व चोरुखं मिध्या-त्व ज छे आहा ! जैन धर्म आ स्पर्धायय जयानामां-रळवानां साधन कठण यतां जाय छे एवा जमानामां केवो उपकारी

(१८६) मकरण ७-। सच्यात्व यह पढे सवो छे! छवा जाणी जोडने व

गति बहोरी छे छे तेथी खरेखर ' दुःसना दोस्त' न हो न जोहए ! (क) वावा-मेरागी-भाट-नाझण-छी किक गुरु,फकीर विगेरेने वानवा-पूजवा ते ''छीकिक गुरगत विध्यास्य' कोहबाय छीकिक ग्रुर एटछे के वर्ष सिवायनी

भेशो आ मवर्गा तकवान सनेपरमयमां क्र

चपकारी हो छत्ते हेनो बदको आपयो प् आपणुं कर्षच्य छे पण तने धमेनुद्धियी गुरु न मानवो तोमझ मातापितानो विनय

बीमी पावतो शिक्षवनार गुरु ते आपणी

गुरु न मानवो तोम्स मातापितानो विनय करवो, तेमनी सेवामिक करवी ए विगेरे वेमना उपकारना बदलामां करमु ए पुम नी फरज छे अने श्री जीनदेवें तो गर्भमां पण माताने रखेने दुख थाय एम समजी शरीर पण फेरव्युं नहोतुं अने पाछळथी पण मातानो अत्यंत प्रेय जोइ पोताना वि-योगथी तेमने महादुःख थशे एम मानी ते-्ओना मृत्यु मूधी संयम छेवानुं मुल्तवी रा-एयं हतं ए वधं छतां—जैन मार्ग एटले। विनय वोघे छ छनां-- मातापितानी भ-क्तिथी मने मोक्ष मळशे ' ए मान्यता जै-न मतने मान्य नथी,

(७) लोकोत्तर देव-धर्म-ग्रहगत मिध्यात्व.

(अ) लोकोत्तर एटलेलोकमां मनाता

(१८८) मकरण ७-।मध्यात्व (सौकिक)थी जूदी धरेहना स्रोकोत्तर देव

प्टले लोकमां मनाता, गुण विनाना देवधी पुदी वरेहना एवा श्री पीतराग देव एका **पीतराग देवने वदसे तेमनी मूर्तिने माने**-

पूने प 'स्रोकोचर देवगत मिथ्यास ' तमम 'गारु अमुक काप यथे तो हुं देवनी मोटी पूजा कराबीश,छत्र चढावीश विगेरे मानता राखे हे 'सोको चर देवगत मिष्यात्व' छे ते महान देवने देवताइ छ

भनी तमा नथी वो आपणा दींगला छम

नी भी गरम शोय ! बने से परमदयाञ्च-

समइष्टि मभुने मन ही मानता राखनार

मनुष्य अन मानता राजनार चढाने छेते

मारवादमां वेने बोखवा 'कहे छे

फुल: ए बन्ने पर एक सरखी दृष्टि छे.ग-रीव विचारा! निराभिग्रही,मालमिल्कत तो शुं पण एक अणु जेटली पण चीज नहि राखनारा देव पासेथी धन-पुत्र इच्छनारा केवा भूला भमे छे!

(व) प्वी ज रीते छोकोत्तर धर्म एटछे निरारंभी जैन धर्म तेने संसार बुद्धिए-स्वार्थ अर्थे उपयोगमां ले, जेमके श्री ती-र्थंकर देवनी जन्मादिक पांच कल्याणीक तिथिओ तथा अष्टमी-चत्रर्दशी-पौर्णिया-चंदनबाळाना तेलाः इसादितपस्या, ऋष्ट नि-ृवारण अर्थे करे. अने लोभ-इच्छा सहित आयंवीलनी ओळी करें ए विगेरे करनार 'लोकोत्तर धर्मगत मिथ्यात्वी' कहेवार

(१९०) मकस्म ७-मिध्यास 'स्रोकोत्तर धर्मगत भिष्पात्त ' तु ए

क नयु काम इमणां इमणां कैनोमां दास स बना खाग्युं छे ए 'बोर्द्ध पाप' घणा

ने मुखायो सवरावे छे जेनो दाग्र रगन काळी शीय ते तो सरत पकडी शकाय,प ण आ 'घोळा पापे' स्वपर्माधिमानना नामे छोकोने स्रोटा रस्ते घडानदा मौ

क्या छ इमणा बोद्ध बर्गा ' जैन समिनि' श्चर यह छे देशांश किया धाय छे ै हिं साना विचारवी पण दूर नासनार दीर्थ कर देवना नामधी जळनी आहारी सपाय छै! गण्या गणाय महि एउका समिका यना अने जपकायना जीवोनो संहार द

यामय शांतिनाधना नाम चपर याय छे!

रिकन्या वे जीवने भविष्यमां मुख आ-ग्वा माटे निर्द्धीभी देव आगळ संख्या व-गरना जीवोनो भोग अपाय छे ! तेमने सं-तान अने सांसारिक सिद्धि आपवा माटे निरारंभी प्रभुने प्रार्थवामां आवे छे ! के-वी जबरी मोहदशा! केवी जबरी परस्पर-विरोध! तीर्थंकर देव अने तेमना धर्मनं आ केवं जवरुं अपमान ! केवं कदरुपं ध-तींग! धर्माचार्यो कदी छम्ननी विधि योजी शके ज नाहे.

गणेश-गणपित आदि देवोनी पूजा आपणे छोडवी जोइए, ए रुडा हेतुथी ज कदाच आ धर्तींग दाखल थयुं होय एम आपणे स्विकारीए; तोषण 'वकहं काढतां

(१९२) प्रकरण ७-निध्यास

उंट पेसे ' प्रं करशुं ते शुं सुक्रुं काम छे! प करवां वो गरनन्यानो इस्तमीछाप क राची, भनसमुद्द समक्ष वर अने बन्या ए

क बीना तरफ नियकद्दछाछ रहेवानां व चन छे ('सप्तपटी' सांछे सेवां) अने पछा कुरूपीओं के स्तेशिओने शीव मो-जन आपर्रे: पयो कांद्र क रीवान कर्यों

होत हो तेजो न्यर्ग स्थारक विदेशतः एपी सीसारिक लाग जपरांत विष्यात्वधी व चवानी साभ पण थाव चीरस योगना योगी आपनी एकाइ

मार्र अप भयोजन नधी चणा श्वारकोए ए रुवा मळी एक विचार खपर आच्**र करा**ई

वे ---मरागास

(क) 'स्रोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व' सं-वंधी पण ए ज भमाणे समजी छेवुं. जैनम्र नी सरखो वेश राखे पण ('पंच समिति'-'त्रण गुप्ति'–'ज्ञान' आदि) गुण रहित होय अने जीनाज्ञाथी विरुद्ध परुपणा कु-रता होय, छकायनी कुटी करे-करावे, पोता अर्थे चीज वनावरावे अने खरीदावे गृहस्य (घरवारी) साथे आलापसलाप करे, 'आ काळमां शुद्ध मार्ग कहीए तो तीर्थनो उच्छेद थाय, माटे चालतं होय तेम चालवा दों' एवो उपदेश करें : आवी जातना साधुने गुरू करी याने ते 'लोको-त्तर गुरुगत मिथ्यात्त्री ' कहेवाय

दृष्टांतः—श्री ^५ उत्तराध्ययन सह

(१९३) प्रकरण ७—विध्यास

अध्ययन २३ मां केशी स्थामी-गौत्तम

स्वामीना संवादना अधिकारमां कर्षे छे के ¹¹ पहेमा तथा छेरछा तीर्धकरना साम्रजी-ने 'मानोपेत' कत्या यक ज वर्णना अर्थात

सफोद बच्च करूपे " लेमन श्री "आचारां-गमी " मा बीदवा अध्ययनना वीजा छ

रेथे स्पष्ट कम से के:-'णो घोएका जो रहरना. णो घोयरत्ताई वस्पाइ घोरळा अर्थात्, साधुष 'बल्ल घोवां नाइ,श्गवां नहि रंग्याभाया वस पहेरवां नाहै': छता जेमी ग्नास रंगेसां न बस पहेरे छ अने देग छतां बबी पीताने जैनमुनी तरीके कहाबे छे,ए-टलेगी ज निह मंत्रीय पामता सफेद पस अमृक संबाद वहीळाइन्द्रे मान (माप)

नतार्थं के ते मनाणे

धरनार साधुने कुसाधु कहें छे, तेमनी नि॰ दा करे छे, हरेक रीते तेमने रंजाडवामां आनंद माने छे एवाने गुरू करी मानवा ते 'लोकोत्तर गुरूगत मिथ्यात्व ' छे. वी॰ तराग—राग-रंग वगरना तेनां अनुया-यी साधुने वळी राग-रंग क्या ?

वळी केटलाक जैन साधुना नामनी 'मानता ' राखवामां आवे छें, पाटे हापे-या मूकाय छे; ए,एक जबर्ह ' लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व' छे. आवी मानता स्वि-कारनारा अने मानतानो उपदेश करनारा जैन साधुओं मात्र वेशधारी छे तेओं ते रुपिया ज्ञान खाते वापरे छे अगर वपरावे छे एवं वहानं वनावे छे;पण ज्यां ए रस्तो ज तद्दन खोटो त्यां पछी तेना उपयोगनी (१९१) प्रकरण ७-मिच्यात

पात न क्यां रही ? गणिकानो भभो करी रळेसो पैसो वसामोजनमां खरभी ए रीते पाप पोबानी आधा राखनारी पूर्व खी

षेषु ए बराई थे (८)कुप्रावचानिक देव वर्म-ग्ररुगत

मिथ्यात्व शौकिक देव अने कुमारचनीक देवमाँ राजारत ए के के सौकिक देवने मां-

वकावत ए छे के लौकिक देवने सां-सारिक मुखनी आधाए मनाय छे-पूजाय छै। यने कुपावचनीक देवने गोसनी साधा

ए मनाय छे-पूजाय छे हरि, हर, ब्रह्मा, विष्णु, महेंश, राम

चंद्र, वालाजी, विगेरे देवों के जेना गुण-कथनमां स्त्री-मोह-क्रोध-विगेरे अवल दर-जो भोगवे छे तेओने जे लोको मानेछे तेमना-'मां'कुपावचानेक देवगत मिथ्यात्व'समजुद्गं, अलवत ते माननाराओं तो कीई आली-कना सुख अर्थे तेमने मानता नथीं पण मोल अर्थे माने छे; प्रंतु तेओनी पसंदगी खोटी छ ते देवो पोते ज मोक्ष पाम्या न-थी तो मोक्ष वीजाने पमाडवा केवी रीते समर्थ होय ?

तेमज होम, जाम, यज्ञ, सूर्यने वली-दान, पूजा, दीशा पींखवी विगेरे जे कि-याओ धर्म बुद्धिए करे छे ते पण "क्रुमा-वचिनक धर्मगत मिथ्यात्वः समजवं

(१९८) प्रकरण ७--निश्यास अने परी ज रीते सन्यासी, जोगी,इ घा, परमहश, रामक्षेत्री, स्वामी नागयण ना साधु,दादुपंची, पाद्री, जगम, श्रवी

त, रामाञ्चवावी, माजुभदः आदिने घम गुद्ध करी मानदा से ' कुपावचनिक गुरू गव ' भिष्यात्व समजब् 🛩 'व्होकिक मिध्यात्व' आरोकना 🛚

म भर्षे भूषा भगवानं काम छ-भने 'क्र-मारचनिक मिथ्यास्त्र' ए नोश माटे भूमा मपपार्त काम छ

(९) पीतरांगे जे वर्ष ते करतां ओछ

पहुँपे ते पिष्ट्यारथ नव्यु क्रेयके, श्री बीतरागे पक भीषना असेल्यात ब्रहेश क्या एवा 'उ पराइग्रन'मां मान जिल्हानरे अधिरार पा

(१९९) ल्यो छे, जेमांना तीसगुप्त आचार्यना म-तान्यायीओए एक ज चर्मपदेशने जीव मान्यो-परुष्यो;ते'ओछी परुपणा' कहेवाय.

(१०) वीतरागे कइयुं ते करतां अधिक परुपे ते दशमुं 'अधिक परुपणा मिथ्यात्व'. भगवंते श्री 'ठाणांगसूत' मां जीव अजीव एम वे रासी परुषी छे छतां श्री 'उववाइ-स्नुत्र'मांना ७ निन्हवमांना रोहगुप्ते ' नो-जीव−नोअजीव ' ए नामनी त्रीजी ़्रासी परुषी ते 'अधिक परुषणा' कहेवाय. (११) वीतरागे कह्युं तेथीविपरीत (वि

रुद्ध)परुपत्तुं ते अमीआरमुं विपरीत परुप-णा मिथ्यात्व' दृष्टांत:-आपाढाचार्य दे-वैलाक जवा छतां शिष्यो उपरना मोहने

(२०) प्रवरण ७-मिध्यात्व सीपे पोताना युत शरीरमां मवेश करीने शिप्योने अभ्यास करावशे जारी राख्यो काम संपूर्ण यया पछी वेओ श्रिप्योने प्राय-

श्रीत आपी पोवाना ठेकाणे गया त्यारधी ते शिष्यो ब्हेम लाइ गया क सर्व मुनीओना

धरीरमां देव व्यानीने रहेता हवी माटे वे-भोए कोइ पण मुनीने बांदवा-नमन्त्र-वि-नय करवानुं मांडी वास्तु अने बीजामाने पण पुत्री अ परुपणा करी (१२) नीवने अमीव सर्वहे ते मिच्यास्व

(११) भगीवने जीव सर्दरे ते मिध्यात्व (१४)इयाभमन अपर्ग सुईहे ते निष्यात्य

(१५) दिसायमंत्रे वर्ष सद्दे ते पिष्पास्य (१६) - ७गण सरित पनता साधने में ज्ञानथी अथवा मताग्रहीपणाथीअसाधु कहे ते मिथ्यात्व.

्(१७)२७ ग्रुणरहित साधु होय तेने साधु कहे ते मिथ्यात्व

(१८) कर्म खपाववानो ने मार्ग, (ज्ञान दर्शन-चारित्र-तप रुपा) तेने उन्मार्ग अ-थवा कष्ट कहे ते मिध्यात्व.

(१९) इन्मार्गने मार्ग कहे ते .मिथ्यात्यः

(२०) अष्टकर्मथी मुकाणा एवा श्री ऋ-षभदेव,श्री रामचंद्रजी आदि पाछा संसा-रमां अवतार् छे छे,एचु सर्दहे ते मिथ्यात्व.

(२१)कर्मथी नथी मुकाणा एवा ब्रह्मा-विष्णु-महेश आदि:तेने मुक्ति ग्या सर्दहे ते मिथ्यात्व

(२२) भकरण ७-मिध्यात्व (२२) 'अविनय मिध्यात्व' साधु, सा

कुवधीपणुं करे-निंदा करे-छीद्र नोयां क रे से ('कुलनालुमा ' साधनी पेटे) (२३) ' आसावना मिष्यास्व ' अरिहत सिद्ध-भाषाय-उपाध्याय-माधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका-सम्रक्तिती देव देवी-स-मनी बांचणी देनार इसादि वर्गीजीवनी ३३ पैकी काइ पण मकारथी आसातना मदेर ते (२४) 'मफिया मिध्यास्त्र' शप्क नेदा

म्तीनी माफक कहे के,"आत्मा सी परमा-. स्मा ' माटे किया करवानी गरुर नथी '',

एपं करे ते

ध्वी, श्रापक शाविकानी अधिनय करे-

(२५).' अज्ञान मिथ्यात्व.' उंधुं जाणे— देखे—परुपे अने कहे के, " ज्ञान भणे शुं थाय? जे जाणे ते ताणे; अजाणने पाप न लागे * " [पण समजे नाह के अजाणे झेर खाय ते पण मरे छे जाणीने ज्ञेर खा-नारो, पण मरे छे खरो तथापि जो ते व-खतसर पस्ताय अने दवा करे तो, वचवा संभव छे.]

[ं] क्र, कायदो पण अज्ञानतानु बहानुं स्विका-रतो नया

(२१) मकरण ८-श्रीताना मकार मोवी नाहि तो भोवीनी नक्कल द्वरम हो

प्रकटे छे प्रतिम रीते चीद अकारना भोतामी नामना एक म सात जुदा जुदा अवर्षी

मगमे छे पमा काइ आक्षर्य यथा नेई न बी;तेमन तेपी पूळ बात कांइ खुढी यती नवी (१) विकल्पन बत्।-पच्युर जगर,भा रेमा बारे गणाते पुटकर सवर्तक नेम स

सम् पारा सात अहोराधि वहें तो प्रम् पच्चर पसके निष्ट ए रहति केन्स्राक औ सामोने उत्तमोत्तम गुरु मदला करों तेओं बीलकरू प्रसार नहीं (क्यारे काली

बीलकुल बृक्षता नथी (क्यारे काली भूगि समान केल्लाक जीवो बोडा बरसा-र अथवा उपदेशन पण श्रद्ध श्रद्ध करी

(२०७) (२) कुंभ वत् :-कोइ कुंभ अथवा घ-डो तळेथी काणो, कोइ पडखेथी काणो, कोइ कांठा राहित अने कोइ संपूर्ण होय छे. तळेथी काणो घडो ज्यां सूधी आडो हाथ राखीए अगर जमीन साथे वरावर चोटेलो राखीए त्यां सूधी तेमां पाणी रही शके छे, अने आधार दूर थतां तरत ज पाणी वही जाय छे तेमज केटलाक श्रो-तामां, उपदेशक पासे होय सां सुधी असर रहे छे पण उपदेशक जृदा पहया के तेनी साथे ज घोवाइ जाय छे.पडखे काणा घडा-मां योईं क पाणी रहे छे अने कांटा रही-त घडामां तेथी वधारे पाणी रही शके छे. परन्तु पुरेपुरुं जळ तो अखंड घंडामांजरही

प्रकरण ८ में

ची 🅇 तराग नोंच ' अथवा निप्पन्न 🏖 💥 पात सस्योनं कषन इपदेश-को मारफत अने छत्तीया तथा छापलानां

मारफत संख्याबप मनुष्यो पासे रज्ज बबा छतां दुनियानी साटली मोटी माग इनी सक्रान केम छे भने ए 'शीतराम नेंभि'ना ज संग्रमा र्लेचालेंची केम जाकी रही छे,

काह सर्वज्ञानी वेपनी एप्टि बहार नहतो मभ पत्पम यथा पहलां ज तेओशीय श्री

ए एक स्वाभाविक मध्य के तेयम ए मध

'नंदीसूत्र'मां तेनो खुलासो करी राख्यो छे.

ए सूत्रमां एक गाथा छे, जेमां चौद पकारना श्रोता गणाच्या छे आ गाथा एम सूचवे छे के, विविध स्वभावना मा-णीओ पोतानां कृतकर्म अनुसार मळेली बुद्धिना मतापे एक ज वस्तुने जूदा जृदा रुपमां जुए छे अने समजे छे. स्वाती न-क्षत्रमां पडेलुं वरसादनुं विंदु अमुक छीप-मां पडवाथी महामृछी मोतीनुं रूप धारण करे छे, ज्यारे तेज वरसादनां वीजां टी-पा समुद्रमां पडी खारु पाणी वनी जाय छे;वर्ळी ते ज वरसाद कादवमां पडी का-दवमय पण वनी जाय छे; तेमज वळी ते ज वरसादनां टोपां वनस्पति उपर पडी

(२ १) मक्तरण ८-ओताना प्रकार मोती नाहि तो भोतीनी नक्कछ द्वरूप रूप

पकरे छे प्रतीम रीते चीद मकारना भोताओं ना बनमां एक म बात जुदा जुदा मर्थमां मगम छे पूर्वा कोई मासर्थ धवा नेतुं न

बी,तेमन तेथी पूरू बात कांड सूती यती नथी (१) फिछ-धन बतः-पच्चार उपर,मा-रेमां बारे गणाती 'पुष्कर सबर्वक'मेम मु सक्त बारा मात बहोराधि पडे ती पण

रात नाता अहोराधि पढ़े तो पण पष्पर पल्ले नहिं ए स्टिति केटलाल को वाभीने उपयोक्तम गुरु मल्डा छवां देशों बील्फ्रिस बुहता नथीं (ज्यारे काली मुक्ति समान केन्साल जीवो थोदा परसान र भपमा चपटेशने एण हाट प्रदण करी

रे छे हे

(२) कुंभ वत् :-कोइ कुंभ अथवा घ-डो तळेथी काणो, कोइ पडखेथी काणो, कोइ कांठा राहित अने कोइ संपूर्ण होय छे तळेथी काणो घडो ज्यां सुधी आडो हाथ राखीए अनर जमीन साथे वरावर चोटेलो राखीए त्यां सधी तेमां पाणी रही शके छै, अने आधार दूर यतां तरत ज पाणी वही जाय छे तेमज केटलाक श्रो-तामां, उपदेशक पासे होय सां सुधी असर रहे छे पण उपदेशक जुदा पहया केतेनी साथे ज घोवाइ जाय छे.पडखे काणा घडा-मां थोड़ंक पाणी रहे छे अने कांटा रही-त घडामां तेथी वधारे पाणी रही शके छे परन्तु पुरेपुरं जळ तो अखंड घडामांजरही

(२०८) प्रकरण ८—श्रोताना प्रकार शके छे तेमन बळी ते जळ अयाज पण करतुं नथी, छसकातुं पण नयी प्रशि

रीते केटलाफ योवा पूर्ण उपदेश प्रदण करे छे। संपूर्ण घडानी अंदरना सर्व पुट्-

गळो सेम जळपी शितळ बने छे तेम तेवा श्रोताना अंतरमां रगेरणे वपदेश लगी श्राप छे जने तेजो छलकाइ बता नपी। पांपळ करता नबी। परन्तु बीनानी तुपा सक्ति होनपळ करे छे जने श्रान्ति आपेछे सकी पण बहाना चणा मकार छे की

बाज पण घडाना घणा प्रकार छ का" इ पड़ेन अंटरपी धुनासीत (धुर्गपीदार) इस्पर्या किंग्से अध्यक्ष बनेलो होच हो वेनी बदरजु अळ पण धुर्गभीदार पनशे; अने जो अंदरधी दुर्गीय पदार्थथी सींपे

लो के बनेको इने तो जलपण तहुन प्यानु

वळी, काचो कुंभ इशे तो सहज फांसी प-इशे अथीत् फुटी जशे अने परिपक्व इशेतो सारो चालशे ए ज प्रमाणे श्रोताना स्वन्नाव मंबंधमा समज्बु (३) चारणी वत्ः—चारणीमां पाणी

नाखीए तो तेमाना सख्यावंध छोद्रो वाटे ते नीकळी जाय छे तेमज मोह, मत्सर, प्र-माद छादि छाद्रो वाळा श्रोता भोना हृदयमा रेडातो सर्व उपटेश ए छोद्रो वाटे तन्क्षण वही जाय छे

(४) सुग्रहीना माळा वत्:-विची-सण मकारना घर अथवा माळा वाधवा माटे मख्यात थयेळी सुग्रही अथवा सुघरीना मा-ळामां घोविगेरे गाळो शकायछे; अथीत् चोख्खु

ळामां घोविगरे गाळो शकायछे; अथोत् चोरू घो तेमायो वही जाय छे अने तृण, काष्ट् ३१० प्रकरण ८-श्रोताना प्रकार कचरो शादि चानाने तेपनडा राखे छे ते

भीक रोते प्या पण श्रोताओं छे के लेगी उपरेचनो चच्च याग बही जबा दे छे अने तेनो क्यरों ज श्रहण करें छे (५) हम बन्द — सुश्रहाना माळायाँ उलटा प्रकारनु काम हम करें छे मिश्र करेंकां दण-पाणामांथी दुष का ते खुई पाहा पीपछे

तमस चनम स्रोताक्षी चपदेशकना सम्दोमां रहेमुं तत्व संवया साथे स पातानुं कर्नेच्य छ एम मान छ (६) महिषी घत्र-मिश्री एटसे मेंस रुपारे पाणा पाता तळावमां साथ छ सरि

पहेंचां सी मस्तक सींगडां बाने पग बडे पाणी होळी मास्त्रे छ, पछी मळमून कर छे स्यार पछी ते म जळ पीप छे पोते मिर्मळ पाणी पी शके निह्न अने वीजाने पीवाना पाणीने पण निर्मळ रहेवा दे नहि एवीज रीते केटलाक जीवो खरा उपदेशने डोळी नाखे छे अने ते डोळेलु पोते ग्रहण करे छे अने बोजाने पण तेमज करवा कहे छे. घ-णीए मस्तानी भेंसोंए सूत्रोना शुद्ध जळने प्रथो रुपी सींगढांथी डोळी कादवमीश्र कर्युछे. (७) वकरी वत्ः—भेंसथी उलटा स्व-भावनी वकरी कीनारे उभी उभी निर्मळ जळ पीए छे तेमज ते वीजाने पीवाना पा-णीने डोळी पण नाखती नथी मस्तानी भें-सो तोफानने लीने वणा जनोनं लक्ष खेंचे अने आ निरपराधी, गरीवडी, सीधे रस्ते जनारी वकरीओ काइ धामधूम न करती हो-

वाथी जनसमाजनी दृष्टि खेंची शके

११२ प्रकरण ८-श्रोतामा प्रकार

एमां कार भागप जेसु नथी सज्जना ता

याद अल्ले पीपानी अर्थ करनारी पकरी

मानी प्रश्नसा प्रश्नी वधी करेख क 'श्रक्स वडी के मेंन' प्यी एक कल्लाणी यह पडी छ (८) सक्षक यन् - मसस्य अथवा मसी - शुवा जना अनेर उपर वेसे छेतेनुं उपीर

पीए छे, तेम केटसाक घोताओ एपदसक नज रखना पाढेछे भने नुकशान परींचाढेणे अथवा मशक एउसे पानी भरवानी

चामडानी मसग तेमां वयन अगर पाणी भरवायी डमडास शाय छ पण उसी पडवा शीतनां पडच्यां यसी जाय छे तेमन फेट

या तना पड़न्ना बसा आयुक्त वस्त्र कट मारु भाराओं ज्ञानशी कुमी जाय छ; पण जरा नचुं खाबायी *खाखीखम यह जाय* छे (९) जळो वत्ः—जळो जेना श-रीर उपर चोटे छे तेनं मुडदाल लोही पी जाय छे अने तेथी लोहीनो विकार दूर थाय छे तेमज, केटलाक श्रोताओ प्रथम तो उप-देशकने शंकाओ पूछीने घणी तकलीफ आपे छे खरा, परन्तु आखरे ज्ञाननो सदुप-योग करी तकलीफने सफल करे छे

(१०) विहास वत्ः—वीसाहीनो
स्वभाव छे के, सींका उपर दूधनुं भाजन होय
तो ते जाजनने जोंय उपर नाखी दूध होळीने पछी ते चाटे छे; अर्थात् ते पूरुं दूध पी
शकती नथी पण अंश ज मात्र तेना जागमां
आवे छे तेम केटलाक श्रोताओ उपदेशक
पासेथी सीधी रौतं पूरुं ज्ञान मेळवे नहि, कारण के पूछवा जवायी पोतानुं मान ओछुं

२१२ प्रकरण ८-भोताना प्रकार एमा कांइ सामय सेसु नथी सज्जना ता

यद जड़ने पीबानो सप करनारी बकरी आनी प्रथमा एउड़ी बगी करेड़ क 'श्रक्स बड़ी के मेंग' एवी एक कहाणी बहु पढ़ी छ (८) मखक बहु -मसरग अथवा ससी

-जुना जना जरार उपर वेसे छेतेजु क्यीर पीए छे, तेम केटलाक खोवाओ उपदेशक नज इसका पाडे छे अने नुकसान पडीं पाटे छे जथना समक एटसे पाणी अरवानी

पानहानी मसग सेमा प्यन अगर पाणी भरवायी हमडोस धाय छे पण वधी पहचा-

धी तनां पहलां बसी जाय छे तेमज कट सार भोताओं ज्ञानधी फुसी जाय छ, पण मरा सर्चु सावाधी साझीसम यह माय छे (९) जलो वत्ः—जलो जेना श-रीर उपर चोटे छे तेनं मुडदाल लोही पी जाय छे अने तेथी लोहीनो विकार दूर थाय छे तेमज, केटलाक श्रोताओ पथम तो उप-देशकने शंकाओ पूछीने घणी तकलीफ आपे छे खरा, परन्तु आखरे ज्ञाननो सदुप-योग करी तकलीफने सफल करे छे

(१०) विदाल वत्ः—वीलाढीनो स्वभाव छे के, सींका उपर दूधनुं भाजन होय तो ते जाजनने जोंय उपर नाखी दूध ढोळीने पछी ते चाटे छे; अर्थात् ते पूरुं दूध पी शकती नथी पण अंश ज मात्र तेना जागमां आवे छे. तेम केटलाक श्रोताओ उपदेशक पासेथी सीधी रोतं पूरुं ज्ञान मेळवे नहि, कारण के पूछवा जवाथी पोतानुं मान ओछुं

प्रकरण ८-प्रांताना प्रकार थाय, पण बोजान अपाता उपदेशमांची किं चित् ग्रहण कर अन एवा धुटणीमा ज्ञानधी

मानी पन

(११) सेमा वत् — सेमी मधना

नोळीओ प्रथम माताने माबी पछी बगळो महरमी रमीने दूच पचाव अने फरीबी पावे

अने पचाने; ए मगाण रुचतु रुचतुं द्व पीए यने पुष्ट याय ते एट से सूची के अवरा सर्भन

पण मान गाळ तेम अ, कटलाक मनुष्यो द्य कि मुजब योडे योड अपदेश अवल करी ते

चपर मनन मने मिदिष्यासननी कसरत से

अने पछी आगळ अपदेश अवण करे एम वि

शेप ने विश्लेष बान पाका पाये मेळवता साय

अन छेवट ह्यानमां एटका मनवृत थाय के मिष्यास्था मुनंगोर्नु मान मकावे

(१२) गो वत्:—एक राजाए कोइ त्राह्मण कुटुम्बने एक गाय दोइ पीवा आपी. परन्तु ते ब्राह्मण आळम्र अने वेटरकार होवाथी ते गायनी सार संभाळ तेणे अगर तेना कुटुवे राखी नहि.कुटुम्बनो दरेक मा-णस एम समजतो के, दुध नीकल्झे ते आ-खुं घर पीशे तो मारे तेने चारो नीरवो वि-गेरे श्रम ज्ञा माटे उठाववो जोइए? एम कोइए पोताना माथे जोखम राख्युं नहि. छेवटे ए गाय प्राणरहीत थइ अत्रे राजा ए तीर्थकर तथा आचार्ये; गाय ते साधु तथा शास्रो, अने ब्राह्मण कुटुम्ब ते जनमंहळ. भ-च्य प्राणीओना हितार्थे,ज्ञानरुपीद्ध आप-नारी गाय अथवा साधुओं अने सूत्रो मळवा छता,तेमनो वयावध-विनय जाक्ति वरावर न २**१६** प्रकरण ८-श्रोताना प्रकार यवायी हाननी आवक पण कमी यह जायछ

(१०) जेरी वत् :--- अरीवाळो मा णस पोताना यासीकना हुकम मुजब हडेरा पनाडे छ अर्थात् यासीकनो हुकम मेरी

हारा जगतने आहेर करे छे, तैव केटखाक भोतामा जपदेशकनो बोध श्रवण करीने पछी ते ज समाणे बीमाने बोधे छे (१४) आहीर बत् — भरबाह गा-पनी सोबा प्रतिक स्थापित करें छ-जबराहे छे ने बराहे हैं कि से स्थापित करें छ-जबराहे छे ने बराहे हैं कि से से स्थापित कर करते हैं त

छे अने पदकामां तने गाप दूष आपे छे, के ले बढे वे हृष्पुष्ट बाय छ तबी ल रीते के दकाद जीवाओं, ज्ञान आपनारा स्थागी वधा ससारी चपदेशकों तैमन पुस्तकोनों

टलारू श्रोताओं, ज्ञान आपनारा स्पागी तथा ससारी चपदेशको तेमम पुस्तकोनो विनय करे छे पृष्टक्के के, स्थागी उप देशकने साहारादि सामे तथा विनय भक्ति करे; संसारी उपदेशकने मानपान तथा जो-इती मदद आपे अने जे पुस्तकथी पोताने ज्ञान मळे ते पुस्तकनो बहोळो प्रसार करे

आ प्रमाणे पोते उपदेशकनो विनय करे अने वदलामा तेमनी पासेथी ज्ञान मेळवी आत्मीक पौष्टि पामे

** भरवाडनी स्थिति सर्वे करतां सुली गणाय छे कविवर शेक्सापियर ए स्थितिने घणा ज चळकता रंगमां चीतरे छे अने स्वर्गनी प्रतिज्ञाया माने छे

मकरण ९ मु

सम्यक्खनी स्थिरता



जानो पळचो पुक्केस से अने मळवा पश्ची साचवती प्रम मुक्तेस्ट छ समकित पाम्नुं दुर्छम छे अने पास्या पणी

सापनी रालन पण वर्तन छ (१) कोइ जीव समकित पास्या पछी कर्म पदययी शकादि कारणधी पढे, ते प डवानी स्थितिमां बच्चे (छेक जमीन पर प रवां परेखां)नी स्थितिः तेने "सास्वादान"

कारे छे पूर्व समिकत एक भवमां उत्कृष्ट

^{पाच बार} फरकी मिथ्यात्वमां पडे ए समकित वाळो जीव अर्थ पुद्गळ परिभ्नमण करेपण अंते तो मोक्ष नगर पहोंचे. (२) अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, अंटोन तथा समिकत मोइनीय, मिथ्यात्व भोहनीय अने मिश्र मोहनीयः ए सातने समा-विवा कमर वाथे एने 'उपशम समकित'

कहे छे. एवं समिकत पाच वार फरशे; अर्ध प्द्गळ परिभ्रमण करात्री अते तो मोक्ष न-गर पहोंचाहे (३) उपरनी ७ प्रकृतिमांनी केटली-क मकृतिने बळेला काष्ट्रना कोलसा सरखी करवाथी "क्योपसम समकित" प-माय छे. ते समिकत एक भवमां उत्कृष्ट अ-संख्य अन् आवे. बीजा अने त्रीजा

२२० प्रकरण ९--सम्बन्धनी स्थिरता समिकत भावीने नाय छे अने ए समिक

माळा भीव आकरे गांश पामे छ (४) चपरनी ७ मकृतिन मूळगाँव न दर्ग करे देने ''क्षायक' समिकतं करे छे घोषा-पांचमा नवरना समकित

माळा जीवने एक प्रवर्ग एक ज बार समकित आवे छ अने तेकायम रहे छे अ माणी चरकुष्ट त्रीने सबे सोक्ष जाय छे (५) 'सायक समकित' नी माप्ति गाँ

पुरुपार्य करे तेना आगका समये ने देवा वे "वेदक समकित" वेनी स्थिवि ए

समयनी छे

समकित रस्तमी जाळवणी माटे बाना। पुरुष १० मकारनी सोबत वर्जधी जोइदः (१) 'पासथ्या' एटले आचारमां हीला एवा पुरूपनी सोवत न करवी

(२) "उसन्ना" एटले मात्र क्रियानो अंहिंबर राखनारा अने ज्ञान-दर्शनना अ-जाण: एवा पुरुषनी सोवत न करवी

् (३) ''कुशील'' एटले जंनो आचार युद्ध नथी तेवा पुरुषनी सोवत न करवी

(४) "संसत्ता" एटले जे साधु, गृहस्थ साथे घणो परिचय राखतो होय तेनी सो-वत न करवी

(५) ''अपछटा'' अथवा स्वच्छंदी होकोनी सोवत वर्जवो.

(६) 'निन्हव' एटले सात नय पैकी एक ज नयने वळगी रही पक्षग्राही वने (जमाळी माफक) तेवा नरनी सोवत न करवी. २२२ प्रकरण ९ सम्प्रकलनी स्थिरता (७) 'कढाग्रही' पटल स्वमति अनु सार सुप्रनी अथ करी कोइन कहे<u>ष</u> न प

रीते पण सम्मां क्लेश करावे तैवा नरनी सीवत न करवी (D) 'नितिया' एटकें के साधुका रण विना नित्य एक स्थाने रहेतेनी सोवत न करवी

मानवं एवं पृष्ठ इ पकडी राह्ये अने बीमा

(९) 'भन्यवार्गा' कैनवी अन्य व तन माननारा साथे विश्वेष सहवान न करवे (१०) 'बगणगा' एटके वर्ध पामीन वर्मी गयेला अर्थात् धर्मक्षप्ट वयसा एपा

वमी गयेला अर्थात् मर्ग्रञ्जष्ट वयसा एपा भने 'मर्भसकर' पुरुषोती स्रोबत न करणी थियल रस्तन साचवनार 'नव बाढ' माफक, 'समकिव' रस्तनु रक्षण करनार था 'दश किल्ला' समजवा. ए किल्ला ज्यां
सूधी अणिशुद्ध इशे त्यां सूधी कोइनी मगदूर नथी के समिकती प्राणीना समिकत
रतने लेश मात्र इजा करी शके

मोक्ष नगरीए छइ जती सम्यक्त्वनी म्हके जतां नय-निक्षेपनी भूलभूलामणीमां जो कोइ माणस छंचाह जाय तो तेणे मात्र -'दया' नामना भूव तारा तरफ दृष्टिटेकववी अने ए ढीशा तरफ ज चाल्यां करचुं एथी वेहेलो मोहो पण ते इच्छित स्थळे (to the goal) पहोंचिशे. पण जो तेटली दृष्टि पण न राखे तो धूताराओं तेने आडा रस्ते दोरी तेनुं सर्वस्व ळूटी छइ गतपाण करी तेने जं-गलना गीध अने कागडानो भक्ष वनावको

॥ संपूर्ण ॥

प्राचित्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र स्वयं हो।

(१) गुजराती संप्रेजी के पास्त्री टार पर्मी दरकोर पुस्तक खपावतु होय तेसी समारी मारफाठ छपावता तो सन्त्री हाज सभी मनदर काम करी भागवामां सावते (जैन पुस्तको खायवामाटे गरम पाणी ते

यार बाबीने वपराय छे)

(२) कोह एक पुस्तक अगर मास्त्रनो जैन तेमां बहोस्से कटाव कराववा इच्छा होय तेमें "जैन दिनेवहु" पत्रमां जाहेर खदर छ पाववी साव बजाज थोडा (पत्रहारा पूछी) (१) जैन तेमज इरकोर वर्मनां पुस्तको केलवणी आतामे अगाज पुस्तको वार्लामां पूरतको विगेरे तमाम अथकारोवां पुस्तको अमारी ऑफिस उपर ऑस्कर माकस्वारी

वाकीवे वी थी श्वामा करवामां भाष्यो पत्रक्यबहारः—मेनअर "सैनहितेक्षु' सारंगपुर वळीभानी याम—समदाबाव

खरीदों ते पहेलां खात्री करजो!

कारण क, छोपे छीपे मोती नथी पाकतां. सरोबरे सरोबरे कमळ नथी नीपजतां घेर घेर सीता नथी होती सर्व पत्रोमां कांइ 'जैनहितेच्छुं" मासिकनी ल्हेजत नथी होती तेनां कारण खुझां छे — (१) लखाण माटे कुद्रती शोख जोइए (२) वहोळुं चांचन अने अनुमूव जोइए (३) लखाण पाछळ जीदगी अपण करवी जोइए तो ज उत्तम लखाण यह शके छे "जैन हितेच्छु" मासिकमां धर्म, व्यवहार, तत्वज्ञान अने सुधारा सर्वधी जे जे लेखो छपाय छे तेने विद्वाना पक्के अवाजे वखाणे छे, तथा गुजरात∽कच्छ−काठियादाड−मार-वाड-पंजाय-दक्षिण-रगुन अने आफ्रिका स्थीना जैनो ज नहि पण केटलाक पारसी अने अन्य वर्गना गृहस्थो पण तेना ब्राहक थया छे; तेनुं कारण शोधबु होय तो तमे

पोते ज ते मासिक वांची खाशी करो

सवा रुपियो शुं शु काम करे छे ? (१) 'जैन हितेच्छु' मासिक पनगुं क्या जम क. १) तथा पोष्ट कर्ष क. ०। मर्म क. १। वर मानीकांक्षर साथे पोशाई माम क. १। वर मानीकांक्षर साथे पोशाई माम क. १। वर्ष मानेकांक्षर साथे पोशाई माम क. १। वर्ष महि वर्ण १६ प्रस्तुं साथ क.

मनहर छापवार्जु-रचीर्जु-सक्याबंध उपयो मी निययोगी मरपूर मासिक मह छू

(र) महिने १६ धन कोह बकते वधारे पानां गधानां बरसे खारामा ४५०-६०० पानां मळ्या वधरोत बडी कराम मेही एवा मळ के बाम साक माटे ४ समुख्य मेटा ठराघों छे जमी घणा माडा प्राहरू यहा तमने (मता यह रहेशे ती) नेह मळी पाको नहि (१) माहिष्क कमें भेटी मारफन माह कमें पोताने बार्स क्यों स्वयद्वाराई रहे मान

मध छ भने सम तथा झातिना सहा तर याम छ कही माधी मोदा छान पीनी कमा है इन्हें मनीगाहर साथे माम अस्त्री माकस्रो

खुश खबर ! खुश खबर !!? ''जैनहितेच्छ" अठवा डिक पत्र. थोडा वखतमां शरू क रवानु छे तेमां जैन शा-स्त, जैन सुधारा, जैन कथाओ, उपरांत देश तथा चेपारने लगती वावतो पण गक्षे मूल्य वरसे रु ३) पोष्टेज माफ ब्राहकोनां नाम नोंघवा मांड्यां छे ताकादे नाम नोंधावो अगाउथो ग्राहक थनारने 'जैनतत्व-सत्रह' नामनु र १) नी कीमतन दळढार पुस्तक भेट मळशे ठेकाण —'जैनहितेच्छ' ऑफिस क्रमा 'जैनहितेच्छू' मासिक तथा अठ वाडिक यने साथे रु ३॥ मां मळशे पोष्ट्रमाफ

खश खबर ! बैम हितेष्ट मासिक पत्रमें भव तो कि तनक सेस गुजरातामें और कितनेक शा जीमें छप कात है। इस किय भाप को क भी इसका प्राहक वन सकता थी उमेर है कि पंछाब माखवा मारवाड मादि देशके मत्येक सुक्ष जैन भार रस मासिकके प्राहक पनके बच्चेशन देंगे ५०० शहक हो आ नेसे इस सारा मासिक शास्त्रीमें अपनेकी मो कोशीश करेंगे. की मेनेकर-"जैन हित्रकृ" - अहमदावाद

मारवाक पंछाच कीर वृद्धियमें जैन वितेषस् प्रका जैन वितेषस् प्रको भाइक बनाने की प्रकार बहता है कमीराम मच्छा मीसेगा कमीराम संकार मीसेगा

मारवादी और पशाबी कैन बाहुओं के सिव

्रीनहितेच्छु' ऑफिस तरफथी रचायलां पुस्तको

तैयार छे!

(१) सती दमयंती अने तेनी वातमांथी हेवानी शिखामणो:—(आवृत्ति वीजी) आवु उपदेशी अने रसीक पुस्तक बीज़ं भाग्ये ज छपायुं हशे खुद सरकारी केळवणी खाताः ना उपरी अधिकारी साहेवे तेमज गायक-वाड सरकारे तेने मंजुर कर्यु छे शब्द झान, स्मरण शक्ति तेमज विचार शक्ति खीले ^एवी तेमां गोठवण छे दमयंतीनी सुद्र छवी जर्मन कारीगर पासे बनावेली तेमां मुकी छे. किमत ०-६-०; पाकु पुटुं ०-८-०.

(२) मधुमक्षिका —एमां ससार व्यवहार तथा नीतिना विषयो उपर रमुजी पत्रो (Letters) प्रख्यात अंग्रेजी लेखक पडिस-ननी पद्धतिथी लखाया छे खुद सरकारी गेझेटे तेने माटे उत्तम मत आप्यो छे ०-४-०

(३) दितंशिक्षाः—सर्वे धमना प्रगधा मः हिन धम सने स्पन्हारना सक्छो दाध तेर्मा स्मायों के गायक्षवाकी कळकर्या स्नाताप मंज्ञर करवाथी बीजी माबृत्ति छपाय छ (पहेंकी साम्रश्चिमी ५००० प्रती एक ज मा मर्मा अपा गह इती) किसत ०-४-०, परी पकाराधे १ प्रवनो द १॥ (४) बार मत - मत पटसे हो ! जत थादरपानी शी जदर छे! यत केम आद रवाँ वित केम नीमाववाँ तना कुंबामी साथे सवासा पृथ्यं सुदर पुश्तक किमा ०-२ व पराकाराचे १० मतमा ४ (). (1) मात'स्मरण - सवारमां चाट करवा मार्ट (मकामर स्तोधना ५ साक अणुपर्वी साधवंबणा,पारमायमा उपवेदा विगरे सहित। ० ०-६, परोपकाराधे १०० प्रतमा च २॥ (६) निरावळीका सब सार ० ६ ० (७) अंतगहबद्धांग सत्रसार. ० २-० (८) सदुपर्शमाळा — (भाषृति यीश्री)

सस्य शियळ करकसर सरसग धर्मपरीमां

ष अने सस्ती प्रत विमत मात्र ०-२-० (१०) 'सम्यक्तव'अथवा'धर्मनो दरवाजो' ०-६-० सामटी १० प्रतना रु २॥ 🎟 आमांनां पहेलां नव पुस्तको गु-जरातीमां छे, पण कोइ गृहस्थ सामटी स-ख्यावंध प्रतोनो ओर्डर आपशे तो शास्त्रीमां छापी आपाशु कोइ पुस्तक उधार मोकलता नथी, 0॥ आनानी टीकीट वाड्या सिवाय फोड पण वायतनो जवाय नहि मले पत्तो - मेनेजर, "जैनहितेच्छु"-अमदावाद. ⁷.* आवक रागचंदजी कृत १८५७० चरसनं जैन पचांग किमत रु १); उपरांत 'जैन सझायमाळा', 'जैनतत्वशोधक

^{लइ} जवानुभा**धु आदि १२** नीतिना विषयो उपर १२ रसीली वार्ताओं छे कुटुव वच्चे वाचवा लायक आवु पुस्तक वीजु भाग्ये ज मळशे ०८-० सर्व लोकाने घणु पसंद पडयु छे ^(९) "श्रावकनी आस्रोग्णा "—घर्णाज शु-

व्रथ' विगेरे पुस्तको अमारी पासेथी मळ्छो --

लपाय छ (१) "सम्यक्त्य सूर्योदय (हिंदी भी पत्मां -पंजाबसाक्षां विद्या मार्थाजा ई पार्वतीजी सतीकीए हमयों मर्च रचेलु पुस्त इ मारी मारफत छपायछ तेमा जगतना कर इंध्यर के ए मने बीजा केरलाक मतन कर अक्षो रात स्थायपूर्वक कर्य छे किमत क १-० (२) "धमेतत्व संब्रह" (दिवी सापासां) विद्याविकासी मुनीवर भीममासका ऋविज कृत सा पुस्तकर्मा १० विधि धर्म एपर स पाधी वियेचन कर्य है. इतिह्यदमननी चारी तमां अच्छी बतायी छ किमत च १). (६) "जमयिजय चरित्र" (शास्त्री कीरि मो) — विद्यान पूरुप भी मसस्ववद्रजी कृत में रास धजो ज रसीक छ किमत -४० (3) श्लेन क्रोप" -- आज सूची क्रोहप नी बनायेको बचा कर्छा — क्रेन दिवंदए प्रक मासकः किमत च री गीचेना शिरनामें असर नाम नीपाया -

क्षेत्र हित्रवृष्ट् श्रीफिल-मार्देशपुर-श्रमदाया

